सारिका
जनवरी १९८० अंक:२
चेखव
विशेषांक

हैं कुछ खराबियां मेरी तामीर में जरूर, सौ मर्तबा बिगाड़कर बनाया गया हूं मैं!

यानी हर चुनाव इस आधार पर ही क्यों लड़ा जाता है कि.....प्रजातंत्र खतरे में है?

इस बार पढ़िए

उन छोटी-छोटी पारिवारिक-सामाजिक उलझनों का ब्यौरा देने वाली कहानियां, जिनसे भरसक जूझते हुए हम प्रजातंत्र की संचालक राजनीति में खराबियां महसूस करते हैं!...इनके कहानीकार हैं: **कमला दत्त, रमेशचंद्र शाह, भीमसेन त्यागी, नसीम अहमद खरल (पाकिस्तान), होमी जे. होरमसजी (अंग्रेजी), रामकृष्ण, प्रेमसिंह नेगी, चंद्रकांता, कुलवंतसिंह कोछड़, आएशा सिद्दीकी और वेदिका वेद.**

साक्षात्कार

जाने-माने कहानीकार एवं उपन्यासकार **डा. शिवप्रसाद सिंह से डा. विश्वनाथ प्रसाद** की अंतरंग बातचीत

विशेष

परिवर्तनवादियों के बीच

सत्ता और शक्ति के बदलते-बदलते चीजें

अगला अंक

फरवरी–१९८० : अंक : एक

और उनके अर्थ कितनी जल्दी बदल जाते हैं! ताजा मुखौटाबदल राजनीतिक संदर्भों में **अवधनारायण मुद्गल** का रिपोर्ताज

चेखव के प्रेम प्रसंग (दूसरी किस्त) —**से. रा. यात्री**

अथातो सेक्स जिज्ञासा

हलचल की हलचल: **मृदुला गर्ग** के उपन्यास **चित्तकोबरा** के कुछ विवादास्पद अंश और **सूर्यबाला** की हलचलात्मक टिप्पणी.

प्रेम की घटना और घटना का प्रेम

तुम्हारे नाम (कामतानाथ) और **महाभोज** (मन्नू भंडारी) के उपन्यासों पर **श्रीलाल शुक्ल** का आलेख

▣ **चित्रा मुद्गल, सुरेश उनियाल राजन पाराशर, उपेंद्र प्रसाद राय, सुखबीर, राकेश आनंद** की लघुकथाएं

▣ **शिवप्रसाद बागड़ी, अशोक नारायण 'शरर', अजीज बदर मीरनपुरी, हनुमंत नायडू** की गजलें

▣ **पाब्लो नेरूदा के हास्य प्रसंग**

▣ पहली बगावत: **अमृता प्रीतम** का रोमांचक आत्मकथ्य

दिसंबर 79 अंक: दो से प्रारंभ नया स्तंभ

सरे राह चलते-चलते

गरीबी का नशा

चुनाव-परिणामों से पहले—बनने वाली सरकार की संभावनाओं पर एक मिनी बस के यात्रियों की गुफ्तगू—**रमेश बत्तरा**

तथा अन्य सभी स्थायी स्तंभ

कहानियों और कथा-जगत की जीवंत पाक्षिकी

वर्ष : २०; अंक : २५४; १६ से ३१ जनवरी, १९८०

चेखव विशेषांक

आवरण : सारिका कला विभाग, बंबई

संपादक :
कन्हैयालाल नंदन

मुख्य उप-संपादक :
अवधनारायण मुद्गल

उप-संपादक :
रमेश बत्तरा, सुरेश उनियाल

सज्जा : **रवि शर्मा**

मील का पत्थर

चेखव की कहानियां

संस्मरण

बकलमखुद

अन्य आकर्षण

सामयिक संदर्भ

स्थायी स्तंभ

गजल की अंदाजेबयानी

'सारिका' के नवंबर अंक : 2 पर आपसे मुखातिब हूं. बात गजलों पर करूंगा. इन दिनों फैशन (नकल) व नवीनता की कतार में खड़े होने की अच्छी साजिश है. दुष्यंतकुमार ने एक मील का पत्थर खड़ा किया गजलों के रास्ते पर. हमारी पीढ़ी के नये लोग वहां तक हंड्रेड मीटर की दौड़ लगा रहे हैं. ताकि न मील का तो कम से कम फलांग का ही संकेतक बन जायें. ठीक ही है, लेकिन गजल की गजलियत बरकरार रखना इतना आसान नहीं, जितना हमारे हिंदी के गजलगो समझते हैं. मात्र तुकों से गजल नहीं बनती, उसके लिए शिल्प की जबरदस्त जरूरत है. उसकी जमीन, मिसरेबाजी, भाषा की मुहावरेबाजी कुल मिलाकर अंदाजेबयानी के लिए हिंदी भाषा कितनी उपयुक्त है, जहां स्वरों के ह्रस्व और दीर्घ करके पढ़ने और लिखने की आजादी नहीं. उर्दू की यह सुविधा हिंदी में कहां? खैर, बातें तो बहुत कुछ की जा सकती हैं, इस वक्त इतना ही.

प्रस्तुत अंक में अरविंद आंसू की गजल हिंदी की है कि उर्दू की (भाषा से उर्दू दिखती है) अपने काफिये में कहीं-कहीं तंग हो गयी है. शब्दों के वजन पर यदि सूझ-बूझ से काम न लिया जाय, तो गजल ठीक नहीं हो सकती. यह उसका एक सापेक्ष सिद्धांत होता है. वैसे राजेश रेड्डी और अशोक द्विवेदी ने गजलियत बनाये रखी है, अच्छी बन पड़ी हैं उनकी गजलें.

▣ **महेंद्र शंकर, सियावां, गाजीपुर**

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता

पागल की डायरी (नवंबर अंक : 1 के लिए रमणप्रकाश सिंह ने (दिसंबर-2) में जो भी लिखा है वह व्यंग्य है या शिकायत, साफ नहीं है. लेकिन यह सच है कि आदमी जब सच के नजदीक जाने लगता है, लोगों को पागल लगने लगता है. कहानी चीन से आयात की जाती है या यहीं से चुनी जाती है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता. हां! एक अच्छी कहानी चुनने के लिए सारिका को बधाई.

क्या आज भी सभी लोग अच्छे भले लोगों को आदमखोर नजर नहीं आते? फिर क्या वे सभी सच्चे लोग पागल नहीं हैं या पागल नहीं कहे जाते? लोगों के आदमखोर होने में शक करने की कोई गुंजाइश ही नहीं है.

कहानी अपने उद्देश्य में ठीक-ठीक पूरी उतरती है, साथ ही एप्रोच भी पूरी रखती है, संवेदनाओं को क्या गहरे तक नहीं झकझोरता कहानी का अंतिम वाक्य **"हो सके तो इन बच्चों को आदमखोर होने से बचाओ....!"** पागलखाने में मरीजों की संख्या की चिंता बेकार है. वह तो किसी न किसी रूप में बढ़ेगी ही.

▣ **अंबिकादत्त, कोटा (राज.)**

अतीत के संदर्भ में वर्तमान को चुनौती

'सारिका' (दिसंबर अंक :1) में रमानाथ अवस्थी का श्रद्धा-स्मरण **एक पुल और ढह गया** पाठकों के अंतःकरण को स्पर्श किये बिना नहीं रह सकता और एक बार पुनः हमारे सामने निराला, पंत व प्रसाद युग की स्मृति ताजा-तरीन हो जाती है. ऐसे साहित्यकार, जो पुरानी पीढ़ी के होते हुए भी नयी पीढ़ी के सुख-दुःख का खयाल पहले करें, निस्संदेह वाचस्पति पाठक को इस पंक्ति में खड़ा किया जाना एक कटु सत्य है. दूसरे शब्दों में हम यूं कह सकते हैं कि अतीत के संदर्भ में वर्तमान को एक बड़ी चुनौती है. हम पाठकजी के प्रति श्रद्धा के भाव प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं.

▣ **कमलेश कुमार, कलकत्ता**

'आलराउंडर' बनने की ओर

दिसंबर प्रथम 'सारिका' में हिंदी की नयी कविता के प्रतिष्ठित कवि श्री रघुवीर सहाय का लंबा साक्षात्कार पढ़ने को मिला. निश्चित रूप से रघुवीर सहाय के इंटरव्यू ने प्रभावित किया. रघुवीर सहाय के वक्तव्यों में एक तरह की सपाटबयानी और साफगोई है, जो कथ्य को साफ करती है. उनमें एक तरह की घरेलू आत्मीयता है, जो पाठकों की संवेदना को और समृद्ध करती है. "बच्चा गोद में लिए बस में चढ़ती स्त्री और मुझसे कुछ दूर घिसटता जाता हुआ." रघुवीर सहाय के साहित्य में खासतौर से कविता की रचना प्रक्रिया पाब्लो नेरूदा की तरह है, जो अपनी कविता को रेल के टिकटों, दीवालों, सिगरेट की डिब्बियों पर लिखकर अपने बिखरे अनुभव को सहेजता था. पर रघुवीर सहाय के इस वक्तव्य में विरोध भी प्रकट हुआ कि "कलाकार के लिए जरूरी है, कि हर विधा के साथ जूझे." मैं नहीं समझ पाता, रघुवीर सहाय यह वक्तव्य देकर क्या मंतव्य जाहिर करना चाहते हैं. यदि उनके कहने का मतलब किसी भी साहित्यकार के आलराउंडर बनने की ओर है तो निश्चित रूप से यह एक भयानक खबर की कविता की तरह व्यक्त होने वाला वक्तव्य है, जो लेखन में अराजकता को जन्म देता है. आज हिंदी में बहुत कम ऐसे साहित्यकार हैं, जो लेखन की हर विधा के साथ जूझ सकने का साहस रख सकते हों. प्रसाद, निराला, अज्ञेय जैसे कम रचनाधर्मी हैं, जो हर विधा के साथ जूझे और सभी विधाओं के साथ न्याय करके महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर सके. रघुवीर सहाय का यह कहना कि "मुझे गद्य लेखकों में महावीर प्रसाद द्विवेदी के गद्य ने प्रभावित किया है," कुछ रूढ़िवादी और परंपरा की दुहाई देने वाला है. महावीर प्रसाद द्विवेदी में गद्य की एक व्यवस्था तो है, पर वह आदर्श नहीं, जो किसी लेखक को प्रभावित कर सके. हां, प्रेमचंद के साथ यह बात काफी हद तक स्वीकार्य है.

▣ **अरविंदकुमार त्रिपाठी, गोरखपुर**

हटना प्रेत की हुकूमत का

जयपुर के हाकरों द्वारा 'टाइम्स ऑफ इंडिया' प्रकाशनों के वितरण का बहिष्कार

आज 24 दिसंबर याने 41 वें दिन भी जारी है. घर बैठे हमें 'सारिका' नहीं मिलती, तो भी हम खुद बाजार से खरीदकर लाते हैं, क्योंकि 'सारिका' कहानियों के मामलों में है ही बड़ी तसल्लीबख्श और बहुत सुकूनपरवर.

अशोक शुक्ल की **पांचवीं डिबिया** (दिसंबर : 1) पढ़ने में मजेदार लगी और हमारी मित्र मंडली बेसाख्ता वाह-वाह कह उठी. वाकई **पांचवीं डिबिया** का खुलना कोई रोक नहीं सकता और जब **पांचवीं डिबिया** खुल जायेगी, तब अपने आप सारी दुनिया से कलुआ प्रेत (शैतान के शागिर्द) की हुकूमत हट जायेगी. तब किसी तरह की हुकूमत रह नहीं जायेगी, रह जायेगी सिर्फ व्यवस्था.

उपरोक्त अंक में ही 'विश्व बाल वर्ष' के समापन पर दो लघुकथाएं **कामचोर** व **बाल वर्ष** असल में कहानियां नहीं हैं, बल्कि हमारे मुल्क के बेशुमार मासूम बच्चों की जिंदगियों के आईने हैं."

▣ **रहमान अली, जयपुर**

'जनम-मरन' का चक्कर

क्या इस प्रश्न पर लिखने का साहस करेंगे कि जब हमारे यहां लोकराज कायम है, सावधिक चुनाव भी होते हैं यानी जनता द्वारा ही शासक चुने जाते हैं, फिर ये खाल क्यों उतरती है, और हमें भेड़ें क्यों बनाते हैं? क्यों कंबल में मुंह छुपाकर बात करते हैं, वास्तविक स्थिति क्या है, क्यों नहीं बताते लोगों को? जब अपनी सरकारें हैं, अपने आदमी हैं, तो फिर दिन-पर-दिन ये महंगाई भत्तों के लिए गले क्यों फाड़ने पड़ते हैं, हड़तालें क्यों होती हैं, तालेबंदियां क्यों होती हैं? ये जाने पहचाने चेहरों वाले शासक अपने नहीं हैं, जिनके हैं, उनके लिए खूब जी लगाकर काम करते हैं. आज के शासकों को 'अपना' समझने का भ्रम कब टूटेगा? क्या तमाशा है—एक ओर खुद आग लगवा देते हैं, लोग चिल्लाते हैं तो खुद ही दमकल भिजवाकर बुझवा देते हैं और आग बुझ जाने के बाद जीप दौड़ाते घटना स्थल पर आकर खड़े हो जाते हैं, और इन पर नजर पड़ते ही कोई न कोई कह उठता है कि—ये तो इनकी ही कृपा है, नहीं तो सब राख हो जाता. महंगाई करवाते हैं, भत्ता देते जाते हैं और वाहवाही लूटते जाते हैं, और फिर करवा देते हैं—और ये जनम मरन का चक्कर चलता रहता है, और हम इन्हें अपना कहने का मोह नहीं छोड़ते.

▣ **एम. एस. सेठी, नयी दिल्ली**

किसी जमाने में. . .

चुनाव विशेषांक पढ़ा, डा. जोशी की लघुकथा पढ़कर लगा कि आखिर वे कहना क्या चाहते हैं. अशोक शुक्ल किसी जमाने में जरूर अच्छा लिखते होंगे, अब तो सिर्फ बेगार टालते हैं. **भानुमती** . . . में उन्होंने आम जीवन में नेताओं के प्रति प्रचलित किंवदंतियों को दोहराया है, जो सामयिक नहीं हैं. **चुनाव संग्राम** और कार्टूनों के लिए साधुवाद. के. पी. सक्सेना अच्छे लगे. रघुवीर सहाय की कहानी किसके लिए और क्यों लिखी गयी है? कुछ बता सकते हैं आप! आखिर ऐसी कहानी का उद्देश्य क्या है?

▣ **सुरेश गुप्ता 'सुरेश', भोपाल.**

सूखा विशेषांक

सारिका (दिसंबर : अंक-2) पर **चुनाव विशेषांक** का लेबल चिपकाकर आपने कौन-सा तीर मार लिया. क्या ही अच्छा होता, यदि आप **सूखा विशेषांक** निकालते, पर लगता है, हमारे प्रोग्रेसिव लेखकों, पत्रकारों या फिर उनके भाई-बंधुओं में से कोई सूखे का शिकार नहीं हुआ, वरना जो पत्रिका दिल्ली में आयी बाढ़ के वर्णन से लगभग आधी भरी हुई थी, आज सूखा के संदर्भ में मात्र मुगले आजम का डायलाग छापकर धन्य क्यों हो जाती?

▣ **एल. आर. मुर्मू, नयी दिल्ली**

श्रद्धा-नमन

अभी रात को सोने जाने से पहले कागज-पत्तर सम्हाल रहा था तो सहसा 12 नवंबर का टाइम्स आफ इंडिया का पेज 13 सामने आ गया. पहले कालम की अंतिम न्यूज पर नजर पड़ी—'नोटिड फिजिशियन डेड.' पढ़ने लगा तो अचानक याद आया कि मृतात्मा डा. धनीराम प्रेम वही हैं, जिन्होंने 1929–30 के आसपास 'चांद' में 'डोरा' और अनेक सुंदर, रोचक कहानियां लिखी थीं, जो उस समय बहुत ही पसंद की गयी थीं. पाठकों द्वारा भी और साहित्य मर्मज्ञों द्वारा भी. मैंने स्वयं 'डोरा' कहानी पांच-छः बार पढ़ी है. और शायद उसकी कटिंग भी मेरे पास देहरादून में पड़ी अपनी पुरानी फाइलों में जरूर होगी. उन दिनों दो कहानी लेखक 'चांद' में बहुत लिखते थे—डा. धनीराम प्रेम और चंडी प्रसाद 'हृदयेश'. लगभग हर तीसरे अंक में इनकी कहानियां छपती थीं. डा. प्रेम सीधी, सरल और प्रेमचंदियन शैली में लिखते थे, जब कि 'हृदयेशजी' संस्कृतनिष्ठ प्रसादियन शैली में अपने को व्यक्त करते थे. 'हृदयेशजी' की भाषा प्रिय तो लगती थी, मगर समझ में नहीं आती थी. डा. 'प्रेम' की कहानी भी समझ में आ जाती थी (घटना प्रधान होने के कारण) और भाषा भी. इन दोनों के बाद ही मुझे श्री विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' की 'चांद' में छपी कहानियों की स्मृति है. और उसके बाद उनके सीरियल 'दुबेजी की चिट्ठी' की.

हां, याद आ रहा है, चांद प्रेस (इलाहाबाद) ने डा. धनीराम प्रेम की कहानियों का एक संकलन भी छापा था. शायद 'वल्लरी' उसका नाम था (मैं नाम कोट करने में गलती भी कर सकता हूं) उसमें उनकी वह सर्वप्रिय कहानी 'डोरा' भी संकलित थी.

कहानी-पत्रिका 'सारिका' के माध्यम से मैं दिवंगत कहानी लेखक डा. धनीराम 'प्रेम' को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं. वह हिंदी कथा साहित्य के नींव के पत्थर थे और उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा. मैं एक बार फिर उनकी स्मृति में बहुत आदर के साथ अपना शीश नवाता हूं.

▣ **सत्येंद्र शरत, नयी दिल्ली**

यह अंक

"मेरे यहां कोई पीकदान नहीं है. मेरे मेहमान भी मेरी तरह कालीन पर थूकते हैं. रसोईघर काफी गंदा और भद्दा है, बिस्तर और अल्मारियों के खानों में मकड़ी के जाले हैं, धूल है. फुटपाथ पर पीले-भूरे रंग का फैला हुआ. . . गंदी सड़क के कोने पर लगा कूड़े का ढेर, बेकार की चीजों से ढके दरवाजे, गलत अक्षरों में लिखे हुए साइन बोर्ड या फिर फटे कपड़े पहने हुए भिखारी आदि से मेरी सौंदर्य-दृष्टि पर कोई फर्क नहीं पड़ता."

यह कथन चेखव का है, लेकिन यह सिर्फ तत्कालीन रूस के लिए ही लागू नहीं होता, आज समूचे एशिया और तीसरी दुनिया के सारे मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए लागू होता है. चेखव का 'आहत सोच' और मानवीय चिंता हमारी अपनी चेतना के प्रारूप लगते हैं. चेखव का सोच ही था, जिसने हमें विशेषांक की प्रेरणा दी. इस विशेषांक के माध्यम से हम 'उसी सोच' को अपने लाखों पाठकों तक पहुंचा रहे हैं.

▣

यह विशेषांक छपते-छपते हमारे देश में नयी सरकार बन चुकी है, स्थितियां तेजी से बदल रही हैं. हमें खुशी है कि नयी सरकार ने अपने पहले वक्तव्य में बहुसंख्य मध्यवर्ग, निम्न-मध्यवर्ग और निम्नवर्ग की समस्याओं को प्राथमिकता दी है.

चेखव की रचनाओं से अलग, 'जरिया-नजरिया' के इन पृष्ठों पर हम शरद जोशी की कहानी दे रहे हैं. इस कहानी को इसी अंक में प्रकाशित करने का लोभ हम संवरण नहीं कर पाये. इसका कारण यह नहीं कि हम चेखव के वक्त को अपने मौजूदा हालात से जोड़ना चाहते हैं, बल्कि सिर्फ इतना ही है कि परिवर्तन की प्रक्रिया से जुड़े सोच की एक झलक अपने पाठकों को दे दें.

— सं.

परिवर्तन

शरद जोशी

कोई सात आठ दिन हुए पड़ोस का लड़का मुझसे आकर पूछ रहा था, "अंकल, आप के पास डेमोक्रेसी पर कोई किताब होगी?"

तुम्हें डेमोक्रेसी की क्या जरूरत पड़ गयी बेटे!" मैंने चाचावाले अंदाज से कहा.

"जरा चाहिए." वह बोला.

"किसी जनता पार्टीवाले से पूछ ले, वह बता देगा. वे प्रजातंत्र की महत्ता अच्छी प्रतिपादित कर लेते हैं, मगर तुझे चाहिए किसलिए डेमोक्रेसी?"

"इंटरव्यू में बैठ रहा हूं, हो सकता है सवाल आ जाये. . .डेमोक्रेसी की परिभाषा क्या है?"

मुझे एक घिसीपिटी परिभाषा याद थी, सो मैंने उसे सुना दी. वह उसे भी याद थी. मैंने कहा, "हम साहित्यवाले हैं यार, और साहित्य में डेमोक्रेसी-वेमोक्रेसी नहीं चलती. लिख-लिखकर कितने ही पाठकों के वोट जुटा लो. . . क्या होता है? आलोचक मौलवी जो अंतिम फतवा आपके बारे में दे दे, सो सही. साहित्य तो मस्जिद है भैया, इधर खुमैनी और शाही इमाम का कहा चलता है."

वह मेरी बड़बड़ सुनने को राजी नहीं था. उसे डेमोक्रेसी चाहिए थी. वह एक राजनीति के प्राध्यापक के घर चला गया.

▣

यह हमारे पड़ोसी शर्माजी का पूरा परिवार बहुत होशियार-सी चीज है. वक्त को पहचानता है और कौन-सा बटन दाबने से क्या काम बनेगा, वह अच्छी तरह समझता है. आज चुनाव परिणाम निकलने शुरू हुए और मैंने देखा, शर्मा अहाते में गड्ढा खोदने लगा. मेहनत करना उसकी आदत नहीं थी, पर मैंने देखा, वह मेरा यार, पसीने में तर भिड़ा हुआ है!

"ये गड्ढा क्यों खोद रहे हो?"

"पेड़ लगाऊंगा." शर्मा बोला.

"मैं उनमें से दो उखाड़ दूंगा."

"क्यों?"

"तेरे पेड़ों की छाया हमारे अहाते में गिरेगी तो हमारे अहाते की धूप तो खत्म हो जायेगी फोकट में. फिर मेरी औरत अपने भीगे बाल और सालाना के पापड़ कहां सुखायेगी? मुझे लिखने-पढ़ने को भी थोड़ी धूप लगती है."

वह मेरे तर्कों से पराजित हुआ, पर मुझे समझाने लगा कि भविष्य का कुछ कह नहीं सकते, तुम भी एक पेड़ लगाओ.

"एक है तो?"

"एक और लगा लो." उसने आंख मारकर कहा.

"क्यों?"

"लगा लो."

"मगर क्यों?"

"मैं कह रहा हूं लगा लो. कल से नये कार्यकर्ता इस तरफ से गुजरेंगे तो अपने को बताने को होगा कि हमने पेड़ लगा लिया है. दफ्तर ठीक टाइम से जाते हैं और क्यू में खड़े रहते हैं. बात को समझो भैया, जमाना बदल रहा है."

"तुमने अपनी नसबंदी करवाई कि नहीं?" मैंने पूछा.

वह इधर-उधर झांकने लगा. दरअसल, वह यह देख रहा था कि पत्नी सुन तो नहीं रही हमारी बातें. इत्मीनान हो जाने पर बोला, "यार, मैं तो करवा रहा था. वाइफ कहने लगी. . .रहने दो, इतनी जल्दी मत करो."

"और जनता राज के ढाई साल में तुमने मौका देखकर एक बच्चा और पैदा कर लिया. शरम नहीं आती? अब बेटा, इंक्वारी होगी तो देना जवाब."

वह मुझे ताज्जुब में डरा-सा घूरने लगा. मैंने एक भौंह चढ़ा ली और काफी देर उसे वहीं स्थिर रख उसे देखता रहा.

"इंक्वायरी?"

"जी."

वह अपराधी-सा अपने खोदे गड्ढे की तरफ देखने लगा. ज्यादा बड़ा नहीं था, अन्यथा वह उसमें उतर जाता. मैंने उसकी कमजोरी का लाभ लेते हुए और डाट लगायी, "कांग्रेस बेचारी देश की जनसंख्या बढ़ने से रोकने के लिए कोशिशें करे और तुम ढाई साल गैरकांग्रेसी हुकूमत ला, मजे से बच्चे पैदा करो और सारे किये-कराये पर पानी फेर दो!"

"मगर हमारे तो तीन ही बच्चे हैं."

"अब ये सब सफाइयां उन्हें ही दीजिए जब पूछने आयें. मुझसे कहने से क्या होगा." मैंने कहा और उसके दिमाग के गड्ढे में शक का पेड़ बो कर रौब से अंदर चला आया.

समय चुनाव बुलेटिनों में से गुजर रहा था. धीरे-धीरे सूरज कांग्रेसी वोटों की तरह दो-तिहाई तक चढ़ने लगा. तेज हवा कुछ देर चली और वृक्ष पदासीन नेताओं के बंगले में खड़े प्रसन्न चमचों की तरह हिलने-झूमने लगे. अहाते में बिखरे सूखे पत्ते जमानतजब्त उम्मीदवारों की तरह पता नहीं कहां गुम हो गये. तीसरे प्रहर घर के अहाते में कुर्सियां डाल मैं और पत्नी बैठ गये. ट्रांजिस्टर अपना कर्तव्य निभा रहा था. मैं उस पर नजर रखते चाय पी रहा था. पत्नी प्याज काटती आंसू बहा रही थी.

"तुम रो क्यों रही हो?" मैंने पूछा. जवाब में वह मेरी ओर नाराजगी से देख फिर प्याज काटने लगी. चुनाव के परिणामों से सोने के भाव गिर गये थे. कितने ही गिरें, हम तो उसे खरीदने में असमर्थ थे. हां, प्याज के भाव गिरे तो पत्नी ने प्याज खरीद लिये. अपनी आदत के अनुसार अब वह उन्हें काटते हुए रो रही थी.

"अब तो यह रोज का रोना है." मैंने कहा.

"क्यों?"

"प्याज के भाव तो कम ही रहेंगे."

वह कुछ नहीं बोली. मैं चुपचाप चाय पीने लगा.

तभी पड़ोसी शर्मा की पत्नी अपने अहाते से हमारे अहाते में आ गयी. मेरी ओर नीम-रुआंसी शक्ल बना बोली, "भाई साहब, आपने क्या कह दिया उन्हें?"

"मैंने क्या कह दिया?"

"वे आज सारी दोपहर परेशान रहे. कहते रहे. . .जल्दी से जल्दी नसबंदी करवा लेनी होगी. अभी डाक्टर मिश्रा से सलाह करने गये हैं."

मेरी पत्नी ने अपनी सामान्य रणचंडी दृष्टि से मेरी ओर देखा. वह समझ गयी कि आज फिर मैंने गरीब शर्मा के साथ कोई शरारत की है.

"मैं तो साधारण राजनैतिक चर्चा कर रहा था." मैंने शर्मा की पत्नी के सामने सफाई देते हुए कहा.

"पता नहीं क्यों, सुबह से मूड गड़बड़ है उनका."

जब वह चली गयी तो पत्नी ने पूछा, "आज तुमने फिर कोई हरकत की शर्मा के साथ?"

"अच्छे पड़ोसी के नाते योग्य सलाह देना मेरा कर्त्तव्य है." मैंने कहा, "तुम जानती हो परिवार नियोजन की डाक्यूमेंटरी में अंततः इस संबंध में नेक सलाह पड़ोसी या मित्र ही देते हैं."

वह कुछ कहती और जवाब में मैं कुछ कहता, उसके पूर्व शर्मा का बड़ा लड़का आया और बोला, "अंकल, आपके पास बीस सूत्री कार्यक्रम की लिस्ट है, जो पहले निकली थी?"

"अब तुझे उसकी जरूरत क्या पड़ गयी बेटे, पहले तो तू डेमोक्रेसी पर किताब मांग रहा था?"

"मुझे लगता है अंकल, इंटरव्यू में वे लोग शायद अब डेमोक्रेसी के बारे में प्रश्न नहीं पूछेंगे. हां, बीस सूत्री कार्यक्रम पर पूछ सकते हैं. सोचा तैयार कर लूं."

मैं उसे देख रहा था. मुझे साफ लग रहा था कि स्थितियों में अंदर ही अंदर तेजी से परिवर्तन आ रहा है.

पत्नी अभी भी रो रही थी प्याज काटते हुए. ट्रांजिस्टर से विशेष चुनाव बुलेटिन की सूचना आ रही थी. □

● होटल मानसरोवर, टर्नर रोड,
बांद्रा (पश्चिम), बंबई–4000 50.

आत्मकथन

"क्या मैं लोगों को खुश करने के लिए लिखता हूं?"
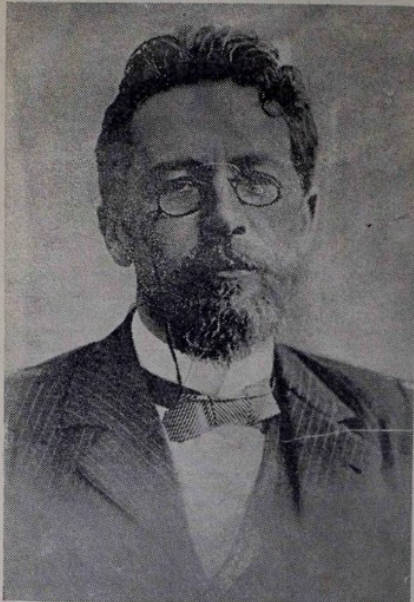
अंतोन पाव्लोविच चेखव

१७ जनवरी, १८६० — १५ जुलाई, १९०४

क्या मैं लोगों को खुश करने के लिए लिखता हूं? हरगिज नहीं. मुझे लोगों की खुशी या नाराजगी की जरा भी परवाह नहीं. मैं भूत के अस्तित्व पर विश्वास कर सकता हूं, लेकिन ऐसी बातों पर नहीं. तब क्या मैं पैसे के लिए लिखता हूं? नहीं. मुझे अपनी गरीबी मुबारक है. फिर क्या मैं प्रशंसा का भूखा हूं? लेकिन प्रशंसा मेरे मन में एक बेचैनी पैदा कर देती है. मैं अपने आपको व्यक्त करने के लिए लिखता हूं.

आज साहित्य या नाटक के क्षेत्र में जो अनुकरण हो रहा है, उसका मैं विरोधी हूं. वह मान्यताओं और दुराग्रहों का छकड़ा है. एक कलाकृति नये विचारों के वैभव से संपन्न होनी चाहिए. उसमें इतनी क्षमता होनी चाहिए कि वह सत्य को जानने की इच्छा पैदा करती रहे. आलोचक हमें यह सब नहीं सिखा सकते. उसका ध्यान आते ही मुझे हल जोतते हुए घोड़ों को परेशान करने वाली गंदी मक्खियों की याद आ जाती है. आखिर वे क्यों भिनभिनाती हैं? कई वर्षों से मैं अपनी कहानियों की आलोचनाएं ध्यान से पढ़ रहा हूं, लेकिन उनमें मुझे कोई नयी दृष्टि नहीं मिल सकी.

जब भी मैं घटनाओं के मर्म को नहीं समझ पाता, मेरे मन में अपने आप पर एक तरह की झुंझलाहट आती है. मैं विचित्र व्यक्तियों के बारे में लिखना चाहता हूं. मैं चाहता हूं कि शैतान और खूंखार व्यक्तियों, ज्वालामुखियों-सी विस्फोटक औरतों और चुड़ैलों के बारे में लिखूं.

इसलिए सन् 1890 में मैंने सखालिन जाने का निश्चय किया. कम से कम वहां जेल में सरकारी अपराधियों की दुर्दशा तो आंखों से देख सकूंगा. तब मेरे मित्रों ने मुझे उस द्वीप में जाने से रोकना चाहा. लेकिन इससे मेरे मन में अपराधियों को देखने की जिज्ञासा और अधिक बढ़ गयी. इन अभागों के मुकद्दमों के दौरान हमारे मन में थोड़ा कौतूहल रहता है और फिर उन्हें हम भूल जाते हैं. मैं सखालिन द्वीप गया और मेरा ख्याल है कि हर लेखक को ऐसी जगह की यात्राएं करनी चाहिए जैसे मुसलमान मक्का और मदीना की यात्राएं करते हैं.

फिर भी आत्मा की नश्वरता और अमरता की उलझन को मैं कभी सुलझा नहीं पाया. यह बात बार-बार मेरी कहानियों और नाटकों में उभरती रही है. मृत्यु का भय और सुंदरता का क्षणिक आभास मुझे सदा बेचैन किये रहा है. अपनी कहानी 'वार्ड नं. 6' में मैंने डाक्टर रागिन के आंतरिक अंतर्द्वंद्व में इसे व्यक्त करने की कोशिश की है. मानसिक रोगों का यह डाक्टर अपने पागलों के उपचार-केंद्र में अपने रोगियों के बीच भय, निराशा और एकाकीपन के तनाव से घबराकर मर जाता है. कुछ आलोचक कहते हैं कि डाक्टर रागिन पागल हो गया था. मुझे मालूम नहीं. वह पागल हो गया था या और कुछ, लेकिन वह भय और निराशा के तनावों से घबराकर मर गया, यह मैंने दिखाने की कोशिश की है. यह कहानी मैंने 1892 में लिखी थी, लेकिन इससे आठ वर्ष पूर्व इसी विषयवस्तु पर 'रेड-फ्लावर' और 'दि फिट' कहानियां लिख चुका था. लेकिन मनुष्य के उस मानसिक अंतर्द्वंद्व को, जब आदमी निराशा और एकाकीपन के तनाव से घबरा जाता है, मैं 'वार्ड नं. 6' में बहुत स्पष्टता से व्यक्त कर पाया हूं. इस कहानी में डाक्टर रागिन अपने रोगी इवान से अमरता और नश्वरता की बातें करता है, वह अमरता को 'एक मूर्खतापूर्ण झूठ' बताता है. मेरे लिए यह सब आज भी एक अबूझ पहेली है.

जीने के लिए कोई ध्येय चाहिए और किसी के पास कोई ध्येय न हो तो जीवन-भर-यात्रा ही उसका ध्येय हो सकता है. लेकिन मैं अपनी कभी पीछा न छोड़ने वाली बीमारी के कारण यात्रा को अपना ध्येय नहीं बना सका. मैं बहुत कम घूम पाया हूं. इस उद्देश्यहीन स्थिति को मैंने कई पात्रों की उलझी हुई परिस्थितियों द्वारा व्यक्त किया है. मेरे नाटक 'इवानोव' की कथा कुछ इसी प्रकार की है. वह अच्छे इरादों वाला पढ़ा-लिखा आदमी है. लेकिन उसकी स्त्री उसे कभी सहानुभूति से समझने की कोशिश नहीं करती. उसकी स्त्री उसकी सारी आकांक्षाओं पर पानी फेर देती है. उसके जीवन में शशा नामक एक युवती आती है, जो उसे प्यार और सहानुभूति दोनों देती है. वह बेचारी उसे अपने साथ अमेरिका भगा ले जाने की चेष्टा करती है. वह फिर सुख-दुख की मरीचिका में फंस जाता है, उचित-अनुचित की दुविधा में फंस जाता है. वह अपनी इस दुविधा और मरीचिका के आगे हार जाता है. कुढ़न, जलन और ईर्ष्या से ग्रस्त उसकी बीमार स्त्री और अधिक बीमार होकर मर जाती है. उसकी मौत के बाद उसकी आत्मा में एक पाप के भय का उदय होता है और इस पाप के भय का तार्किक अंत उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित करता है, क्योंकि अपनी दुविधा और मरीचिका में फंसा हुआ वह कोई ध्येय निश्चित नहीं कर पाता. 'इन द कोर्ट' भी मेरी ऐसी ही कहानी है. इस कहानी में अपराधी को पता नहीं है कि उसका कसूर क्या है. नियति की क्रूरता

चेखव की नाम पट्टिका : डॉक्टर ए. पी. चेखव

यह है कि उसका बेटा वह सिपाही है जिसे उसके अपराधी होने की शिनाख्त करनी है. और उसी वक्त वह उसे पहचानता है. फिर वही दुविधा, मानव-जीवन की यह दुखद दुविधा... जिसका अंत शायद है ही नहीं.

अपनी प्रारंभिक कहानियों में मुझे 'कोरस गर्ल' बहुत पसंद है. यह गरीब कोरस गर्ल (पाशा) की कहानी है, जो भय के दबाव में आकर अपने सारे गहने, जो उसकी एकमात्र संपत्ति हैं, अपने एक ग्राहक की पत्नी को दे देती है. उस ग्राहक की पत्नी के चले जाने के बाद वह रोती है, पछताती है और चीखती है. उसे अपने अपमान का दर्द महसूस होता है, वह अपमान की आग में जलती रहती है.

आलोचक इन कहानियों के पीछे के इस दर्द और यातना से पूर्ण क्रम को कभी नहीं समझ पायेंगे. मेरी कहानियों को स्पष्ट रूप से तीन हिस्सों में विभक्त किया जा सकता है—एक वे, जिन्हें मैंने भय और निर्दयता से आक्रांत अपने बचपन से प्रभावित होकर बच्चों के बारे में लिखा है. उनमें कई कहानियां बाल-मनोविज्ञान की महत्त्वपूर्ण और संवेदनामय उदाहरण हैं. दूसरी वे जो मैंने किसानों के बारे में लिखीं, जिनसे मैं अपने मेलीखोवो के निवासकाल में मिलता रहता था. तीसरी वे, जो बौद्धिक और पढ़े-लिखे लोगों की कहानियां हैं. इनमें से कई कहानियों में मेरे निजी अनुभव हैं. मेरी कहानियों में जीवन के दोनों अंग हैं—हास्य और वेदना. लेकिन मेरा अनुभव है कि जीवन में दर्द और पीड़ा का अहसास ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है. इसीलिए वह हास्य महत्त्वपूर्ण नहीं होता जिसके पीछे गहन वेदना न हो. मनुष्य के वेदना और दर्द भरे जीवन में कलात्मक सत्य या लय के स्वर ढूंढ पाना एक मुश्किल काम है. कथाकार की खूबी यही है कि वह पृष्ठभूमि, अमूर्त और अस्पष्ट राग-विरागों में से, रूप, रंग, ताल और लय का वातावरण उपस्थित कर सके. सफलता तो तभी है जब यह चित्रण पढ़ने वालों के दिल को सहज ही छू जाये.

सिर्फ मरने के लिए जीने में कोई मजा नहीं

लेखन और देखन में चेखव

बताइये, आप किसी को आलतू-फालतू याद करते हैं? नहीं न? याद उन्हें किया जाता है जो प्रभावित करते रहे हों. स्मृतियों में प्रायः वे घटनाएं और चर्चाएं रहती हैं जो याद आने वाले के संसर्ग में रहते प्रकट हुईं. व्यवहार के स्तर पर. . . . चरित्र के तौर पर . . .! ये बातें प्रायः उदाहरण बन जाती हैं और हम जान पाते हैं कि फलां व्यक्ति प्रभावशाली अथवा महान क्यों और कैसे बना! चेखव के संदर्भ में भी हम आपको सुना रहे हैं, उनके जीवन की कुछ दास्तानें उनके निकटतम साथियों की जुबानी.

••

पहला संस्मरण जाने-माने लेखक मैक्सिम गोर्की का है, जो चेखव के समकालीन कथाकार ही नहीं, उनके कुछेक प्रगाढ़ मित्रों में से भी एक थे.

▣ मैक्सिम गोर्की

कुचक-कुवाय गांव में चेखव के पास थोड़ी-सी जमीन और एक सफेद दुमंजिला मकान था. एक बार उन्होंने मुझे अपने गांव बुलवाया. . .और मुझे अपनी इस बरायनाम 'जागीर' में सैर करवाते हुए वह बड़े उत्साह से अपने मन की बातें बताते रहे. . .

"अगर मेरे पास पैसा होता तो मैं यहां बीमार अध्यापकों के वास्ते एक सेनीटोरियम बनवाता. बहुत खुला-डुला, हवादार और रोशन. . .ऊंची-ऊंची छतें, बड़ी-बड़ी खिड़कियां. . . एक शानदार पुस्तकालय, मधुमक्खी-पालन-केंद्र, सब्जी के खेत, फलों का बगीचा और हर तरह के संगीतवाद्य होते इस सेनीटोरियम में. उसमें कृषि और नक्षत्र विज्ञान पर भी भाषण होते. . .समझे? भाई, अध्यापकों को बहुत-सी जानकारियां होनी चाहिये, बहुत-सी. . . .!" सहसा उन्होंने मौन साध लिया. फिर कुछ खांसकर, तिरछी निगाह से मुझे देखते हुए मुस्करा दिये. उनकी इस मुस्कान में बला का आकर्षण था, जिसे देखकर कोई भी उन्हें लगातार सुनते रहने को लालायित हो उठता.

मुझे यों असमंजस में पाकर वह फिर बोलने लगे, "मेरे सपनों का ब्यौरा सुनकर तुम ऊबने लगे हो शायद! मगर मुझे इन मसलों पर बात करना बहुत सुखद लगता है. काश! तुम महसूस कर पाते कि देहातों में योग्य, समझदार और समर्पित अध्यापकों की कितनी आवश्यकता है. अपने देश में अध्यापकों के वास्ते जल्द से जल्द हमें बेहतरीन हालात पैदा करने हैं. उनके अनुकूल एक वातावरण तैयार करना है. क्योंकि देहात के लोगों को अगर बहुमुखी शिक्षा न दी गयी तो देश उस इमारत की तरह ढह जायेगा, जिसकी नींव कच्ची ईंटों से रखी गयी हो. इसलिए बहुत जरूरी है कि अध्यापक को अभिनेता भी होना चाहिये, कलाकार भी, साहित्यिक भी. . .और उसे अपने काम से पागलों-सा प्यार होना चाहिये! . . . .किंतु यहां हालत यह है कि हमारे अध्यापक तो खोदाई मजदूरों जैसे. . .

चेखव : जब चौबीस साल के थे

पढ़े-लिखे अनपढ़ हैं. वे इतने बेमने होकर स्कूल जाने के लिए तैयार होते हैं मानो देश निकाला दिये जाने पर उन्हें घर छोड़ना पड़ रहा हो! इसके कई कारण हैं. . .हमारे अध्यापक भूख और बेहाली के शिकार हैं. उनके सिर पर नौकरी छूट जाने का खतरा हमेशा मंडराता रहता है. इन उलझनों में फंसे वे कभी कुछ नहीं सीख पाते. . .जबकि एक अध्यापक को तो गांव का श्रेष्ठ व्यक्ति होना चाहिये, जो किसानों के हर सवाल का जवाब दे सके. उसकी समझदारी की बिनाह पर सब उसकी इज्जत करें! और यहां हाल यह है कि हमारे देश में सभी अध्यापकों का अपमान करते हैं. गांव का पुलिसवाला, साहूकार, पंडित, मुखिया और स्कूल इंस्पेक्टर, जो शिक्षा को बेहतर बनाने की कोशिश करने के बजाय सिर्फ घिसे-पिटे नियम लागू करने में ही व्यस्त रहते हैं! . . . अध्यापक, जिन्हें जनता को शिक्षित करने का दायित्व सौंपा जाता है, उन्हें नाममात्र वेतन देना बेहूदगी है! . . .'सरकार-विरोधी' अपने-आप में एक ऐसा हौआ-सा लफ्ज हो गया, जिसका नाम ले-लेकर चालाक लोग मूर्खों को डराते-धमकाते रहते हैं. . .यह अत्यंत घृणास्पद है. . .एक बड़ा और बढ़िया काम करने वाले आदमी का मखौल उड़ाना है. . . .तुम्हें क्या बताऊं. .किसी अध्यापक से मिलता हूं तो उसका दब्बूपन और उसकी बेहाली देखकर सन्नाया-सा रह जाता हूं. कभी-कभी तो लगता है जैसे हो न हो उसकी इस दयनीय हालत का जिम्मेवार खुद मैं हूं. . .सच, मैं ऐसा ही महसूस करता हूं!" एक क्षण के लिए रुककर उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और बोले, "कितना फूहड़ और गंदा है यह सब!" उनकी आंखों में वेदना झांकने लगी. कनपटियों पर झुर्रियों का मोहक-सा अंबार उभर आया और उनका व्यक्तित्व और भी गंभीर हो उठा. परंतु उन्होंने योंही दायें-बायें देखा और अपनी ही हंसी उड़ाने लगे, "देखा न तुमने, मैं तो तुम्हें किसी उदारपंथी

अखबार का संपादकीय ही सुना गया. अब आओ, इतने धैर्य से सुनते रहने के लिए तुम्हें चाय पिला दूं!"

वह प्रायः ऐसा ही करते थे. गंभीर, गहरी और पते की बातें करते-करते सहसा अपनी ही बातों की हंसी उड़ा देते. उनकी इस हंसी के पीछे, कुछ न हो पा रहा होने की तकलीफ साफ-साफ पहचानी जा सकती थी, वह तकलीफ जिसे शब्दों और सपनों की कीमत भलीभांति मालूम होती है.

कुत्तों से ईर्ष्या !

हम लोग घर की तरफ लौट रहे थे. गुनगुनी धूप वाला वह सुहावना दिन था. सूर्य की रंग बिखेरती चमकीली किरणों में कलोल करती लहरों की प्रतिध्वनियां संगीत-सा उत्पन्न कर रही थीं. घाटी में कहीं एक कुत्ता अपनी ही खुशी में मस्त कुकुआ रहा था. चेखव ने मेरा हाथ थाम लिया और खांसते हुए बोले, "बात बड़ी शर्म और अफसोस की है. मगर सच है कि बहुत से लोग कुत्तों से ईर्ष्या करते हैं. . . .!" फिर हंसते हुए बोले, "मैं जो कुछ कह रहा हूं, यह बूढ़ों की बातें हैं. . . .शायद मैं बूढ़ा होता जा रहा हूं!"

चेखव और गोर्की—
'सुनो, अध्यापकों को नाममात्र वेतन देना बेहूदगी है!'

अपनी रुचि की बात !

चेखव अत्यंत सरल हृदय थे और यही उनके व्यक्तित्व का सौंदर्य भी था. उन्हें वह सब कुछ प्यारा लगता था, जो सरल था, सच था, निष्कपट था. अपने मिलने-जुलने वालों को भी सरल बना लेने का उनका अपना ही अंदाज था.

एक बार तीन बहुत सजी-धजी औरतें उनसे मिलने आयीं, उनके रेशमी कपड़ों की सरसराहटें और इत्र की सुगंध कमरे में फैल गयी. वे चेखव के सामने बैठ भाव-भंगिमाएं बनाती, राजनीति में अपनी गहरी दिलचस्पी प्रदर्शित करती हुई पूछने लगीं—

"युद्ध का परिणाम क्या होगा?"

चेखव कुछ सोचते हुए गंभीरतापूर्वक मगर नम्रता से बोले, "युद्ध का अंत तो शांति में ही होगा."

"हां, यह तो ठीक है, लेकिन जीत किसकी होगी? यूनानी जीतेंगे या तुर्क?"

"जो ताकतवर होगा वही जीतेगा."

"आपको कौन ताकतवर लगता है?"

"जिसे भी बेहतर भोजन मिलता है और जो ज्यादा शिक्षित है?"

"वाह क्या बात बनायी है!" एक औरत खिल उठी, "वैसे आपको कौन ज्यादा पसंद है? यूनानी या तुर्क?"

चेखव ने उस औरत को एक नजर देखा और होंठों पर बड़े अपनेपन की मुस्कान बिखेरते हुए बोले, "मुझे तो फलों का मुरब्बा ज्यादा पसंद है! . . . आपको?"

"मुझे भी. . . मुझे भी पसंद है!"

"बहुत जायकेदार होता है मुरब्बा!" दूसरी औरत भी चहक उठी. और वे तीनों बहुत खुलकर मुरब्बों के बारे में बातें करने लगीं. अब तक वे मात्र दिखावे के लिए अपना-अपना ज्ञान बघार रही थीं. उन्हें यूनानियों और तुर्कों के विषय में बातचीत करनी पड़ रही थी, जिनके बारे में उन्होंने कभी सोच-विचार भी नहीं किया था. वे खुश थीं कि अब उन्हें बेवजह दिमाग पर जोर नहीं डालना पड़ेगा. शायद इसीलिए जाते समय तीनों औरतों ने चेखव से वादा किया कि वे उनके लिए ढेर सारा मुरब्बा भेजेंगी.

वे चली गयीं तो मैंने कहा, "खूब मजेदार बातचीत हुई!"

चेखव धीमे से हंस दिये, "हर आदमी को अपनी ही रुचि की बात करनी चाहिए!"

अपराध, सजा और ग्रामोफोन

एक दूसरे मौके पर उनके पास एक युवा वकील आया. वह उनके सामने खड़ा होकर अपने घुंघराले बालों को पीछे झटकता हुआ बड़े आत्मविश्वास से कहने लगा, "आपकी कहानी 'अपराधी' ने मेरे सामने बड़ी पेचीदी समस्या खड़ी कर दी है. अगर मैं यह मान लूं कि इस कहानी के पात्र 'डेनिस' में अपराध भावना

मौजूद है तो मैं आंख मूंदकर उसे जल भिजवा दूं, क्योंकि इसी में समाज का हित है. मगर वह निरा जंगली है. उसे अपराध की कोई जानकारी ही नहीं, इसलिए मुझे उस पर तरस भी आता है. परंतु अगर मैं यह समझ लेता हूं कि डेनिस ये बुरे काम अपनी मूर्खता के कारण करता है तो समाज को कैसे आश्वस्त किया जा सकता है कि जो हुआ सो हुआ, अब डेनिस पटरियों के काबले नहीं निकालेगा और रेलगाड़ियां नहीं उलटायेगा? यह मेरी परेशानी है और अब आप ही बताइए, क्या किया जाये?"

चेखव बोले, "मैं जज होता तो डेनिस को बरी कर देता."

"कैसे? किस आधार पर?"

"मैं उसे कहता . . .दोस्त, तुम अभी तक पेशेवर अपराधी नहीं बन पाये. जाओ भागो और जाकर कुछ सीखो!"

वकील हंसा, मगर फिर गंभीर हो उठा, "नहीं चेखव साहब, इस समस्या का समाधान हर सूरत समाज के हित में होना है, उस समाज के हित में जिसके जीवन की रक्षा का भार मेरे कंधों पर है. ठीक है कि डेनिस जंगली है. . .पर वह अपराधी तो है . . . और यह सच भी है."

"आप ग्रामोफोन सुनना पसंद करते हैं?" सहसा चेखव ने बात बदल दी.

"जी हां, बहुत! बड़ी सुंदर खोज है यह ग्रामोफोन !"

"मगर मैं उसकी भांय-भांय सहन नहीं कर पाता."

"क्यों?"

"अरे, जब सुनो तब गाना. . . गाना. . . गाना! कोई रस नहीं होता उसमें! उसके स्वर भी खोखले और बेदम होते हैं! . . . खैर, क्या आपको फोटोग्राफी का भी शौक है?"

वकील दरअसल फोटोग्राफी का ही शौकीन था. वह धाराप्रवाह-सा इसके बारे में बातें करने लगा. अब उसे उस सुंदर खोज—ग्रामोफोन में कोई रुचि नहीं थी. चेखव की नजर ने इसे पहले ही ताड़ लिया था. उसका वकालतनामा कहीं दूर जा बैठा और उसकी वरदी के नीचे से एक जीवंत और दिलचस्प इंसान झांकने लगा जो जिंदगी की मुश्किलों के प्रति उतना ही अनाड़ी था जितना कि पहली बार शिकार करने को निकला कोई पिल्ला!

वकील साहब को दरवाजे तक छोड़ आने के बाद चेखव बुदबुदाते हुए बोले, "हुं-ह! इन जैसे ये छोकरे न्यायाधीश बनकर इंसानों के भाग्य का फैसला करते हैं!" . . .और तनिक खामोश रहकर कहा, "मुद्दई हमेशा मछली ही के शिकार में मजा लेते हैं!"

उन्हें मत पढ़ो !

फूहड़ता का भंडाफोड़ करने में वह सिद्धहस्त थे. यह एक ऐसी कला है जिस पर केवल वही अधिकार पा सकता है जो सामाजिक जीवन के प्रति अपना दायित्व महसूस करता हो. . . एक ऐसा दायित्व जो इंसान में सादगी, सौंदर्य और सामंजस्य देखने की भावना से भरपूर हो. वह फूहड़पन के कट्टर आलोचक थे.

किसी ने उनसे शिकायत की, "फलां पत्रिका के गंभीर हिस्से कठिन और उबाऊ होते हैं !"

"उन्हें बिल्कुल मत पढ़ो!" चेखव ने बड़े विश्वास से राय दी, "यह सहकारी रचनाएं होती हैं. . .ऐसा साहित्य जिसे करिसनोव, चरनोव और बेलोव यानी लाल, काला और सफेद लिखते हैं. एक लेख लिखता है, दूसरा आलोचना करता है और तीसरा दोनों की मूर्खताओं का सामंजस्य बैठाता रहता है. यह तो 'डमी' साथ लेकर ताश खेलने जैसा काम है. अफसोस है कि ये लोग अपने-आप तक से कभी नहीं पूछते कि आखिर पाठक को इन सबकी क्या जरूरत है!"

अफसर बनें या बुद्धिमान ?

लगातार अस्वस्थ रहने के कारण कभी-कभी वह आत्मकेंद्रित भी हो जाते थे. उन दिनों वह बाहर के लोगों को मिलना कतई पसंद नहीं करते थे. ऐसे में उनके साथ रहना अपने-आप में दुविधाजनक हो जाता था.

उन दिनों उन्हें सूखी खांसी थी. सोफे पर लेटे-लेटे थर्मामीटर से खेलते-खेलते बोले, "सिर्फ मरने के लिए जीने में कोई मजा नहीं. . . मगर यह मालूम होते हुए भी कि हम वक्त से पहले मर जायेंगे, बराबर जीते रहना कोरी मूर्खता है !"

एक दूसरे अवसर पर वह खिड़की में से समुद्र को निहारते हुए सहसा धीरे-धीरे बोले, "हमें अच्छी फसल, सुखद मौसम और असीम प्रेम की मृगतृष्णा में धनवान हो जाने या पुलिस अफसर बन जाने की झूठी आशा में जीने की आदत हो गयी है. मगर मैंने आज तक किसी को अधिक बुद्धिमान बनने को उत्सुक नहीं पाया. हम अपने-आप में सोचते हैं. . . नये जार का राज पहले से बेहतर होगा और दो सदी बाद और भी अच्छा हो जायेगा! . . .मगर कोई यह कोशिश नहीं करता कि वे अच्छे दिन कल ही आ जायें. जबकि सारा जीवन दिन-प्रतिदिन जटिल होता जा रहा है. . . स्वेच्छा से चलता जा रहा है. . . लोग अधिक मूर्ख होते जा रहे हैं. . . जीवन से विमुख हो रहे. . .किसी धार्मिक जुलूस में लंगड़े-लूले भिखारियों की तरह!"

यकायक मिलती है खुशी !

उनकी आंखें बड़ी मनमोहक थीं, हंसते हुए उनमें नारी सुलभ सौंदर्य उजागर हो उठता था. उनकी खामोश-सी हंसी में गजब का खिचाव था. सदा यही लगता था मानो सचमुच अपनी हंसी का आनंद हासिल कर रहे हैं. कहा जा सकता हो तो मैं भी यही कहूंगा कि इतनी पाक हंसी वाले किसी दूसरे आदमी से मैं कभी नहीं मिला.

उन जैसे इंसान को याद करना हमेशा सुखद होता है. यह खुशियों के यकायक आ जाने जैसा होता है, जो जीवन में उत्साह भरकर उसे फिर से गहरे और साफ अर्थ प्रदान करता है.

इंसान विश्व का केंद्र बिंदु है!

और तुम पूछते हो उनकी बुराइयां...? उनकी कमजोरियां ?

हम सब लोग अपने संगी इंसानों के प्यार के भूखे हैं. . . और जब भूख लगी हो तो कच्ची रोटी भी स्वादिष्ट लगती है ! □

प्रस्तुति : रमेश बत्तरा

लेखन और देखन में चेखव : दो

स्तानिस्लाव्स्की

चेखव के नाटकों की खास बात...

स्तानिस्लाव्स्की चेखव के नाटकों के निर्देशक, कलाकार और पाठक होने के अतिरिक्त उनके उठक-बैठक के भी साथी रहे. उन्हीं की यादों के जरिये प्रस्तुत है चेखव के नाटकों की कर्मशील संघर्ष यात्रा.

लेखकों के कोष के लिए कोर्श थियेटर (मास्को) में एक ललित कार्यक्रम चल रहा था. मैं बहुत खुश था क्योंकि पहली बार मैंने दर्शकों के सामने अभिनय किया था. प्रमादवश मैं अपना ओवरकोट कॉरीडोर में ही भूल आया था. मैं उसे तब पहनना चाहता था जबकि दर्शक तालियां बजा रहे हों. क्योंकि मुझे विश्वास था कि मैं दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दूंगा.

किंतु आशा के विपरीत हालात बिल्कुल उलटे निकले. शो के बाद मैं चुपके से खिसकने की ताक में था. ऐसी नाजुक घड़ी में चेखव से मेरी मुलाकात हुई. वे सीधे मेरे पास आये और बड़े दोस्ताना अंदाज में कहने लगे, "लोग कहते हैं कि तुमने मेरे नाटक 'द बीअर' में बड़ा शानदार अभिनय किया है. . . मेरी राय में. . . तुम्हें दुबारा खेलना चाहिए. मैं आऊंगा और देखूंगा . . . फिर रिव्यू लिखूंगा. . . ." फिर कुछ रुककर वे बोले, "और अपनी फीस भी लूंगा. . ." और फिर बोले, "'एक रूबल पच्चीस कोपेक."

मुझे बहुत बुरा लगा क्योंकि उन्होंने मेरे हिस्से के अभिनय की तारीफ तक नहीं की. किंतु बाद में मुझे इस बात का आशय समझ में आया. दरअसल चेखव मेरी असफलता के बाद मुझे अपने मजाक से राहत देना चाहते थे!

बच्चों का-सा उत्साह!

एक लोकप्रसिद्ध पत्रिका के संपादन का छोटा-सा कमरा. बहुत से लोग जिन्हें मैं नहीं जानता था. कमरे में सिगरेटों का धुआं भरा था.

एक बहुत ख्यातिप्राप्त नक्शानवीस, जो चेखव के मित्र भी थे, अपनी एक डिजाइन दिखा रहे थे जिसमें मास्को के लिए एक 'मनोरंजन सदन' का नक्शा दिया गया था. इसमें एक थियेटर बनता था, एक चायघर और एक आमोद भवन. एक पेशेवर रंगकर्मी की हैसियत से मैंने नक्शे पर कुछ आपत्तियां उठायीं. मेरी बात को, चेखव को छोड़कर लगभग सभी ने बड़े ध्यान से सुना. किंतु चेखव थे कि सारा वक्त मेरी बातों की ओर ध्यान दिये बिना कमरे में टहलते रहे और टोका-टाकी करते रहे. किंतु उस शाम वे बेहद खुश थे.

उस समय मैं इस पहेली को नहीं समझ पाया कि आखिर वे क्यों इतने खुश थे!

किंतु बाद में मैं इसका कारण समझ सका. दरअसल, वे मास्को में इस नये प्रयास के लिए उत्साहित थे और उन्हें इस बात की बेइंतिहा खुशी थी कि अब शहर के अशिक्षित लोगों के लिए भी एक प्रकाश की किरण उपलब्ध हो सकेगी. बाद में भी मैंने यह बात देखी. हरेक ऐसा कदम जो साधारणजनों की जीवनस्थिति को बेहतर बनाने के लिए उठाया जाता, वे हमेशा ऐसे ही उत्साहित और खुश नजर आते. ऐसे मौकों पर वे कहते, "यह तो बहुत शानदार कदम है!" और उनके चेहरे पर बच्चों का-सा उत्साह तैर जाता.

नाटक का मर्म

1897 में 'मास्को थियेटर' का जन्म हुआ. आर्थिक साधन जुटाने के लिए लोगों को शेयर दिये जा रहे थे किंतु लोग बड़ी मुश्किल से शेयर खरीदते थे. चेखव ने पहली अपील पर ही उत्तर दिया. उन्होंने हमारी मामूली-सी बातों में भी दिलचस्पी दिखाई. किंतु बीमारी उन्हें मास्को से दूर ही रखती थी.

तभी 'सीगल' को खेलने की योजना हमारे दिमाग में आयी. किंतु चेखव इस बात पर अडिग थे कि 'सीगल' नहीं खेला जायेगा. सेंट पीटर्सबर्ग की असफलता के बाद 'सीगल' नाटक उनका सबसे रुग्ण और प्यारे बच्चे की तरह हो गया था, जिसे वे अपने से जुदा नहीं करना चाहते थे.

फिर भी 1898 के अगस्त माह तक 'सीगल' हमारी रैपर्टरी का हिस्सा बन गया. मैं गुबेर्निया गया—दृश्यविधान तैयार करने के लिए. आश्चर्य की बात तो यह है कि मैं नाटक के मर्म को नहीं समझ पाया था. किंतु जैसे-जैसे मैंने आगे काम

चेखव—1898 : मास्को आर्ट थियेटर में अपना नाटक 'सीगल' कलाकारों को पढ़कर सुनाते हुए

बढ़ाया, वैसे-वैसे मैं नाटक की खूबियों को पहचानने लगा, और यह सब इतना चुपके से हुआ कि मैं खुद आश्चर्यचकित था कि वह कौन-सा जादू है जिसने मुझे इस कदर बांध लिया है. चेखव के नाटकों की यह एक खास बात है एक बार उनके सौंदर्य में डूबने के बाद आप उनकी सुगंधि में खो जाना चाहेंगे.

आंसू भरी खुशी!

थियेटर का भाग्य अच्छा न था. सिवाय 'फ्योदोर इवानोविच' (नाटक) के और कोई भी नाटक ठीक से पब्लिक को नहीं खींच पा रहा था. हमारी समूची उम्मीदें हाफ्टमान के 'हानेल्स' (नाटक) पर टिकी हुई थीं, किंतु उसे भी मास्को नगर परिषद ने अश्लील समझकर प्रतिबंधित कर दिया था. उधर 'सीगल' को हाथ में लेते वक्त हमें मालूम था कि इस नाटक पर मुनाफे की उम्मीद नहीं लगायी जा सकती. फिर भी इसे करना था. सभी जानते थे कि थियेटर का भविष्य इसके प्रदर्शन की सफलता पर निर्भर था, जबकि पिछले ही वर्ष पीटर्सबर्ग में यह बुरी तरह से फ्लाप गया था. हम इतने परेशान थे कि एक बार तो हमने शो को रद्द करने तक की बात सोच ली. आखिरी ड्रेस-रिहर्सल के दिन चेखव की बहन मारिया थियेटर में आयीं. 'सीगल' को हम खेलने जा रहे हैं—इस बात से वे बुरी तरह घबरायी हुई थीं. हम ऐसा दुस्साहस करें, वे कतई नहीं चाहती थीं. वजह साफ थी. पहली असफलता के बाद दूसरी असफलता का समाचार चेखव के स्वास्थ्य को और खराब कर सकता था.

किंतु हम भी अधर में थे. आखिरी दौर में, नाटक को रद्द करने का अर्थ था थियेटर को ताला डाल देना. जो अपनी मौत के वारंट पर हस्ताक्षर करने के समान था.

नतीजतन 17 दिसंबर, 1898 को 'सीगल' का पहला शो हुआ. दर्शक बहुत कम संख्या में थे. हम लोगों की मानसिक स्थिति ऐसी थी कि प्रथम अंक कैसे खेला गया, हमें इसका एहसास तक नहीं था. मुझे याद है जरेच्नाया के मोनोलॉग के दौरान मैं दर्शकों की ओर पीठ किये बैठा रहा और इस दौरान मैं इस कदर भयभीत

चेखव : जब अट्ठाइस साल के थे

रहा कि मैंने अपनी टांगों को कांपने से रोकने के लिए हाथों से जकड़ लिया.

यह भयानक असफलता की तरह प्रतीत होता था. नाटक के खत्म होने पर परदों के गिरने के बाद तक हॉल में मौत जैसा सन्नाटा था. हम लोग परदे के पीछे घबराये हुए, दर्शकों की तालियों के लिए मुंतजिर थे. किंतु नहीं, वहां सन्नाटे के सिवा कुछ नहीं था. हममें से किसी की चीख निकल गयी. कुछ लोग रोने लगे. फिर हम कतार बनाकर पीछे उतर गये.

ठीक इसी क्षण दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूंज उठा. हमने परदा उठा दिया. हमारे चेहरों पर जर्दी पुती थी. हम दर्शकों की ओर देखने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे. हम इतने घबराये हुए थे कि हमने दर्शकों के समक्ष अभिवादन तक नहीं किया. हमें समझ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है? किंतु नाटक एक शानदार सफलता हासिल कर चुका था.

मेहमाननवाजी

मेहमानों को विदा कर पाना उनके बस की बात नहीं थी. यदि मेहमानों में कोई लेखक हुआ तो और भी मुश्किल. कोई आगंतुक बहुत ज्यादा समय लेता चला जाता तो भी चेखव उससे कुछ नहीं कह पाते. किंतु इस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए वे प्रायः यह रास्ता अपनाते—वे अपने अध्ययन कक्ष का दरवाजा खोलते और बाहर बैठे अपने किसी मित्र को चुपके-से बुलाते. वे चुपके-से कहते, "मेहरबानी करके उस सज्जन से कह दें कि मैं उसको जानता नहीं हूं और न मैं उसकी रचनाएं ठीक करने लायक हूं... मुझे मालूम है भला आदमी अपनी जेब में उपन्यास लेकर आया है. वह लंच तक टिकेगा और फिर उसे सुनायेगा!"....

जब कोई दरवाजे की घंटी बजाता तो वे तेजी से दीवान पर बैठ जाते और अपनी खांसी को दबाये रखते. दोस्त लोग भी खामोश हो जाते और बाहरवाला समझ जाता कि घर में कोई भी नहीं है. फिर कुछ-कुछ ऐसा दृश्य होता. मारिया दरवाजे तक जातीं और ये बातें सुनायी पड़तीं—

"क्या वे व्यस्त हैं?" आगंतुक पूछता.
...खामोशी रहती!

"आह!" आगंतुक के मुंह से निकलता.
...फिर खामोशी.

"मैं मास्को आया था... दर्शन करने की इच्छा थी." फिर वही आवाज.

"मैं इन्हें चेखव को दे दूंगी." मारिया काफी देर बाद कहतीं.

"एक छोटी-सी कहानी है और एक नाटक." अजनबी कहता.

"अच्छा...नमस्कार!" मारिया विदा करती.

"मेहरबानियां.... उन जैसे शख्स की राय चाहता हूं."

"मैं उन्हें दे दूंगी." मारिया फिर कहतीं.

"नये लेखकों की मदद करना... उन जैसे बुद्धिमान व्यक्ति का आशीर्वाद...!"

"चिंता न कीजिए... नमस्कार!" मारिया और भी मिठियाकर कहती.

....आखिर में मारिया लौटतीं और डेस्क पर आगंतुक के कागजों को रख देतीं.

पांडुलिपियों की ओर देखते हुए चेखव कहते, "उन्हें कह दो कि अब मैं लिखता नहीं हूं...लिखने का कोई मतलब भी तो नहीं."

फिर भी न केवल वे ऐसी पांडुलिपियों को पढ़ते थे, बल्कि भेजने वालों को जवाब भी लिखते थे. □

प्रस्तुति : सुधीश पचौरी

लेखन और देखन में चेखव : तीन

चेखव और ओल्गा : यानी पति-पत्नी

चेखव जीवन के नजदीक रहना चाहते थे !

▣ ओल्गा निप्पर

पति को पत्नी से बेहतर और कौन जान सकता है! प्रस्तुत हैं—चेखव की पत्नी ओल्गा की कलम से उनके विवाह के पहले से लेकर चेखव के निधन तक के कुछ यादगार प्रसंग, जो चेखव के जीवन को व्यावहारिक स्तर पर उद्घाटित करते हैं—

उन्हीं दिनों हमने मास्को में किसी नये किस्म के थियेटर के खुलने की उड़ती-उड़ती खबर सुनी. भूरे बालों और काली भवोंवाला एक रंगीन व्यक्ति स्तानीस्लावस्की यदा-कदा स्कूल में दिखाई देने लगा था. 'द मिस्ट्रेस ऑव द इन' की रिहर्सलें उन्होंने शुरू भी कर दी थीं. उन्हीं सर्दियों में मेरे गुरु नेमिरोविच-दाइशेंको ने मुझे और मेरे कुछ साथियों को बताया कि इस थियेटर के लिए जो नाटक हाथ में लिया गया, वह था चेखव का 'द सीगल'.

एक लेखक के रूप में चेखव को हम सभी पसंद करते थे. पर जब हमने 'द सीगल' को पढ़ा तो हम समझ ही न पाये कि इसे अभिनीत कैसे किया जाये. यह अन्य थियेटरों द्वारा प्रस्तुत नाटकों से कतई भिन्न था.

उस शाम को मैं कभी न भूल सकूंगी ...खास तौर से वे क्षण जब चेखव मेरे सामने खड़े थे...!

उनके व्यक्तित्व की विलक्षणता, उनकी सखता, उनकी नम्रता, इन सबसे हम लोग मंत्रमुग्ध हो गये थे. हम यही तय नहीं कर पा रहे थे कि क्या कहें... और वे हमारी तरफ देख रहे थे. कभी तो वे हमें मुस्कराते लग रहे थे और कभी गंभीर! वे अपनी दाढ़ी के बालों को नाखूनों से खुरच रहे थे.

जब उनसे कोई सवाल पूछा जाता तो वे उसका अप्रत्याशित-सा जवाब देते. एकबारगी तो कोई यह समझ ही न पाता कि वे यह बात गंभीरता से कह रहे हैं या मजाक कर रहे हैं. लेकिन अगले ही क्षण वह यूं ही कही गयी बात सामने वाले के दिमाग और दिल में उतर जाती और उनका यह सरल-सा संकेत उस चरित्र की पूरी विवेचना कर देता. उसी पहली भेंट ने मेरे मन में एक गांठ बांध दी थी.

न तू खुदा न मेरा इश्क फरिश्तों जैसा!

1899 के बसंत के वे सुनहले दिन और विशेष रूप से ईस्टर का वह पहला दिन, जब चर्च की घंटियां बसंती हवा को गुंजा रही थी, मैं कभी भुला नहीं सकूंगी. ईस्टर के उसी पहले दिन को चेखव मुझसे मिलने आये थे जबकि वे कभी कहीं नहीं जाते थे.

ऐसे ही एक सुनहरे दिन मैं उनके एक मित्र लेवितान की चित्र प्रदर्शनी देखने के लिए उनके साथ गयी थी. हमने देखा कि दर्शक उनके एक बहुत अच्छे चित्र 'चांदनी में सूखी घास का ढेर' का मजाक उड़ा रहे थे. इसे वे लोग समझ नहीं पाये थे क्योंकि जिस तरह के चित्रों को देखने की उनकी आदत थी यह उनसे भिन्न था.

चेखव, लेवितान और चेकोव्स्की ये तीन नाम हैं जिन्हें लोग एक साथ लेते थे. ये तीनों अपने देश के कवि सुलभ सौंदर्य का गुणगान करते थे और ये तीनों ही रूसी काल के इतिहास के एक-एक युग का प्रतिनिधित्व करते थे. उस दिन लेवितान काफी देर तक हमें अपने चित्र दिखाते रहे. उन्होंने बताया कि किस तरह छः साल तक मेहनत करने के बाद वह चांदनी रात को चित्रित कर पाये थे. उस चित्र की चुप्पी, पारमासिता, और दृश्य की असीमता अद्भुत थी.

एहतयात से फेंको संग बदगुमानी के... !

1899-1900 के मौसम में हमने अंकल वान्या का मंचन किया.

हमारी यह प्रस्तुति लगभग असफल रही. दोष हमारा ही था. चेखव के नाटक अभिनय की दृष्टि से बहुत कठिन होते हैं. किसी भूमिका को निभाने के लिए सिर्फ अच्छा अभिनेता होना ही काफी नहीं होता. उसके लिए चेखव से प्यार करना, उसे महसूस करना, उस काल के संपूर्ण वातावरण को पकड़ना भी जरूरी है. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह भूमिका आप चाहे कितनी बार निभा चुके हैं, हर बार उस पात्र में से कुछ अनछुयी गहराइयों पकड़ना होगा.

'अंकल वान्या' में अपनी भूमिकाओं पर महारत हासिल करने में हमें बहुत समय लगा और फिर तो 'अंकल वान्या कई साल तक हमारी रंगमंडली की एक लोकप्रिय प्रस्तुति बना रहा. असल में चेखव के नाटक शुरू में सफलता प्राप्त नहीं कर पाते. कलाकारों और दर्शकों पर उनका प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ता है और उनके दिलों पर छा जाता है.

मार्च के अंत में आर्ट थियेटर की हमारी मंडली 'द सीगल', 'अंकल वान्या', 'द ओनली वन्स', और 'हेड्डा गाब्लर' को लेकर क्रीमिया गयी.

दिल को कई कहानियां याद-सी आकर रह गयीं...

मई 1901 के मध्य में अंतोन पाव्लोविच मास्को आ गये थे. 25 मई को हम दोनों का विवाह हो गया. इसके बाद ही हम लोग वोल्गा की ओर निकल पड़े. वहां से आमा, वेलया होते हुए उफा गये. उफा से छः घंटे की रेलयात्रा के बाद अक्स्योनोवा स्टेशन के निकट आंद्रेवेच सेनेटोरियम गये, फिर रास्ते में हम निजनी, नोल्गोरोद में रुके और मैक्सिम गोर्की के घर गये जो उन दिनों अपने घर पर नजरबंद थे.

कई साल बाद जब हम अंतोन पाव्लोविच के पत्रों को प्रकाशन के लिए तैयार कर रहे थे तो ए. एस. सुवोरिन को 1895 में लिखे उनके पत्र से ये सभी स्मृतियां एक बार फिर लौट आयीं. उन्होंने लिखा था—"ठीक है, अगर तुम चाहते हो तो मैं शादी कर लेता हूं, लेकिन पहले मेरी हालत जान लो. जो जैसा है वैसा ही रहेगा, दूसरे शब्दों में, वह मास्को में ही रहेगी और मैं गांव में (उन दिनों वे मेलिखोवो में रहते थे) मैं ही उनके पास कभी-कभी जाया करूंगा. पारिवारिक सुख मुझे कभी नहीं मिल पायेगा. मैं एक अच्छा पति होने का वादा करता हूं. पर मेरे लिए एक ऐसी पत्नी की तलाश करो जो चांद की तरह कुछ ही रातों को मेरे जीवन के आकाश पर चमके."

तब इस पत्र के बारे में मुझे कुछ पता नहीं था. पर मुझे लगता था कि उन्हें मेरी उसी रूप में आवश्यकता थी जिस रूप में मैं थी.

इस याद से भी हमने बहुत काम लिया है...

इस तरह हम लोगों का जीवन चलता रहा. कभी-कभी मुलाकातें होती और बाकी समय पत्र-व्यवहार चलता.

इस दौरान अंतोन पाव्लोविच का जीवन मास्को और याल्ता के बीच बंट गया था, कुर्स्क रेलवे स्टेशन और सेवास्तोपोल स्टेशन हमारे मिलने और बिछुड़ने के स्थल बन गये. वे जीवन के नजदीक रहना चाहते थे, उसे देखना और महसूस करना चाहते थे और उसमें भागीदार बनना चाहते थे. वे लोगों से मिलना चाहते थे हालांकि कई बार वे उन्हें उबा देते थे, फिर भी वे उनके बिना रह नहीं सकते थे.

गोर्की का एक आलोचनात्मक पत्र चेखव के नाम

प्रिय चेखव! निजनी : 5 जनवरी, 1900

मैंने अभी ही तुम्हारी 'लेडी' (विद द डॉग) पढ़ी है. क्या तुम जानते हो कि तुम कर क्या रहे हो? तुम एकदम यथार्थवाद का कत्ल कर रहे हो. और तुम इसे बहुत जल्दी हमेशा के लिए खत्म कर दोगे. यह रूप-विधान पहले ही अपनी उम्र पूरी कर चुका है...

अपनी छोटी कहानियों के माध्यम से तुम बहुत महत्वपूर्ण काम कर रहे हो, जनता में नयी चेतना का आह्वान कर रहे हो, लेकिन तुमने जो किया है वह बेहद ऊब पैदा करने वाला छद्‌म है. वह एक फीकी, नीरस जिंदगी है जो लगभग मरी हुई है. इस सबको शैतान के हिस्से में ही जाने दो! तुम्हारी 'लेडी' ने मुझ पर कुछ इस तरह का तात्कालिक प्रभाव छोड़ा जैसे कि मैं अपनी पत्नी के प्रति अविश्वास स्वीकार करता जा रहा हूं. बहरहाल मैं अपनी पत्नी के प्रति वफादार इसलिए रह पाया हूं क्योंकि कोई भी उपयुक्त महिला मेरी दृष्टि में नहीं थी. लेकिन उसे तथा उसकी बहन के पति को लेकर, मैं अभी भी भयभीत हूं. मेरा ख्याल है कि तुमने अपनी कहानी के ऐसे परिणामों के बारे में यहां तक नहीं सोचा होगा.

तुम्हारी किसी विदेशी नाम वाली अभिनेत्री (ओल्गा निप्पर) के साथ शादी की बात भी सुनने में आयी थी. यदि औरत निर्जीव और उग्र न हो तो शादी करना अच्छी बात है. पत्र अवश्य लिखना.

तुम्हारा — ए. पेशकॉव (मैक्सिम गोर्की)

प्रस्तुति : राजकुमार गौतम

काश! यह भी लिखा होता...

जीवन के अंतिम दिनों में अंतोन पाव्लोविच एक और नाटक लिखना चाहते थे. उनके दिमाग में अभी इसकी कोई तस्वीर नहीं थी. उन्होंने मुझे बताया कि उसका नायक एक वैज्ञानिक होगा. वह एक औरत से प्यार करेगा जो या तो उसे प्यार नहीं करती होगी या उसके प्रति वफादार नहीं होगी. वैज्ञानिक सुदूर उत्तर में चला जायेगा. तीसरे अंक का खाका उन्होंने कुछ इस तरह बनाया था—एक बर्फ से घिरा जहाज. उत्तरी प्रकाश से चमकता आकाश. डेक पर एक अकेला वैज्ञानिक खड़ा है, निस्तब्धता और रात्रि की भव्यता, उत्तरी प्रकाश की पृष्ठभूमि में उसे एक स्त्री की छाया दिखाई देती है, यह वही स्त्री है जिसे वह प्यार करता है.

बेचैनियां समेटकर सारे जहां की...

अंतोन पाव्लोविच चुपचाप और आराम से इस दुनिया से कूच कर गये. रात के शुरू के प्रहर में ही वे जाग गये और जीवन में पहली बार डाक्टर को बुलाने के लिए कहा. डाक्टर ने आते ही मरीज के लिए शैंपेन लाने को कहा. वे बिस्तर पर उठकर बैठ गये, हाथ में शैंपेन का गिलास लेकर उन्होंने मेरी ओर मुड़कर मुस्कराते हुए कहा, "बहुत दिन बाद मैं शैंपेन पी रहा हूं." गिलास को खाली करके वे बायीं करवट लेट गये और हमेशा के लिए शांत हो गये. कमरे की शांति को एक भौंरे के पंखों की आवाज तोड़ रही थी जो कहीं से कमरे में घुस आया था और बिजली के बल्ब के चारों ओर चक्कर लगा रहा था.

चेखव के जीवन के अंतिम छः वर्षों में मैंने जिस चेखव को जाना, उसका स्वास्थ्य दिन-ब-दिन गिर रहा था मगर आत्मा शक्ति अर्जित कर रही थी. □

अंकल वान्या

'अंकल वान्या' चेखव के नाटकों में अपना अलग और महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है. जिंदा रहने की ललक आदमी को भीषण त्रासदियों से जूझने की ताकत देती है. यही जूझने की ताकत और जिजीविषा चेखव की सोच की मजबूत धुरी है. 'अंकल वान्या' को हिंदी के रंगमंच प्रेमियों ने बड़े उत्साह से प्रस्तुत किया और सराहा है. यहां इस नाटक का कथा-रूपांतर प्रस्तुत है.

प्रस्तुत चित्र नेशनल स्कूल आफ ड्रामा द्वारा दिल्ली में मंचित 'अंकल वान्या' के एक दृश्य में पंकज कपूर (वान्या) व सुरेखा सीकरी (येलिना)

★

डा. आस्त्रोव को लगता है जैसे उसके पांव में पहिए फिट हैं, जो उसे एक जगह बैठने नहीं देते. रात-दिन काम. अब आखिर इस सबसे उनके चेहरे पर बुढ़ापे के चिह्न न आते, कनपटियों के बाल सफेद न होते तो क्या होता. अब यहां प्रोफेसर सेरेब्रियोकोव ने बुलवा भेजा है कि उनकी टांगों में गठिया का दर्द है.

अजीब व्यक्तित्व है प्रोफेसर का भी. शहर में रहते थे. अब रिटायर्ड हो गये हैं और फैसला कर लिया है कि यहीं रहेंगे. जिस दिन से वे यहां आये हैं, सारा घर अस्त-व्यस्त हो गया है. प्रोफेसर की पहली पत्नी की मां मारीना अलग परेशान हैं, "क्या हो रहा है कुछ पता नहीं चलता. प्रोफेसर साहब उठेंगे बारह बजे! सुबह से समोवार खौल-खौल कर बावला हुआ जा रहा है और साहब बहादुर की राह देख रहा है. जब वह नहीं आये थे तो खाना-पीना दोपहर में ही निबट जाता था, जैसा सभी जगह होता है. पर अब तो दिन का खाना खाया जाता है यही कोई शाम के सात बजे. फिर प्रोफेसर साहब लिखते हैं, पढ़ते हैं और फिर आधी रात को जब चांद अपना रास्ता पूरा कर चुका होता है तो बजती है उनकी घंटी, पूछो क्या चाहिए, तो जवाब मिलता है, चाय! अब उठा लो घर को सिर पर, जगाओ सबको; खौलाओ समोवार. इसे कहते हैं इंतजाम. हूं!"

जमींदारी की सारी देखभाल का काम मारीना का बेटा यानी प्रोफेसर की पहली पत्नी का भाई ईवान पित्रोविच वाइनित्स्की और प्रोफेसर की पहली पत्नी की बेटी सोन्या के जिम्मे था. लेकिन जब से प्रोफेसर आये हैं वाइनित्स्की यानी वान्या के व्यवहार में अजीब चिड़चिड़ापन आ गया है. वह देर रात तक शराब पीता है और देर सुबह तक सोता रहता है. सारा काम अकेली बेचारी सोन्या के सिर पर ही पड़ गया है. प्रोफेसर के प्रति तो वान्या के मन में बहुत ही उपेक्षा भरी है. "प्रोफेसर, वही मुर्गे की एक टांग, सुबह से रात गये तक लिखता रहता है, वही कमरा, वही घिस-घिस, भवें जुड़ी हुई, त्योरियां चढ़ी हुई, विचारों का प्रवाह है कि उमड़ा चला जा रहा है, लिखे चले जा रहे हैं... पिछले पच्चीस वर्ष से लेक्चर दे रहा है, बता रहा है कि आर्ट क्या है. और क्या मजाल कि खुद आर्ट के बारे में जरा भी समझता हो. पूरे पच्चीस साल से यह आदमी दूसरों का थूका खयाल चबा रहा है—रियलिज्म क्या है? नैचुरलिज्म क्या है? वगैरह वगैरह. लेकिन औरतों के मामले में किस्मत का धनी है. इसकी पहली बीवी, मेरी बहन, कितना प्यार करती थी इसे. मेरी मां, इसकी सास आज तक इसे खुदा मानती है. इसकी दूसरी बीवी कितनी सुंदर है और कैसी तेज. सब कुछ निछावर कर दिया उसने इस पर. अपनी जवानी, खूबसूरती, आजादी, सब चमक—सब कुछ किस चीज के लिए?"

आस्त्रोव : वह प्रोफेसर की होकर रह गयी या...!

वान्या : हां! अफसोस तो इसी का है.

आस्त्रोव : अफसोस क्यों?

वान्या : क्योंकि यह वफादारी झूठी है शुरू से आखिर तक झूठी.

वान्या ने गलत नहीं कहा था. प्रोफेसर की दूसरी बीवी येलिना थी भी बला की सुंदर. और सौंदर्य प्रेमी डा. आस्त्रोव अगर उसके प्रति आकर्षण महसूस करने लगता है तो इसमें आश्चर्य भी क्या है. वह उसे अपनी जागीर में आने के लिए भी आमंत्रित करता है, "मेरी छोटी-सी जागीर है. बस, यही कोई नब्बे एकड़ जमीन. अगर आपको बागीचों का शौक हो तो आप उस जगह को वाकई पसंद करेंगी."

येलिना : हां, मैंने सुना है, आप जंगलों

के रसिया हैं. जाहिर है, आपकी देख-भाल से जंगलों का तो भला हो जायेगा मगर आपके असली काम पर उसका असर नहीं पड़ता क्या? आप ठहरे डाक्टर!

आस्त्रोव : भगवान ही जानता है कि हममें से हर एक का असली काम क्या है.

येलिना : दिलचस्प है यह काम?

आस्त्रोव : हां, काम तो दिलचस्प है.

सोन्या : मिखाईल आस्त्रोव हर साल नये दरख्त लगाते हैं. वह कहते हैं कि जंगल जमीन को सजाते हैं. दरख्त लोगों को खूबसूरती का एहसास दिलाते हैं, दिमाग में ऊंचे खयाल जगाते हैं. . .

वान्या : तालियां, तालियां! . . बातें सुनने में बड़ी अच्छी लगती हैं!

लेकिन डा. आस्त्रोव वान्या की बात का बुरा न मानते हुए जंगल के पेड़ों की खूबियां विस्तार के साथ बताने लगते हैं. वे जानते हैं कि इस प्रकार वे येलिना के मन में अपने लिए स्थान पैदा कर सकेंगे, लेकिन बजाय येलिना के सोन्या उनकी ओर आकर्षित होती जाती है.

आस्त्रोव के विपरीत वान्या अपने मन की हर बात मुखर होकर कहना पसंद करता है. येलिना के प्रति अपने आकर्षण को भी वह छिपाता नहीं, "अगर मैं तुमसे मोहब्बत करता हूं तो क्या किसी और नजर से देख सकता हूं तुम्हें? तुम मेरी खुशी हो, मेरी जिंदगी, मेरा सब कुछ. मैं जानता हूं, जो आग मेरे दिल में जल रही है उसकी गर्मी तुम तक पहुंचाना बहुत मुश्किल काम है, कोई उम्मीद नहीं, लेकिन मुझे कुछ नहीं चाहिए, बस, इतनी इजाजत चाहता हूं कि तुमको यूं ही देखता रहूं."

▣

अपने बुढ़ापे को लेकर सेरेब्रियाकोव के मन में एक प्रकार की कुंठा है. उसे हमेशा लगता है कि वह सबकी परेशानी का कारण बना हुआ है. साथ ही वह अपने बुढ़ापे को ग्लोरीफाई भी करना चाहता है.

सेरेब्रियाकोव : कहते हैं तुर्गनेव को गठिया से ही दिल की बीमारी हुई थी. डरता हूं, कहीं मुझे भी न हो जाये. इस बुढ़ापे ने तो मुझे अपने आप से बेजार कर दिया है. किसी को एक आंख नहीं भाता मेरा बूढ़ा वजूद.

येलिना : तुम अपने बुढ़ापे का जिक्र क्यों करते हो? क्या यह भी हमारा ही कसूर है.

सेरेब्रियाकोव : तुम जवान हो, खूबसूरत हो, दिल में जीने की उमंग है और मैं? . . . बूढ़ा, जिंदा लाश. तुम सोचती होगी, मैं यह सब नहीं समझता. बस कुछ दिन और फिर मैं तुम सब को आजाद कर दूंगा.

येलिना : मेरे कान पक गये हैं. भगवान के लिए चुप हो जाओ.

सेरेब्रियाकोव : लगता है, सब थक गये हैं. सब उकताये हुए हैं. किसी की जवानी का खून हो रहा है. किसी के वक्त का, एक मैं हूं, जिसकी प्यास बुझ चुकी है.

येलिना : बस, अब चुप हो जाओ.

प्रोफेसर को लगता है, जैसे सब उससे बेजार आ गये हैं, जैसे उसका बोलना किसी को पसंद ही नहीं है. लोग बोलेंगे तो कोई कुछ नहीं कहता. पूरा जीवन उसने बरबाद कर दिया ज्ञान प्राप्त करने में. और इस बुढ़ापे में वह सबके लिए एक बोझ बन गया है. डाक्टर आस्त्रोव उसे बिल्कुल पसंद नहीं है, क्योंकि उसकी नजर में वह कुछ नहीं जानता. इसीलिए उसे बुलवाने के बाद भी अपने पास तक नहीं फटकने देता.

वान्या से प्रोफेसर आतंकित हैं. वान्या जब सोन्या और येलिना से जाकर आराम करने के लिए कहता है तो प्रोफेसर घबरा उठता है. दरअसल स्थिति यह है कि दोनों ही एक दूसरे से नफरत करने लगे हैं. प्रोफेसर के मन में इस नफरत के साथ जहां खौफ जुड़ा है, वहां वान्या के मन में उपेक्षा. तो फिर इस आधी रात के वक्त प्रोफेसर वान्या के साथ अकेला रहने की हिम्मत भी कैसे करता. इसलिए वह खुद ही सोने के लिए चला जाता है. प्रोफेसर के जाने के बाद वान्या येलिना से अपने प्रेम को एक बार फिर प्रकट करता है, लेकिन येलिना उससे परेशान होकर वहां से चली जाती है. तभी वहां आस्त्रोव आ जाता है और दोनों बैठकर पीने लगते हैं. सोन्या को अपने मामू का शराब पीना बिल्कुल पसंद नहीं है. वान्या को शराब पिलाने के लिए वह डाक्टर को भी भला-बुरा कहती है, लेकिन उसके एकदम बाद ही वान्या के चले जाने पर डा. आस्त्रोव से परोक्ष रूप में प्रेम प्रकट करना भी नहीं भूलती और साथ ही उससे वादा करवाती है कि वह भी पीना छोड़ देगा.

जिस बात को सोन्या डाक्टर के सामने स्पष्ट रूप से बता नहीं पाती, उसे अपनी सौतेली मां येलिना से आखिर बता ही देती है और चाहती है कि वह उसकी ओर से डा. आस्त्रोव से बात कर ले.

▣

प्रोफेसर का हुक्म है कि घर के सब लोग दिन में एक बजे ड्राइंगरूम में इकट्ठे हो जायें.

मास्को आर्ट थियेटर द्वारा रूस में प्रस्तुत 'अंकल वान्या' का एक दृश्य

वे अपनी जायदाद का मामला तय कर लेना चाहते हैं. "बात यह है कि हम सब फानी हैं. मैं बूढ़ा और बीमार हूं. अब वक्त आ गया है कि मैं अपनी जायदाद का मामला तय कर दूं. यानी जहां तक मेरे खानदान का ताल्लुक है, मेरी अपनी जिंदगी खत्म हो चुकी है. मुझे अपनी फिक्र नहीं, लेकिन मेरी एक जवान बीवी है और एक कुंवारी बेटी. मेरे लिए देहात में बाकी जिंदगी भर रहना नामुकिन है. हम देहाती जिंदगी के लिए नहीं बने हैं, लेकिन इस जागीर से जो आमदनी होती है, उससे शहर में गुजारा नहीं हो सकता. मेरी राय यह है कि हम जागीर बेच दें. उससे जो पैसा आये, उस पैसे को पांच प्रतिशत के ब्याज पर चढ़ा दें. मेरा खयाल है कि हमारे पास उसके बाद जो कुछ रूबल बच जायेंगे उनसे हम फिनलैंड में एक बंगला खरीद लेंगे."

वान्या : जागीर बेच दें! अच्छा खयाल है, तो फिर यह भी बता दो, मैं कहां जाऊं. मेरी बूढ़ी मां और सोन्या कहां जायें?

सेरेब्रियाकोव : यह सब हम वक्त आने पर तय करेंगे. सब कुछ एक साथ ही तो तय नहीं हो सकता.

वान्या : लगता है, मैं अब तक बेवकूफी कर रहा था. मैं समझता था, यह जागीर सोन्या की है. मेरे स्वर्गीय पिताजी ने यह जायदाद मेरी बहन को दहेज में देने के लिए खरीदी थी. और फिर मैंने समझ लिया कि उसके बाद यह उसकी बेटी यानी सोन्या को मिलनी चाहिए.

सेरेब्रियाकोव : हां, जागीर सोन्या की ही है. सोन्या की मरजी के बिना मैं यह जागीर नहीं बेचूंगा. और मैं यह सोन्या के भले के लिए ही कर रहा हूं.

वान्या : यह तो सोचा भी नहीं गया था! नहीं, हरगिज नहीं. या तो मैं पागल हो गया हूं. . . या . . . या. . .

सेरेब्रियाकोव : तुम इतना गुस्सा क्यों हो रहे हो? यह तो मेरा प्रस्ताव है. अगर सबकी राय ऐसी नहीं है तो मैं जोर नहीं दूंगा.

वान्या : यह जमीन उस जमाने में 95 हजार में खरीदी गयी थी. पिताजी ने 70 हजार दिये थे और 25 हजार का कर्ज छोड़ गये थे. इस सारे कर्जे को निबटाने के लिए मैंने बैल की तरह मेहनत की. और आज जब यह जायदाद कर्ज से मुक्त हो चुकी है और इतनी अच्छी हालत में है, तब मुझे ठोकर मारकर निकाला जा रहा है!

बात बढ़ती चली जाती है. वान्या अपने आपको मानसिक रूप से इस बात के लिए तैयार भी नहीं कर पाता कि जायदाद बेची जाये, जबकि प्रोफेसर सेरेब्रियाकोव अपनी बात पर अड़ा हुआ है.

सेरेब्रियाकोव : (गुस्से में) तुम क्या चाहते हो मुझसे!

वान्या : तुम हमारे लिए आसमान से टपके हुए इंसान थे, बहुत ऊंचे. जो कुछ तुम लिखते थे, उसका एक-एक शब्द हमें याद रहता था, लेकिन अब मेरी आंखें खुल गयी हैं. तुम्हारा सारा काम कौड़ी का भी नहीं है. तुम हमारी आंखों में धूल झोंकते हो.

सेरेब्रियाकोव : इसकी जबान बंद कराओ, वरना मैं चला जाऊंगा.

वान्या : मैं चुप नहीं होऊंगा. (सेरेब्रियाकोव जाने लगता है तो उसका रास्ता रोकता है) ठहरो, मेरी बात अभी खत्म नहीं हुई है. तुमने मेरी जिंदगी में जहर घोल दिया है. तुम्हारी खातिर मैंने जिंदगी के बेहतरीन साल गंवा दिये. कत्ल कर दिया अपने आपको! तुम मेरे सबसे बड़े दुश्मन हो!

वहां उपस्थित सभी लोग येलिना, मारिया, सेरेब्रियाकोव और वान्या को मना लेते हैं कि आराम से बैठकर बात कर लें. वे दोनों अंदर चले जाते हैं. कुछ ही देर बाद गोली चलने की आवाज सुनाई देती है, जिससे येलिना चीख पड़ती है. तभी सेरेब्रियाकोव घबराकर भागता हुआ आता है.

सेरेब्रियाकोव : पकड़ो, उसे पकड़ो, वह पागल हो गया है.

येलिना : (वान्या से) यह पिस्तौल मुझे दे दो, मैं कहती हूं मुझे दे दो पिस्तौल.

वान्या : छोड़ो, छोड़ो मुझे. (इधर-उधर भागते हुए सेरेब्रियाकोव को ढूंढ़ता है) कहां है वह? अच्छा, वहां छुप रहे हो (गोली चलाता है) लो! खाली! फिर खाली! (पिस्तौल फर्श पर फेंक देता है और कुर्सी पर गिर पड़ता है. सेरेब्रियाकोव स्तंभित-सा खड़ा रह जाता है. येलिना दीवार का सहारा ले लेती है).

येलिना : मुझे यहां से ले चलो. मुझे मार डालो. मैं यहां नहीं रह सकती, नहीं रह सकती.

वान्या : ओह. मैंने यह क्या किया ! क्या किया मैंने!

▣

बाहरी तौर पर यह तूफान यहीं थम जाता है, लेकिन एक और तूफान, जो अभी वान्या के मन में घुमड़ रहा है. उसे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं है कि उसे अकेला छोड़ा ही नहीं जा रहा है. कोई न कोई उसके साथ लगा ही रहा है. क्या लोग समझते हैं कि वह पागल हो गया है? "कितनी अजीब बात है, मैंने किसी को कत्ल करने की कोशिश की, पर न हथकड़ी, न गिरफ्तारी, न मुकद्दमा, न कैद. इसका क्या मतलब? इसका मतलब यह कि लोग मुझे पागल समझते हैं. लेकिन क्या वे लोग पागल नहीं हैं, जो अपने बोदेपन, अपनी कूढ़मगजी, अपनी संगदिली को प्रोफेसरी के पर्दे में छुपाना चाहते हैं. वह औरतें पागल नहीं हैं, जो बूढ़े मर्दों से शादी करती हैं और फिर दिन दहाड़े उनको धोखा देती हैं."

इस आवेश की हालत में वान्या को कुछ भी भला बुरा नहीं सूझता. वह डाक्टर के बैग से मार्फिया की शीशी चुरा लेता है, लेकिन डाक्टर इस बात से अनभिज्ञ नहीं है. जब वान्या उससे उलझने लगता है तो वह सीधे-सीधे उससे अपनी शीशी वापस मांगता है.

आस्त्रोव : तुम मुझे बातों में बहलाने की कोशिश मत करो. चुपचाप मेरी चीज मुझे लौटा दो.

वान्या : मैंने नहीं ली है तुम्हारी कोई चीज.

आस्त्रोव : तुमने मेरे दवाओं के बैग में से मार्फिया की शीशी पार की है. देखो, अगर तुम समझते हो कि तुम्हें अपनी जिंदगी का खात्मा कर देना चाहिए तो जंगल में जाकर अपने को गोली मार लो, लेकिन मार्फिया वापस कर दो. वरना लोग कहेंगे कि मैंने ही तुम्हें मार्फिया की

शीशी दी होगी. क्यों फंसाते हो मुझे इस मुसीबत में?

तभी सोन्या आती है.

वान्या: छोड़ दो मुझे.

आस्त्रोव : (सोन्या से) सोफिया अलैक्सांद्रोवना! तुम्हारे मामू ने मेरे दवाओं के बैग से माफिया की शीशी उड़ा ली है और अब वापस नहीं कर रहे हैं. समझाइये इन्हें.

सोन्या : मामू वान्या, तुमने मार्फिया की शीशी ली है?

आस्त्रोव : हां, हां, ली है. यह बात मैं यकीन से कह सकता हूं.

सोन्या: वापस कर दो. क्यों डराते हो हमें. मैं भी तुमसे कम दुखी नहीं. पर देखो, मैं मरी तो नहीं जा रही हूं. मैं तो झेलूंगी. हंसकर झेलूं या रोकर. जब तक यह आग खुद नहीं बुझ जायेगी तब तक. मैं खुद नहीं बुझाऊंगी इसे. तुम भी सब कुछ झेल जाओ. कितने नेक और भले आदमी हो तुम. हम पर तरस खाओ और दवा की शीशी उन्हें लौटा दो. सब्र से काम लो, झेल जाओ सब कुछ.

वान्या : (मेज की दराज से दवा की शीशी निकालकर आस्त्रोव को दे देता है) लो. (सोन्या से) जितनी जल्दी हो सके, काम शुरू कर दो. कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा, वरना पहाड़ से दिन कैसे कटेंगे.

सोन्या : आओ मामू वान्या! चलो अब पापा और तुम्हारा मिलाप हो जाना चाहिए. यह जरूरी है.

और इस तरह वान्या जो कुछ हो रहा है, उसे ही नियति मानकर स्वीकार कर लेता है. धीरे-धीरे सभी लोग विदा लेते हैं. डा. आस्त्रोव, प्रोफेसर, सेरेब्रियाकोव और येलिना सभी.

घर में बच जाते हैं वही लोग सोन्या, मारीना और वान्या और उदासी के पहाड़ों के पीछे से उगता हुआ सोन्या की आशाओं का सूरज.

सोन्या : मामू वान्या! हम जियेंगे, जिंदगी के काले कोस, पहाड़ जैसे दिन, पहाड़ जैसी रातें, किस्मत जो भी इम्तहान लेगी, हम उसमें पूरे उतरेंगे. हम खून पसीना एक करेंगे, दूसरों के लिए, आज भी और कल भी, जब हम बूढ़े हो जायेंगे. जब हमारी घड़ी आ जायेगी तो हम चुपचाप मर जायेंगे—और जब हम कब्र में अकेले होंगे तो हम कहेंगे! "हमने दुख झेले, हम रोये, हमने जहर की कड़वाहट को शहद बना लिया. तब उसको, जो सब जानता है, हम पर तरस खायेगा, तब हम एक नयी जिंदगी की झलक देखेंगे—जगमगाती हुई जिंदगी, खूबसूरत और प्यार भरी जिंदगी. तब हम पलटकर इस दुखी जिंदगी को देखेंगे—हमारी आंखें हंसेंगी और दिल भर जायेगा—फिर जी हल्का हो जायेगा और हम चैन की सांस लेंगे—सुख की सांस लेंगे—मुझे यकीन है मामू वान्या—यह सच है. (वह घुटनों के बल बैठ जाती है और सिर उसके हाथों पर रख देती है—थकी हुई आवाज में) तब हम चैन से सांस लेंगे." □

प्रस्तुति : अवधनारायण मुद्गल

अंकल वान्या : एक प्रसंग

एक भावनात्मक अंदाज

● निल्स ऐके निल्सन

यह सही है कि चेखव के सरल शब्द इतने सरल नहीं हैं और न ही उन्हें यों ही रख लिया जाता है. वहां पर उनके प्रयोग के पीछे कोई प्रयोजन जरूर होता है. लेकिन मैं सोचता हूं कि साधारण से वाक्यों में छिपे हुए गुप्त अर्थ को पाने के लिए पाठक को बहुत गहराई में जाना पड़ता है. मैं नहीं कहता कि चेखव ने कूट अर्थों वाली पहेलियों से अपने नाटकों को भरने की कोशिश की है. उनकी साधारण-सी दिखने वाली उक्तियों के पीछे जो एक स्पष्ट कारण दिखता है, वह है लयात्मकता और स्वरों का आरोह-अवरोह, एक भावनात्मक अंदाज के साथ. यह निश्चित है कि इन उक्तियों से एक खास तरह का संयोजन बनता है और ये संयोजन हमेशा एक व्यापक अर्थ देते हैं.

'अंकल वान्या' के अंतिम अंक में आस्त्रोव दीवार पर टंगे हुए अफ्रीका के नक्शे के करीब जाकर बताता है कि इस समय अफ्रीका में कितनी भीषण गर्मी पड़ रही होगी, जिस पर वायनित्स्की का जवाब है, "हां, मैं भी ऐसा ही समझती हूं." अफ्रीका के बारे में यह उक्ति कुछ वैसी ही है, जिनके बारे में हम ऊपर बात कर चुके हैं. यहां पर यह बात आकस्मिक और अप्रत्याशित है और जो प्रसंग चल रहा है, उससे भी इसका कोई सीधा रिश्ता नहीं है. अन्य साधारण सी पंक्तियों की तरह इसमें भी छिपा हुआ अर्थ तलाशा गया है.

मास्को आर्ट थियेटर में अभिनेता स्तानिस्लाव्स्की ने इसके प्रथम प्रदर्शन में आस्त्रोव की भूमिका करते हुए अपनी आवाज में एक तरह की भावनात्मकता को भरकर शब्दों को एक अर्थ दिया. इस पर ओल्गा निप्पर ने कहा था, "इस एक वाक्यांश में उसने जीवन की कितनी सारी कटुताएं और अनुभव भर दिये हैं और किस साहस से वह इन शब्दों का उच्चारण करता है, कितना चुनौतीपूर्ण था यह.

ओल्गा निप्पर की इस टिप्पणी से यह तो समझ ही लिया जाना चाहिए कि इन शब्दों से आस्त्रोव ने रूसी जीवन के साथ एक तरह का कंट्रास्ट पैदा किया है. यहां सब कुछ उदासीन, उबाऊ और भावशून्य है, जबकि दूर के दूसरे देशों में गर्मी है, जो जलाती और थकाती है. □

प्रस्तुति : बलराम

परिचर्चा—

चांद नहीं, सिर्फ रोशनी दिखाना ही काफी है

चेखव की मौत एक पुरानी बात हो चुकी है. मगर आज भी धूप में नहायी ओसयुक्त सुबह या शोकमग्न चांदनी से उद्भाषित होती हुई पृथ्वी या किसी दरोगा, सिपाही, क्लर्क और अफसर जैसे समाज के चलते-फिरते मध्यमवर्गीय चरित्र सहसा चेखव की कहानियों की याद दिलाते हैं. हमारी सामाजिक व्यवस्था चेखव के समय की नहीं है, और उल्लेखनीय बात यह भी है कि इन कहानियों में न तो कोई चरम बिंदु है और न नाटकीय मोड़, फिर भी इन कहानियों की याद की वजह क्या हो सकती है! प्रस्तुत हैं हिंदी के कुछ प्रतिष्ठित और प्रबुद्ध कहानीकारों के विचार—

——चेखव : प्रबुद्ध भारतीय कथाकारों की नजर में——

मनुष्य की ज़िंदगी पर हमदर्द उदास सोच

▣ निर्मल वर्मा

यह कहना मुश्किल है कि चेखव ने देश-विदेश के कितने कथाकारों को उत्प्रेरित और प्रभावित किया, लेकिन यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि एक बार चेखव की कहानियां पढ़ लेने के बाद अन्य समस्त कहानीकारों की रचनाएं एक अजीब ढंग से अधूरी, असंतोषजनक या कुछ-कुछ बनावटी-सी जान पड़ने लगती हैं. जिस तरह अक्सर हम जेम्स ज्वाइस के बारे में कहते हैं कि उनके उपन्यास 'यूलिसिस' के बाद स्वयं उपन्यास विधा की पुरानी परंपरा समाप्त-सी हो गयी, उसी तरह मुझे लगता है कि चेखव की कहानियों के बाद स्वयं कहानी विधा अपने समस्त बाहरी उपकरणों को त्यागकर एक नये और अप्रत्याशित मोड़ पर आ खड़ी हुई है.

चेखव ने कहानियां ही लिखीं, कोई वृहत्-विराट उपन्यास नहीं, किंतु उनकी सब कहानियां मिलकर मनुष्य की पूरी जिंदगी पर एक 'उदास सोच' अभिव्यक्त करती हैं. मुझे चेखव के बारे में इस शब्द से बेहतर कोई दूसरा नहीं सूझता. एक हमदर्दी से भरा सोच. सोच का कोई बना-बनाया सूत्र नहीं होता, जिस तरह मनुष्य का अपनी आत्मा से वार्तालाप का कोई बना-बनाया ढांचा नहीं होता. इस सोच में दुख या निराशा अगर दिखाई देती है तो इसलिए कि मनुष्य चेखव की नजरों में एक अधूरा स्वप्न है. चेखव के हर पात्र—चाहे वे नाटकों में हों या कहानियों में, इन दो चीजों को बहुत सफाई से प्रकट करते हैं—समाज के भीतर पनपनेवाली उदासीनता और व्यक्ति की इस उदासीनता से छुटकारा पाने की छटपटाहट. चेखव ने कभी दोस्तोयेव्स्की या ताल्स्तोय की तरह मनुष्य की नियति या समाज के भविष्य पर कोई चितापूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत नहीं किया, लेकिन दूसरी तरफ उनकी हर कहानी में हमें बहुत ही धीमी और अफसोसभरी शिकायत-सी मिलती है—उस समाज और संस्कृति के लिए जो हर छोटे, साधारण मनुष्य को इतना अधूरा, बेबस और तृषित छोड़ जाती है. वह समाज पर टिप्पणी नहीं करते, लेकिन उनकी कहानियों में उन्नीसवीं शताब्दी के रूसी समाज में होने वाली हर मानवीय यंत्रणा की एक भयावह झलक मिल जाती है. मैं कभी-कभी सोचता हूं कि आज सोवियत संघ में जब लोग उनके नाटक देखते होंगे या कहानियां पढ़ते होंगे तो उन्हें बार-बार आत्मा की उस हूक, जीवन के अधूरेपन और समाज की क्रूरता जैसे विषय अत्यंत प्रासंगिक और जीवंत जान पड़ते होंगे. कितना बड़ा व्यंग्य है कि वह सोवियत समाज जो चेखव के नाटकों को इतने गर्व से प्रदर्शित करता है, अभी तक उस भविष्य को नहीं ला पाया है, जिसका स्वप्न 'तीन बहनें' नाटक में हर बहन देखती है. उनके लिए मास्को अब भी बहुत दूर है.

अवसाद और अन्य आवेग साथ-साथ

▣ गंगाप्रसाद विमल

मुझे याद आता है गोर्की का संस्मरण, जो उन्होंने चेखव की मृत्यु के बाद लिखा था—'मैं जब कभी झुकती हुई पतझड़ी शाम को देखता हूं, गांव के मकानों पर गिरती हुई धूप, घरों पर ठहरा हुआ विषण्ण-सा आकाश, तो सहसा मुझे चेखव की कहानियां याद आ जाती हैं.' चेखव एक अभूतपूर्व ढंग से प्रकृति के लैंडस्केप और मनुष्य की जिंदगी के बीच नाता देख पाते हैं. जब कभी मैं उनके गंवई गांव की मास्टरानी को याद करता हूं तो उसके साथ रेलवे लाइन, कीचड़भरा रास्ता, ठिठुरती हुई सर्दी सब याद आते हैं. एक बार उन्होंने गोर्की से कहा था—'चांदनी को दिखाने के लिए चांद को दिखाना जरूरी नहीं है. उस टूटी हुई बोतल को दिखाना काफी है जिस पर चांदनी गिर रही है. वह ऐसा भावनाओं के साथ भी करते हैं. मनुष्य के दुःख को शब्दों द्वारा उतना नहीं, जितना एक उखड़ी हुई हंसी या सहमी हुई खामोशी द्वारा व्यक्त किया जा सकता है. लेकिन चेखव की कहानियों में कोई भी संकेत, कोई भी उपमा अपने में अलग-थलग नहीं है, वह हमेशा एक विराट जिज्ञासा को, मोमबत्ती की लौ तले आलोकित करती है. और यह जिज्ञासा है—जिंदगी का क्या अर्थ है, मौत का क्या रहस्य है?

पता नहीं बचपन से लेकर आज तक कितनी बार चेखव की कहानियों को पढ़ते हुए मैं खुद अपने लेखन से कितना अतृप्त और असंतुष्ट हुआ हूं. जीवन में झूठ छोड़ने का उपदेश सब देते हैं, लेकिन लिखने में झूठ कैसे छोड़ा जाये, इसकी प्रेरणा केवल चेखव से मिल पाती है. □

चेखव की कथाओं को पढ़कर, एक लेखक की हैसियत से तो सिर्फ ईर्ष्या जागती है, किंतु एक पाठक के नाते कहना पड़ता है कि चेखव को पढ़ना अपने-आप में एक विलक्षण अनुभव है.

चेखव की रचनाओं में काल को संक्रमित कर जाने की अद्भुत क्षमता है. इसीलिए पिछली शताब्दी में लिखी उनकी कथाएं आज भी उतनी ही जीवंत, अर्थमय और ताजी हैं. कहना पड़ेगा कि अगली शताब्दियों के लिए भी वे इतनी ही ताजी रहेंगी... शायद इससे भी अधिक रहें.

चेखव केवल सर्वोत्तम कहानी लेखक ही नहीं, वे पहले दर्जे के नाटककार भी कहे जाते हैं. परंतु सबसे बड़ी चीज है कि वे लेखकों के लिए भी एक अतुलनीय आदर्श हैं.

चेखव, भारत क्या, दुनिया के किसी भी मुल्क के लिए एक सार्थक लेखक हैं. यह संयोग ही है कि आज जो भारत में सामाजिक यथार्थ की स्थितियां हैं, करीब-करीब वैसी ही परिस्थितियां जारशाही के सोवियत देश में थीं. 19वीं शताब्दी के आखिरी वर्षों में जिस प्रकार की छटपटाहट सोवियत रूस के नागरिकों में थी—वैसी ही छटपटाहट आज भारत में भी है. अतः भारत को सिर्फ गोर्की की ही जरूरत नहीं है, बल्कि पहले चेखव की जरूरत है, जो हमें हमारे 'अपनेपन' से, अपनी जरूरत से हमें परिचित करा सके.

चेखव ने हिंदी कथा लेखकों की शैली पर बहुत प्रभाव डाला है. स्वतंत्रता के बाद के लेखकों की भाषा पर काम करने वाले लोग जानते होंगे कि चेखव के भाषा विन्यास का उन लेखकों पर कितना प्रभाव है, जिन्होंने सोवियत साहित्य, विशेष रूप से चेखव को पढ़ा है. परंतु चेखव का मुख्य प्रभाव कथा में अवसाद और अन्य आवेगों का एक साथ उपस्थित होकर चलना है.

चेखव की कहानियां मुझे बहुत अच्छी लगी हैं. खासकर 'डार्लिंग' जैसी कहानियां कभी नहीं भूली जा सकतीं. पर चेखव की महत्वपूर्ण रचनाएं—'द डुएल' 'द कोरस गर्ल,' 'अंकल वान्या,' 'तीन बहनें' और 'द चेरी आर्चड' हैं, जो केवल किसी एक वजह से पसंद नहीं आतीं. बहुत-सी वजहें हैं. पर एक ही शब्द में कहना हो तो वे एक ऐसी विवेक दृष्टि के कारण पसंद आती हैं जो अन्यत्र दुर्लभ है.

चेखव की कहानियों में वर्णित दृश्यों के रंगों में जो खास किस्म की उदासीनता सालती है, ठीक वही उभरे पात्रों के चरित्र में भी है. उसमें एक त्रासद अनुभावना है जो स्वयं स्थितियों से उत्पन्न है. उनके पात्रों की त्रासद या कामद स्थितियां किताबी नहीं हैं—वह एक ऐसी स्वाभाविक, नैसर्गिक चीज हैं कि उसे किसी एकेडेमिक कोण से परखना अत्याचार होगा. 'चेखव' के यहां अवसाद है, परंतु वह एक प्रकार के आशावाद के निकट है, इसलिए चेखव की कथाएं पूर्णतः निराशावादी नहीं हैं. □

व्यक्तिगत जीवन के अंतर्विरोधों का खाका

▣ भीष्म साहनी

चेखव कहानी का एक नया रूप, नयी दृष्टि लेकर सामने आये थे. पहले की कहानियों को वे बोझिल समझते थे. चेखव के साथ कहानी में निश्चय ही एक तरह का पैनापन आया. उन्होंने ज्यादा चुभती हुई कहानियां लिखीं. जीवन के यथार्थ को तफसील के साथ आंकने के बजाय, किसी स्थिति विशेष में से निकलने वाले निष्कर्ष को उन्होंने बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया. कहानी का कलेवर छोटा हो गया, निष्कर्ष अपने-आप उभरकर सामने आ गया. चेखव की दृष्टि की मानवीयता, उनका व्यंग्य, उनके पात्रों के मूल गुण-दोष और जीवन की विसंगतियां, सभी एक साथ उस छोटे से कलेवर में निखरकर सामने आ गयीं.

हमारे लेखन को जो भी प्रभावित करे, वह हमारे लिये प्रासंगिक हो जाता है. जिस किसी से हम कुछ सीखते हैं, ग्रहण करते हैं, वह हमारे लिए प्रासंगिक होता है. दूसरे, जिस सामाजिक परिप्रेक्ष्य को उन्होंने आंका, वह बहुत कुछ हमारे विसंगतियों से भरे परिवेश से मिलता-जुलता था. ऐसी स्थितियां भी और ऐसे पात्र भी, अक्सर हमारे यहां मिल जाते हैं. 'डार्लिंग' की नायिका हो या 'दुःख' का गाड़ीवान या 'गिरगिट' का कॉन्स्टेबल, सभी हमारे यहां मिल जाते हैं. 'डार्लिंग' तो आसानी से किसी भारतीय स्त्री के बारे में लिखी जा सकती थी.

किसी लेखक के प्रभाव को आंकना बड़ा कठिन होता है. कौन कैसे जाने कि अमुक कहानी में यह असर चेखव का है. लेकिन उनकी व्यंग्यात्मक दृष्टि, कहानी के नाटकीय अंत, उनकी यह प्रवृत्ति कि कहानी में केवल वही बातें रखी जायें जो कि कहानी के लिये नितांत आवश्यक हों और वह सब कुछ निकाल दिया जाये जिसे हम हाशिया-आराई कहते हैं. इसने कहानी को निश्चय ही प्रभावित किया. पर सबसे अधिक चेखव की दृष्टि ने प्रभावित किया, जिसमें गहरी मानवीय सद्भावना भी थी और विसंगतियों के प्रति व्यंग्य भी था.

चेखव ने व्यक्तिगत जीवन के अंतर्विरोधों की ओर अधिक ध्यान दिया. कुछ कहानियां जैसे 'वार्ड नंबर 6' सामाजिक व्यवस्था पर तीखी टिप्पणी है. लेकिन मूलतः हम व्यक्तिगत चित्रण से ही सामाजिक स्थिति के प्रति उनकी दृष्टि को देखते हैं. इससे आगे वह नहीं गये. उन्होंने व्यवस्था को अपने दृष्टि क्षेत्र का केंद्र नहीं बनाया. शायद यही कारण है कि यातना सहने वाले, सामाजिक अन्तर्विरोधों के शिकार निरीह मानव के चित्रण की ओर उनका ध्यान अधिक गया है. इस तरह उनकी रचनाओं में निराशा की झलक मिलती है.

चेखव की अनेक रचनाएं अत्यंत मार्मिक और सुंदर हैं. कहानियों में 'डार्लिंग', 'ग्रास हॉपर', 'दुःख' आदि और उनके तीनों नाटक, 'अंकल वान्या' 'तीन बहनें' और 'चेरी की बगिया', विश्व साहित्य को उनकी देन हैं. □

मुक्ति का एहसास

▣ रमेश बक्षी

चेखव की कहानी की परिभाषा मुझे बहुत अच्छी लगी—'कहानी तो किसी अश्व की मृत्यु से लेकर किसी प्रेमिका के प्रथम प्रेम संबंध तक किसी भी विषय पर लिखी जा सकती है'. कहानी में आदि, मध्य और अंत कुछ भी नहीं होता. उन्होंने इतिवृत्तात्मकता को तोड़कर रख दिया. चेखव ने चरित्र उद्घाटन पर बल दिया. किसी भी चरित्र को नंगे रूप में दिखाने की क्षमता उनके पास है. वे चरित्र का चुनाव बड़ी गंभीरता से करते हैं. दूसरे, उन्होंने कथोपकथन पर जोर दिया—कानों से सुनकर अनुभव तक पहुंचने वाली बात उनके नाटकों की विशेषता है. उन्होंने अपने लेखन के लिए साधारण आदमी को चुना है जो अपने धर्म से जीता है. हेनरी और मॉम की तरह उनकी कहानियों में क्लाइमैक्स नहीं है. दरअसल जो व्यक्ति अपने वक्त के लिए ईमानदार है, वह हमेशा प्रासंगिक रहता है. उन्होंने कोई 'लाल सलाम' या 'रेड आर्मी' जैसी रचना नहीं लिखी.

उनकी निराशा एक बहुत ही साधारण आदमी की निराशा है, जो जिंदगी की निर्ममता को जीते हुए कभी-कभी अवमानना और घृणा से पैदा होती है. उनकी कहानियों को पढ़ते हुए लगता है कि जैसे कोई कैदी रिहा हो रहा है. उसे हथकड़ी से मुक्त किया जा रहा है—एक मुक्ति का एहसास. □

● प्रस्तुति : जितेंद्र सेठी

रूसी नाटकों का मसीहा

बीमारी और जिंदगी से अलगाव झेलते हुए चेखव ने अपना अंतिम नाटक 'द चेरी आर्चर्ड' लिखा. इस नाटक में उठायी गयी समस्या उनके दूसरे नाटकों से मिलती-जुलती है. लोफियोव की नजर में सारी रूसी बुराइयों का एक ही हल है—'खूब काम करो'. वह और आन्या चेरी का बगीचा कट जाने पर युवा पीढ़ी को जवाब देते हैं—'सारा रूस हमारा बगीचा है.' ये शब्द प्रतीक हैं. चेखव कहना यह चाहते हैं कि कुछ लोग सुंदरता को नष्ट कर रहे हैं. वे सब अंधे हैं. मानसिक और शारीरिक रूप से दृढ़ होने पर भी चेखव ने अपने पात्रों के सामाजिक अलगाव को दर्शकों के सामने रखा. यह एक बिल्कुल नयी खोज थी. चेखव के संवादों की भी खास बात यह थी कि वह थीम रखने के लिए संवादों का प्रयोग नहीं करते. पात्र चुप रहकर भी जीवन को प्रस्तुत करना जानते हैं.

'द चेरी आर्चर्ड' के बारे में चेखव और स्तानिस्लावस्की के विचार मिलते नहीं थे. तकनीकी लिहाज से अच्छे होने पर भी स्तानिस्लावस्की के पात्र बहुत ज्यादा रोते हैं. लेखक की दृष्टि से जहां पात्रों को हंसना चाहिए, वहां नाटक मंचित होते हुए वे उदास नजर आते हैं. चेखव ने इस नाटक को कॉमेडी कहा. स्तानिस्लावस्की का कहना था कि यह नाटक एक त्रासदी है, चाहे चौथे दृश्य में चेखव जीवन का कितना ही अच्छा हल क्यों न प्रस्तुत करें.

चेखव ने ओल्गा को पत्र लिखते हुए कहा, "इन निर्देशकों में से किसी ने भी मेरा नाटक ध्यान से नहीं पढ़ा है, क्षमा करना, लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मैं ठीक कह रहा हूं".

नाटकों की अजीबोगरीब घटनाओं और संवादों की पारंपरिक शैली को तोड़कर चेखव ने उसमें मनुष्य की रूटीनी जिंदगी और उसकी कल्पनाशीलता को प्राथमिकता दी. नाटक इस तरह एक नये मोड़ पर आ खड़ा हुआ. ऐसे में चेखव का नाट्य लेखन कहां तक प्रासंगिक है और नाट्य मंचन के संपूर्ण आयामों के लिए किस हद तक उपयोगी है, इस पर वीरेंद्र नारायण और मनोहर सिंह जैसे जाने-माने प्रतिष्ठित निर्देशकों के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं वीरेंद्र नारायण 'द चेरी आर्चर्ड' और मनोहर सिंह 'अंकल वान्या' का निर्देशन कर चुके हैं.

यथार्थवादी रंगमंच और चेखव के नाटक

▣ वीरेंद्र नारायण

चेखव के नाटक भारतीय समाज के लिए दो स्तरों पर अर्थपूर्ण हैं. चेखव ने जिस मध्यमवर्ग को चित्रित किया, वही आज के भारतीय समाज का प्रमुख अंग है. स्थानीय आवरण को अलग कर सकें तो चेखव के पात्रों के प्रतिरूप इस देश में अनेकानेक हैं.

मानवमन की गहराइयों को देखने का चेखव का तरीका कुछ इतना अनूठा और प्यारा है कि उसका आकर्षण देश-काल की सीमाओं का सहज अतिक्रमण कर जाता है. चेखव की यह विशेषता उसकी कहानियों की अपेक्षा उनके नाटकों में अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ती है.

त्रासदी और कामदी के बोध को चेखव ने नये आयाम दिये हैं. इब्सन तक नाटक के मुख्य पात्र या कथानक विशिष्ट हुआ करते थे. चेखव ने ही पहले-पहल साधारण लोगों के जीवन की घटनाओं को अपने नाटकों में चित्रित किया. इस चित्रण में चेखव ने कुछ अनूठे प्रयोग किये, जैसे लेखक ने किसी पात्र विशेष या विचार विशेष की वकालत नहीं की. एक ही पात्र को अथवा एक ही घटना को इस तरह रखा कि उसे कई कोणों से एक साथ देखा जा सके. इसके अलावा नाट्य प्रदर्शन की विधा में एक विशेषता पर उसने बल दिया.

● वीरेंद्र नारायण

उसके सभी नाटक यथार्थवादी रंगमंच के लिए लिखे गये. अभिनय के समय पात्रों से यह अपेक्षा थी कि दर्शकों की उपस्थिति पर वह बिल्कुल ध्यान न दें. लेकिन इसके साथ ही साथ चेखव ने पात्रों या घटनाओं को इस तरह प्रस्तुत किया कि नाटकों की सृजनात्मक प्रक्रिया दर्शकों के सक्रिय सहयोग के बिना पूरी नहीं हो सकती थी. मंच पर पात्र जीवन को जिस तरह जी रहा है, उससे त्रासदी या कामदी का एक बोध बनता था. लेकिन जब उसे देखकर दर्शक की प्रतिक्रिया सामने आती तो यह बोध बदल जाता था. 'चेरी आर्चर्ड' बिक गया. परिवार के लोगों की दो तरह की प्रतिक्रियाएं हैं. एक हिस्से को गहरा आघात पहुंचा, दूसरा सुनहरे भविष्य की कल्पना करता है. दर्शक किसी एक दृष्टिकोण पर जम जाये तो त्रासदी या कामदी का बोध परंपरागत होगा. लेकिन लेखक ऐसा नहीं होने देता. अंत में भी बूढ़े नौकर की मौत की घोषणा नहीं करता. □

सामाजिक क्रांति के बीज

▣ मनोहर सिंह

('अंकल वान्या' चेखव के पहले असफल नाटक 'जंगल का दानव' का पुनर्सृजन है. इसे नया रूप देने में चेखव ने पुराने चार मुख्य चरित्रों को पूरी तौर पर नाटक से हटा दिया. 'अंकल वान्या' का मंचन देखकर गोर्की ने चेखव को लिखा था—'इस नाटक ने मुझे किसी किसान औरत की तरह रुला दिया'.)

नाट्य लेखन और प्रस्तुतीकरण की

'अंकल वान्या' के एक दृश्य में मनोहर सिंह, सुरेखा सीकरी, अनिला सिंह

शैली में चेखव ने नये युग की शुरुआत की. उस समय अयथार्थ और भावुक किस्म के नाटक लिखे जा रहे थे. चेखव ने जिंदगी की सुंदरता और कल्पना को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाओं और स्थितियों में देखा. इस नयी चेतना ने नाट्य प्रस्तुतीकरण की दिशा को प्रभावित किया. अभिनय के साथ-साथ नाट्य मंचन के अन्य आयामों जैसे ध्वनि, मंच सज्जा, वेश-भूषा और श्रृंगार की शैली में भी वे एक नया परिवर्तन लाये थे.

चेखव की शैली की सुंदरता जिंदगी के बीतते हुए क्षणों को पकड़ने में दिखायी देती है. सूक्ष्म मन के अनुभव को लिये हुए ये चित्र मानवीय जीवन की लय को प्रकट करते हैं. नाटक में होने वाले आंतरिक परिवर्तन के बीच पात्रों की आंतरिक क्रियाएं छिपी हुई हैं. बड़ी चुप्पी के साथ एक साधारण संवाद में यह सब बातें मौजूद रहती हैं. शब्दों से ज्यादा महत्वपूर्ण यह संवाद मौसम के बारे में भी हो सकते हैं. ये आंतरिक विस्फोट कभी-कभी वास्तविक क्रियाओं में बदल जाते हैं, जैसे 'अंकल वान्या' के शूटिंग दृश्य में. लेकिन बहुत जल्दी ही वह फिर सामान्य जिंदगी की शांत लय पर आ जाते हैं. संवादों की रचना में चेखव की काव्यात्मक संवेदना साफ दिखायी देती है, जहां शब्द एक-दूसरे से अलग, अस्थिर चुप्पी के साथ बिखरे हुए हैं. पात्रों की सोच और स्थिति के आंतरिक नाटक को प्रकट करने की यह भी एक शैली है.

चेखव के नाटकों का मूल तंतु है—यथार्थ जीवन की छोटी-छोटी इकाइयों से पात्रों की क्रियाओं को जोड़कर देखना. इन सारी स्थितियों को गंभीरता से समझकर प्रस्तुत करना किसी भी निर्देशक के लिए एक चुनौती है. क्रियाओं को बड़ी धीमी लय में प्रस्तुत करना पड़ता है. अभिनेता को अभिनय करने की बजाय चरित्र को जीना पड़ता है. इन सब कारणों से मैं यह महसूस करता हूं कि चेखव के नाटक अंतरंग स्थानों पर किये जाने चाहिए—जहां दर्शक चेखव के नाटकों की बारीकियों को नजदीक से देख सकें. इसीलिए फिल्म का माध्यम चेखव की दृष्टि को सही तौर पर प्रकट करता है, क्योंकि कैमरा पात्रों की जटिल प्रतिक्रियाओं को पकड़ सकता है और जिससे परिवेश के एक-एक सूक्ष्म ब्यौरे को देखा जा सकता है.

व्यक्ति का समाज से संबंध और पाखंडी लोगों द्वारा उसका शोषण, चेखव के अधिकांश नाटकों में दिखाई देता है. सामान्य शोषित व्यक्ति द्वारा आगे आने वाली व्यवस्था के खिलाफ सामाजिक क्रांति के बीज यहां देखे जा सकते हैं. चेखव अपने विचारों को बड़े साधारण लहजे में रखते हैं. उदाहरण के लिए 'द चाक सर्कल' में ब्रेख्त जिस बात को बड़े उपदेशपूर्ण ढंग से कहता है, 'अंकल वान्या' में वही बात बड़े कौशल के साथ कही गयी है.
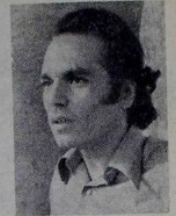
● मनोहर सिंह

सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि चेखव ने सामान्य आदमी के बारे में लिखा, ऐसा आदमी जो जीवन की निराशा को पार कर आशा की तरफ देखता है.

मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि चेखव एक निराशावादी लेखक हैं. यह एकतरफा दृष्टि है. चेखव ने जैसा जिंदगी को देखा वैसा चित्रित किया. रोजमर्रा की जिंदगी के संवादों में हर पात्र का हर्ष और उल्लास छिपा हुआ है. चेखव के पात्रों में साहस है, प्रेम है, जैसे 'अंकल वान्या' में सोनिया महसूस करती है. वह सब कुछ खो जाने पर भी अपनी आत्मा को स्वप्न की ऊंचाई तक ले जाती है. इसी तरह 'तीन बहनें' नाटक में पात्रों के जीवन में कई त्रासद घटनाएं घटती हैं, लेकिन जीवन चलता रहता है. वह हम जैसे किसी व्यक्ति की तरह बीतते हुए क्षणों को जीते हुए एक-एक ब्यौरे को मानसिक गुत्थियों के साथ शब्दों में पकड़ते हैं. उन्हें 'त्रासदी' या 'कामदी' के किसी ढर्रे पर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता. □

● प्रस्तुति : जितेंद्र सेठी

मील का पत्थर

150 खूबसूरत सितारों की दुनिया

प्रस्तुति ▣ दामोदर सदन

इस कहानी को मैं संसार की उन कहानियों में मानता हूं जिनमें कला की सारी विशेषताएं या ऊंचाइयां देखी जा सकती हैं. चेखव की यह कहानी मूलतः मानव स्वभाव की विशेषताओं और विलक्षणताओं को चित्रित करती है. इसमें दो प्रमुख पात्र हैं—डाक्टर किरीलोव और धनाढ्य अबोगिन. डाक्टर का इकलौता बेटा मर गया है और वह शोकसंतप्त है. इसी वक्त उससे मिलने अबोगिन आता है, जो उसे अपनी पत्नी के इलाज के लिए ले जाना चाहता है और डाक्टर बाहर जाने की हालत में नहीं है. इस समूचे द्वंद्व में डाक्टर को जिस भयानक परिस्थिति का गवाह बनना पड़ा या जिन स्थितियों से बावस्ता होना पड़ा, उससे उसमें भयानक जुगुप्सा जागी.

चेखव मानव नियति की करुणाजनक मनःस्थितियों का सफल चितेरा माना जाता है और इस कहानी में भी उसकी यह विशेषता आसानी से देखी जा सकती है. इसमें डाक्टर किरोलोव का अपना दुख है और अबोगिन का अपना दुख. लेकिन वे दोनों एक दूसरे के दुख में सहभागी होने के लिए प्रस्तुत नहीं हैं. इन दुखपूर्ण स्थितियों में मानव स्वभाव की बेरहम क्रूरता को इस महान कहानीकार ने बड़े सधे हुए ढंग से उजागर किया है. इस कहानी से हमें दुखी आदमी की कतिपय विशेषताओं का बोध होता है. दुखी आदमी संकीर्ण होता है और उसकी सहानुभूति दूसरों से नहीं होती. उसे अपने दुख के सामने दूसरों का दुख छोटा लगता है. यह कहानी इस प्रकार अप्रत्यक्ष तौर पर पाठकों के मन को संस्कारित करती है.

कहानी 1887 में लिखी गयी थी और आज करीब नब्बे वर्ष पुरानी हो गयी है, लेकिन मानव स्वभाव इस दरम्यान बिलकुल नहीं बदला. शाश्वत कृति की संभवतः यह भी एक कसौटी है कि वह काल निरपेक्ष होती है.

कल रूस में भले किसी नयी सभ्यता का उदय हो जाये, तब भी यह कहानी खूबसूरत सितारे की तरह रूस के साहित्याकाश पर जगमगाती रहेगी! □

सितंबर की एक अंधेरी रात, नौ बजे के थोड़ी देर बाद डाक्टर किरीलोव का इकलौता छः वर्षीय पुत्र आंद्रेई, डिप्थीरिया से मर गया. डाक्टर की पत्नी गहरे शोक व निराशा के पहले दौर में बच्चे के पलंग के पास घुटनों के बल बैठी ही थी कि दरवाजे की घंटी कर्कश स्वर में खनखना उठी.

डिप्थीरिया की छूत के कारण घर के नौकर सवेरे ही घर से बाहर भेज दिये गये थे. किरीलोव, जैसा था वैसे ही, सिर्फ कमीज पहने, वास्कट के बटन खोले, अपना गीला चेहरा और कारबोलिक के झुलसे हाथ पोंछे बिना, दरवाजा खोलने चल दिया. ड्योढ़ी में अंधेरा था और डाक्टर, आगंतुक का जो कुछ देख पाया, वह था—औसत कद, सफेद गुलूबंद, बड़ा और इतना पीला पड़ा हुआ चेहरा कि लगता था कमरे में उससे रोशनी आ गयी हो.

"क्या डाक्टर घर पर हैं?" आगंतुक ने जल्दी से पूछा.

"हां!" किरीलोव ने जवाब दिया, "आप क्या चाहते हैं?"

"ओह!" आपसे मिलकर खुशी हुई. उस व्यक्ति ने प्रसन्न होकर अंधेरे में डाक्टर का हाथ टटोलते हुए और उसे पाने पर अपने दोनों हाथों से जोर से दबाकर कहा, "बहुत-बहुत खुशी हुई. हम पहले मिल चुके हैं. मेरा नाम है अबोगिन... गर्मियों में ग्नुचेव परिवार में आपसे मिलने का सौभाग्य हुआ था. आपको घर पर पाकर मुझे खुशी हुई... ईश्वर के लिए कृपा करके फौरन मेरे साथ चलें. मैं आपसे प्रार्थना करता हूं ... मेरी पत्नी बहुत सख्त बीमार पड़ी है... मैं गाड़ी लाया हूं."

आगंतुक के हावभाव और आवाज से लग रहा था कि वह बहुत घबराया हुआ है. उसकी सांस तेजी से चल रही थी और वह तेजी से कांपती हुई आवाज में बोल रहा था, मानो वह कहीं किसी पागल कुत्ते या आग से बचकर भागता आ रहा हो. उसकी बात में भी साफदिली और बच्चे जैसे सहमेपन का पुट था. वह छोटे अधूरे जुमले बोल रहा था. बहुत-सी ऐसी फालतू बातें कर रहा था जिनका मामले से कोई संबंध नहीं था.

दुश्मन

"मुझे डर था कि आप घर पर न मिलेंगे." उसने कहना जारी रखा, "ईश्वर के लिए, आप अपना कोट पहन लें और चलें... यह सब हुआ इस तरह कि पापचिस्की... आप उसे जानते हैं, अलेक्सांद्र सेम्योनोविच पापचिस्की मुझसे मिलने आया. थोड़ी देर हम लोग बैठे बातें करते रहे. फिर मेज पर जमकर चाय पी. एकायक मेरी पत्नी चीखी और दिल पर हाथ रखकर कुर्सी पर पसर गयी. हम लोग उसे उठाकर पलंग पर ले गये. मैंने उसकी कनपटियों पर अमोनिया मला और उसके मुंह पर पानी छिड़का, पर वह बिल्कुल मरी-सी पड़ी रही. मुझे डर है कहीं उसका दिल बढ़ न गया हो... आप चलें... उसके पिता की मौत दिल के बढ़ जाने से हुई थी...!"

किरीलोव चुपचाप सुनता रहा, मानो वह रूसी भाषा ही न समझता हो.

जब अबोगिन ने फिर पापचिस्की और अपनी पत्नी के पिता का जिक्र किया और अंधेरे में फिर उसका हाथ ढूंढ़ना शुरू किया, तब उसने सिर उठाया और उदासीन भाव से हर शब्द को लंबा खींचते हुए कहा, "मुझे अफसोस है कि मैं आपके घर नहीं जा सकूंगा... पांच मिनट पहले मेरा लड़का... मर गया...!"

"अरे नहीं!" पीछे को हटते हुए अबोगिन फुसफुसाया, "हे ईश्वर! मैं किस गलत मौके पर आया. कैसे अभागा दिन है यह... वाकई यह कैसी अजब बात है. कैसा संयोग है यह...कौन सोचता था!"

उसने दरवाजे का हत्था पकड़ लिया. वह फैसला नहीं कर पा रहा था कि वह लौट जाये या डाक्टर की मिन्नत करता रहे. फिर किरीलोव की बांह पकड़कर बोला, "मैं आपकी हालत बखूबी समझता हूं. ईश्वर जानता है कि मैं ऐसे बुरे वक्त आपका ध्यान खींचने की कोशिश करने के लिए कितना शर्मिंदा हूं, पर मैं क्या करूं? आप ही सोचें मैं कहां जाऊं? इस जगह आपके सिवा और कोई डाक्टर नहीं है. आप चलें, ईश्वर के लिए चलें!"

▣

वहां खामोशी छा गयी. किरीलोव, अबोगिन की ओर पीठ फेरकर एक मिनट चुपचाप खड़ा रहा और फिर ड्योढ़ी से धीरे-धीरे बैठक में चला गया. उसकी अनिश्चित यंत्रवत चाल, बैठक में अनजले लैंपशेड की झालर सीधी करने और मेज पर पड़ी एक मोटी किताब के पन्ने पलटने के खोये-खोये ढंग से लग रहा था कि उस समय न उसकी कोई इच्छा थी, न इरादा था, न वह कुछ सोच रहा था. वह शायद बिल्कुल भूल गया था कि बाहर ड्योढ़ी में कोई अजनबी भी खड़ा है. कमरे के सन्नाटे और धुंध में उसकी विमूढ़ता बढ़ती लगती थी. बैठक से अपने कमरे की ओर बढ़ते हुए उसने अपना दाहिना पैर जरूरत से ज्यादा ऊंचा उठा लिया और फिर दरवाजे की चौखट टटोलने लगा. उसकी पूरी आकृति से एक तरह का भौचक्कापन प्रकट हो रहा था, मानो वह किसी अनजाने मकान में चला आया हो. रोशनी की एक चौड़ी पट्टी, कक्ष की एक दीवार और किताबों की अलमारियों पर पड़ रही थी. वह रोशनी कारबोलिक और ईथर की तीखी और भारी गंध के साथ सोनेवाले कमरे से आ रही थी, जिसका दरवाजा जरा-सा खुला हुआ था... डाक्टर मेज के पास वाली कुरसी में धंस गया. थोड़ी देर वह रोशनी में पड़ी किताबों को उनींदा-सा घूरता रहा, फिर उठकर सोनेवाले कमरे में चला गया.

सोनेवाले कमरे में मौत का-सा सन्नाटा था. यहां की छोटी से छोटी चीज भी उस तूफान का सबूत दे रही थी जो बिल्कुल हाल में गुजरा था. वहां पूर्ण निस्तब्धता थी. बोतलों, बक्सों व मर्तबानों से भरी तिपाई पर एक मोमबत्ती और अलमारी पर रखा एक बड़ा लैंप, पूरे कमरे को रोशन कर रहे थे. खिड़की के ठीक पास पलंग पर एक बच्चा लेटा था, जिसकी आंखे खुली थीं और चेहरे पर अचरज का भाव था. वह बिल्कुल हिलडुल नहीं रहा था, पर उसकी खुली आंखे क्षण-क्षण काली पड़कर माथे में ही गहरी धंसती जा रही लगती थीं. उसके शरीर पर हाथ रखे, बिस्तर में मुंह छिपाये, मां पलंग के पास झुकी बैठी थी. बच्चे की तरह वह भी निश्चल थी. पलंग से वह पूरी तरह से चिपटी हुई थी.

▣

डाक्टर अपनी पत्नी की बगल में आ खड़ा हुआ. पतलून की जेबों में हाथ डालकर और सिर एक ओर झुकाकर वह अपने बेटे की ओर ताकने लगा. उसके चेहरे से उदासीनता टपक रही थी और सिर्फ दाढ़ी पर चमक रही बूंदे ही इस बात का पता दे रही थीं कि वह अभी रोया है.

कमरे की उदास निस्तब्धता में भी एक अजीब सौंदर्य था, जिसकी अभिव्यक्ति सिर्फ संगीत द्वारा ही की जा सकती है. किरीलोव और उसकी पत्नी ने कुछ नहीं कहा, वे रोये नहीं, जैसे अपने समय से उनका यौवन बिदा हुआ था, वैसे ही इस बच्चे के साथ उनका संतान पाने का हक भी विदा हो चुका था. डाक्टर की उम्र चवालीस साल की थी. उसके बाल अभी से सफेद हो गये थे और वह बूढ़ा लगता था. उसकी बीमार मुरझायी हुई पत्नी पैंतीस वर्ष की थी. आंद्रेई उनका इकलौती ही नहीं, आखिरी संतान भी थी.

अपनी पत्नी के विपरीत, डाक्टर उस स्वभाव के व्यक्तियों में से था, जो मानसिक तकलीफ के समय कुछ कर डालने की जरूरत महसूस करते हैं. पत्नी के पास कुछ मिनट खड़े रहने के बाद वह सोनेवाले कमरे से निकल आया. उसी तरह दाहिना पैर जरूरत से ज्यादा उठाते हुए वह एक छोटे-से कमरे में गया जो एक सोफे से ही आधा भरा हुआ था. वहां से होता वह रसोई में गया. अलावघर और रसोइये के पलंग के पास टहलते हुए वह झुककर एक छोटे-से दरवाजे से होकर ड्योढ़ी में निकल गया.

यहां उसकी गुलबंद और फीके पड़े चेहरेवाले व्यक्ति से फिर मुठभेड़ हो गयी.

चेखव का मैक्सिम गोर्की को लिखा गया एक पत्र

तुम्हारी जगह मैं होता तो हिंदुस्तान जाता...

यान्टा : 3 फरवरी, 1900

तुम्हारा पत्र मिला—धन्यवाद.

टालस्टाय और 'अंकल वान्या' के बारे में तुम्हारी पंक्तियां पढ़ीं. 'अंकल वान्या' को मैं मंचित रूप में देख नहीं पाया. इस स्मरण के लिए मैं फिर से धन्यवाद देना चाहता हूं. यहां याल्टा में पत्रों के बिना खुशी-खुशी जिंदा रहना काफी मुश्किल है.

तुम्हें फेफड़ों की बीमारी है तो फिर निजनी में क्यों रह रहे हो? क्यों? जरा सोचो निजनी में तुम्हें क्या सहायता मिल पायेगी? इस शहर में तुम किस वजह से चिपके हुए हो? अगर तुम्हें मास्को पसंद है तो लिखो, तुम मास्को में क्यों नहीं रहना चाहते? मास्को में थियेटर हैं तथा और भी बहुत कुछ है. सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि यहां से बाहर दूसरे किसी देश में जाना काफी आसान है. निजनी में रहते हुए तुम सारी उम्र वासिल्सरक से आगे नहीं जा पाओगे. तुम ज्यादा देखना चाहते हो, जानना चाहते हो. . .अपनी दृष्टि को व्यापक बनाना चाहते हो. मैं जानता हूं कि तुम्हारी कल्पना काफी तेज है, लेकिन यह उस तंदूर की तरह है जिसे पर्याप्त इंधन नहीं मिला. कोई भी व्यक्ति इसे महसूस कर सकता है और खास तौर से कहानियों में. . .तुम दो या तीन पात्रों को प्रस्तुत करते हो, लेकिन वे पात्र भीड़ से अलग-थलग रहते हैं. कोई भी समझ सकता है कि ये चरित्र सिर्फ तुम्हारी कल्पना हैं. . . जनता से इनका कोई संबंध नहीं है. यह आलोचना मैं तुम्हारी अच्छी रचनाओं (जैसे 'मेरा सफर का साथी') के बारे में नहीं कर रहा. तुम्हारी अच्छी रचनाओं में पात्रों के साथ-साथ उस पूरे परिवेश की झलक दिखाई देती है, जहां से वे आये हैं. उनकी पृष्ठभूमि में सारे मानवीय तथ्य छुपे रहते हैं. देखो, मैं कितना भाषण दे रहा हूं तुम्हें!

अब तुम्हें निजनी में नहीं रहना चाहिए. तुम एक जवान आदमी हो, हृष्ट-पुष्ट हो, शक्तिशाली हो, अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो हिंदुस्तान जाता. इसी तरह मैं दूसरे देशों को देखता. दो या इससे ज्यादा संकायों से डिग्रियां लेता. हां, मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं. तुम हंसोगे, लेकिन क्या करूं, चालीस साल की इस उम्र में दमे के साथ-साथ और बहुत-सी बीमारियों ने मुझे घेर रखा है. खैर, एक अच्छे दोस्त और कामरेड की तरह तुम मेरे इस पादरी जैसे उपदेश का बुरा मत मानना.

मुझे पत्र लिखना. मैं 'फोमा गार्डयेव' पढ़ रहा हूं . . .अभी तक ढंग से इसे देखा भी नहीं है.

तुम्हारा—चेखव

"आखिरकार!" दरवाजे के हत्थे पर हाथ रखते हुए अबोगिन ने लंबी सांस लेकर कहा, "मेहरबानी करके चलिए."

डाक्टर चौंक पड़ा, उसकी ओर देखा और उसे याद आ गया. . . फिर इस दुनिया में लौटते हुए उसने कहा, "कैसी अजब बात है!".

अपने गुलूबंद पर हाथ रखते हुए और मिन्नत भरी आवाज में अबोगिन बोला, "डाक्टर! मैं पत्थर की मूरत नहीं हूं, आपकी हालत अच्छी तरह समझ रहा हूं. मुझे आपसे हमदर्दी है. पर मैं आपसे अपने लिए अनुनय, विनय नहीं कर रहा हूं. मेरी पत्नी मर रही है. यदि आपने उसकी वह चीख सुनी होती, उसका वह चेहरा देखा होता, तो आप मेरी इस जिद को समझ सकते. हे भगवान!. . . मैं सोच रहा था कि आप कपड़े पहनने गये हैं. डाक्टर वक्त बहुत कीमती है. आप चलें, मैं हाथ जोड़ता हूं.

बैठक की ओर बढ़ते हुए डाक्टर ने एकेक शब्द का स्पष्ट उच्चारण करते हुए कहा, "मैं आपके साथ नहीं जा सकता."

अबोगिन उसके पीछे-पीछे गया और उसकी बांह पकड़ ली, "सच, आप बहुत दुखी हैं. मैं समझ रहा हूं, पर मामूली दांत-दर्द के इलाज या किसी बीमारी के लक्षण पूछने भर के लिए तो मैं आपसे चलने का इसरार नहीं कर रहा !" वह याचना भरे स्वर में बोला, "मैं एक इंसान की जिंदगी बचाने के लिए कह रहा हूं, यह जिंदगी व्यक्तिगत शोक के ऊपर है, डाक्टर! अब आप चलें, मानवता के नाम पर मैं आपसे धीरज और बहादुरी दिखाने को कह रहा हूं."

"मानवता!. . .यह दुधारी तलवार है!" किरीलोव ने झुंझलाकर कहा, "इसी मानवता के नाम पर मैं आपसे कहता हूं कि मुझे न ले जाइए. अजब बात है, सचमुच . . . यहां मेरे लिए खड़ा होना दूभर हो रहा है और आप हैं कि मुझे 'मानवता' शब्द की धमकी दे रहे हैं. इस वक्त मैं कोई काम करने के काबिल नहीं हूं. किसी तरह भी मैं जाने को राजी नहीं हो सकता, और फिर यहां कोई है भी नहीं, जिसे मैं अपनी बीबी के पास छोड़ जाऊं. नहीं, नहीं." किरीलोव एक कदम पीछे हट गया और हाथ हिलाते हुए इंकार करने लगा, "आप मुझे जाने को न कहें!" फिर एकदम घबराकर बोला, "मुझे माफ करें, आचरण संहिता के तेरहवें खंड के अनुसार मैं आपके साथ जाने को बाध्य हूं और आपको अख्तियार है कि मेरे कोट का कॉलर पकड़कर मुझे बेशक घसीट ले जायें. अच्छी बात है, आप यही करें पर मैं कोई भी काम करने के काबिल नहीं हूं. मैं बोल भी नहीं सकता. . .मुझे माफ करें!"

"डाक्टर, आप ऐसा न कहें." उसकी बांह से चिपके-चिपके ही अबोगिन ने कहा, "मुझे तेरहवें खंड से क्या लेना देना? आपकी इच्छा के विरुद्ध चलने के लिए आपको मजबूर करने का मुझे

कोई हक नहीं. अगर आप चलने को राजी हैं, तो ठीक, अगर नहीं तो मजबूरी है, मेरी अपील आपके दिल से है. एक युवती मर रही है. आप कहते हैं कि आपका बेटा अभी मरा है, तब तो औरों से ज्यादा आपको मेरी तकलीफ समझनी चाहिए."

किरीलोव चुपचाप खड़ा रहा. अबोगिन फिर डाक्टरी के पेशे और उसके त्याग, तपस्या आदि के संबंध में बोलता रहा. डाक्टर ने रुखाई के साथ पूछा, "क्या बहुत दूर जाना होगा?"

"बस, यही तेरह-चौदह मील. मेरे घोड़े बहुत बढ़िया हैं. डाक्टर! ईमान की कसम, वे घंटे भर में आपको वापस पहुंचा देंगे, सिर्फ एक घंटे में."

डाक्टर पर डाक्टरी के पेशे और मानवता के संबंध में कहे गये जुमलों से ज्यादा असर इन आखिरी शब्दों का पड़ा. एक क्षण सोचने के बाद उसने उसांस भरकर कहा, "अच्छा, चलो. . .चलें!"

वह तेजी से कमरे में घुसा. अब उसकी चाल स्थिर थी. क्षण भर में ही वह फ्रॉक-कोट डालकर वापस लौट आया. अबोगिन छोटे-छोटे डग भरते हुए उसकी बगल चलने लगा और कोट पहनने में उसकी मदद करने लगा. फिर दोनों साथ-साथ घर से बाहर निकले.

■

बाहर अंधेरा था, पर इतना गहरा नहीं जितना भीतर ड्योढ़ी में था.

"आप यकीन मानें आपकी उदारता की कद्र करना मैं जानता हूं." गाड़ी में डाक्टर को बैठाते हुए वह बुदबुदाया, "हम लोग वहां अभी पहुंचते हैं. . . लुका प्यारे, तुम जितनी तेजी से हांक सकते हो, हांको! मेहरबानी करके हांको!"

कोचवान ने घोड़े दौड़ा दिये.

करीब रास्ते भर किरीलोव और अबोगिन चुप रहे. अबोगिन सिर्फ एक बार गहरी सांस लेकर बड़बड़ाया.

"कैसी दारुण परिस्थिति है. जो आत्मीय हैं, उन पर इतना प्रेम कभी नहीं उमड़ता, जितना तब, जब उन्हें खो बैठने का डर पैदा हो जाता है!"

फिर जब नदी पार करने के लिए गाड़ी धीमी हुई, किरीलोव यकायक चौंक पड़ा मानो पानी की छपछप ने उसे चौंका दिया हो. वह अपनी जगह से हिलकर उदास लहजे में बोला, "देखिए मुझे जाने दीजिए. मैं बाद में आ जाऊंगा. मैं सिर्फ अपने सहायक को अपनी पत्नी के पास भेजना चाहता हूं. वह तो बिल्कुल ही अकेली रह गयी है न!"

गाड़ी जैसे-जैसे अपने मुकाम पर पहुंच रही थी, अबोगिन उतना ही धैर्यहीन होता जा रहा था. वह उठता, बैठता, चौंककर उछल पड़ता, आगे कोचवान के कंधे के ऊपर ताकता. अंततः गाड़ी जब धारीदार किरमिच के परदे से रुचिपूर्ण ढंग से सजे ओसारे में जाकर रुकी, उसने जल्दी और जोर से सांस लेते हुए दूसरी मंजिल की खिड़कियों की ओर ताका, जिनसे रोशनी आ रही थी.

"अगर कुछ हो गया तो. . . मैं बरदाश्त नहीं कर पाऊंगा." उसने डाक्टर के साथ ड्योढ़ी की ओर बढ़ते हुए घबराहट में हाथ मलते हुए कहा. पर परेशानी प्रकट करने वाली कोई आवाज तो सुनायी नहीं पड़ती, इसलिए अब तक सब कुछ ठीक ही होगा." सन्नाटे में कुछ सुन पाने के लिए कान लगाये वह बोला.

ड्योढ़ी में बोलने की आवाज भी नहीं सुनायी पड़ रही थी और पूरा घर तेज रोशनी के बावजूद सोया हुआ लग रहा था.

सीढ़ियां चढ़ते हुए उसने कहा, "न कोई आवाज है और न कोई दिखाई ही पड़ता है, कहीं कोई हलचल या खलबली भी नहीं, ईश्वर करे. . . .!"

अबोगिन डाक्टर को ड्योढ़ी से होते हुए हॉल में ले गया, जहां एक पियानो की काली आकृति दिखाई पड़ रही थी और छत से ढीले सफेद आवरण में फानूस लटक रहा था. यहां से वे एक छोटे दीवानखाने में गये जो आरामदेह और आकर्षक ढंग से सजा था और जिसमें गुलाबी-सी कांति झिलमिला रही थी.

"डाक्टर! आप यहां बैठें और इंतजार करें". अबोगिन बोला, "मैं अभी एक मिनट में आता हूं. जाकर देख लूं और बता दूं कि आप आ गये हैं."

सब ओर शांति थी . . . दूर, किसी दूसरे कमरे में किसी ने जोर से आह भरी, किसी अलमारी का शीशे का दरवाजा झनझनाया और फिर शांति छा गयी. कोई पांचेक मिनट के बाद किरीलोव ने हाथों की ओर निहाराना छोड़ उस दरवाजे की ओर देखा, जिससे अबोगिन गया था.

अबोगिन दरवाजे में खड़ा था, पर वह अब वही अबोगिन नहीं था, जो कमरे से गया था. उसकी परिष्कृत रुचि और खाया-पिया होने की छवि उसे दगा दे गयी थी. उसके चेहरे पर एक विरक्ती का भाव अंकित था, जो मानो डर था या शारीरिक तकलीफ. उसकी नाक, मूंछें, उसका सारा चेहरा फड़क रहा था, मानो ये सारी चीजें उसके चेहरे से फूटकर अलग निकल पड़ना चाहती हों, उसकी आंखों में पीड़ा की चमक थी!

लंबे भारी डग भरता हुआ वह दीवानखाने के बीच आ खड़ा हुआ, फिर आगे झुककर मुट्ठियां बांधते हुए कराहने लगा.

"वह मुझे दगा दे गयी!" फिर 'दगा' पर जोर देते वह चिल्लाया, "मुझे छोड़ गयी. दगा दे गयी. यह सब झूठ क्यों? हे भगवान! यह गंदी, फरेब भरी चालबाजी क्यों? यह शैतानियत भरा धोखे का खेल क्यों? मैंने उसका क्या बिगाड़ा था? वह मुझे क्यों छोड़ गयी!"

डाक्टर के उदासीन चेहरे पर जिज्ञासा की झलक उभर आयी, वह उठ खड़ा हुआ और अबोगिन की ओर देखता हुआ बोला, "पर मरीज कहां है?"

"मरीज! मरीज!" हंसता और रोता, मुट्ठियां हिलाता अबोगिन चिल्लाया, "वह मरीज नहीं पापिन है. कितना कमीनापन! कितना कालापन! आप सोचेंगे शैतान भी खुद इससे ज्यादा घिनौनी बात नहीं सोच पाता. मुझे भेज दिया. क्यों? ताकि वह भाग सके, उस दलाल, उस भौंडे भांड के साथ भाग जाये! हे भगवान! यदि वह मर जाती तो भी अच्छा था. मैं बरदाश्त नहीं कर सकूंगा, कभी नहीं."

डाक्टर तनकर खड़ा हो गया. उसने आंसुओं से भरी आंखें झपकायीं, उसकी नुकीली दाढ़ी भी जबड़ों के साथ दायें-बायें हिल

रही थी. वह भौचक्का होकर बोला, "माफ कीजिए, इसका मतलब क्या है? मेरा बच्चा मर गया है, मेरी पत्नी शोक से मरी जा रही है, घर में अकेली है, खुद मैं मुश्किल से खड़ा हो पा रहा हूं, तीन रात से मैं सोया नहीं हूं और यहां मुझे क्या पता लगता है? क्या मैं एक भद्दी भड़ैत में पार्ट करने के लिए बुलाया गया हूं? मंच की सामग्री भर बना दिया गया हूं? मैं. . .मेरी तो समझ में कुछ नहीं आता."

अबोगिन ने एक मुट्ठी खोली और एक मुड़ा-मुड़ा-सा पुर्जा फर्श पर डालकर उसे कुचल दिया, मानो वह कोई कीड़ा रहा हो, जिसे वह नष्ट कर डालना चाहता था. अपने चेहरे के सामने मुट्ठी हिलाते हुए, दांत भींचकर वह बोला, "और मैंने कुछ ध्यान नहीं दिया, कुछ समझा नहीं. मैंने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया कि वह रोज मेरे यहां आता है, इस बात पर गौर नहीं किया कि आज वह मेरे घर बग्घी में आया था. बग्घी में क्यों? मैं अंधा और मूर्ख था, जिसने इस बात पर सोचा तक नहीं, अंधा और मूर्ख!" उसके चेहरे से लग रहा था मानो किसी ने उसके पैरों को कुचल दिया हो.

डाक्टर फिर बड़बड़ाया, "मैं. . . मेरी समझ में नहीं आता. इन सबका मतलब क्या है? यह तो किसी इंसान की हिकारत करना हुआ, इंसान के दुख और वेदना का मजाक उड़ाना हुआ. यह तो बिल्कुल नामुमकिन बात है. . . मैंने तो अपनी जिंदगी में कभी ऐसी बात सुनी तक नहीं."

भारी चौकन्नेपन के साथ उस व्यक्ति की तरह जो अब समझ रहा हो कि उसका बड़ा भारी अपमान किया गया है, डाक्टर ने अपने कंधे उचकाये और बेबसी में हाथ फैला दिये, बोलने या कुछ भी कर सकने में असमर्थ वह फिर आराम कुर्सी में धंस गया.

"तो तुम अब मुझे प्यार नहीं करती, किसी दूसरे से प्रेम करती हो. . . .अच्छी बात है, पर यह धोखा क्यों, यह कमीनी दगाबाजी क्यों?" रुआंसे स्वर में अबोगिन बोला, "इससे किसका भला होगा? और यह हरकत क्यों की? मैंने तुम्हारा कब क्या बिगाड़ा था? डाक्टर!" वह आवेग में किरीलोव के पास जाता हुआ चिल्लाया, "आप अनजाने में मेरे दुर्भाग्य के गवाह बन गये हैं. . . और मैं आपसे सच बात नहीं छिपाऊंगा. मैं कसम खाता हूं, उस औरत से मैं मुहब्बत करता था, मैं उसकी पूजा करता था, मैं उसका गुलाम था. मैंने उसके लिए हर चीज की कुरबानी की. अपने रिश्तेदारों से झगड़ा किया, नौकरी छोड़ दी, संगीत का अपना शौक छोड़ दिया, उन बातों के लिए उसे माफ कर दिया जिनके लिए मैं अपनी मां या बहन को भी माफ नहीं करता . . . मैंने उसे कभी कड़ी निगाह से नहीं देखा. मैंने कभी उसे बुरा मानने का जरा-सा मौका नहीं दिया. यह सब झूठ और फरेब है. . . क्यों? अगर तुम मुझे प्यार नहीं करती थी तो ऐसा साफ-साफ कह क्यों नहीं दिया. . . इन सब मामलों में तुम मेरी राय जानती थी!"

आंखों में आंसू भरे, कांपते हुए, अबोगिन ने ईमानदारी से अपना दिल डाक्टर के सामने खोलकर रख दिया. वह भावोद्रेक में बोल रहा था, सीने से हाथ लगाये हुए, बिना किसी झिझक के वह गोपनीय घरेलू बातें बता रहा था. वास्तव में, एक तरह से आश्वस्त-सा होता हुआ कि आखिरकार ये गोपनीय बातें अब खुल गयीं. अगर इसी तरह वह घंटे भर और बोल लेता, अपने दिल की बात कह लेता, गुबार निकाल लेता तो इसमें शक नहीं कि वह बेहतर महसूस करने लगता. कौन जाने, अगर डाक्टर दोस्ताना हमदर्दी से उसकी बातें सुन लेता, शायद जैसा कि अक्सर होता है, वह ना-नुच किये बिना और अनावश्यक गलतियां किये बिना ही अपने भाग्य से संतुष्ट हो जाता...पर हुआ कुछ और ही. अबोगिन बोल रहा था, अपमानित डाक्टर के चेहरे पर एक तबदीली-सी होती दिखाई दी. उसके चेहरे पर जो उदासीनता और स्तब्धता का भाव था, वह मिट गया और उसकी जगह क्रोध और अपमान और गुस्से ने ले ली. उसका चेहरा और भी कठोर, अप्रिय और हठपूर्ण हो गया. अबोगिन ने उसे घोर धार्मिक पादरियों जैसे रूखे और भावशून्य चेहरेवाली एक सुंदर नवयुवती की फोटो दिखाते हुए पूछा कि क्या कोई यकीन कर सकता है कि इस चेहरेवाली औरत झूठ बोल सकती है!

▣

डाक्टर अबोगिन के पास से पीछे हट गया और भौचक्का होकर उसकी ओर देखने लगा.

"आप मुझे यहां लाये क्यों?" डाक्टर कहता गया. उसकी दाढ़ी हिल रही थी, "आपने शादी की, क्योंकि इससे ज्यादा अच्छा और कोई काम आपको था नहीं. . . और इसलिए आप अपना ओछा नाटक मनमाने ढंग से खेलते रहे, पर मुझे इससे क्या लेना-देना? मुझे आपके इस प्यार-मुहब्बत से क्या सरोकार? मुझे तो चैन से जीने दीजिए. आप अपनी सभ्य मुक्केबाजी कीजिए, अपने मानवतावादी विचार बघारिए, वायलिन बजाइए, मुर्गे की तरह मुटाइए, लेकिन किसी को जलील करने की हिम्मत मत कीजिए. अगर आप उनका सम्मान नहीं कर सकते तो उनसे मेहरबानी करके अलग ही रहिए."

अबोगिन का चेहरा लाल हो गया. उसने पूछा, "इसका मतलब क्या है?"

"इसका मतलब यह है कि लोगों के साथ यह कमीना और कुत्सित खिलवाड़ है. मैं डाक्टर हूं, आप डाक्टरों को, बल्कि हर ऐसा काम करने वाले को जिसमें इत्र और वेश्यावृत्ति की गंध नहीं आती, नौकर और बदमाश किस्म का आदमी समझते हैं. आप जरूर समझिए. लेकिन दुखी व्यक्ति को नाटक की सामग्री समझने का आपको कोई हक नहीं है."

अबोगिन का चेहरा गुस्से से फड़क रहा था, उसने हलकाकर पूछा, "मुझसे ऐसी बात करने की आपकी हिम्मत कैसे हुई?"

मेज पर घूंसा मारते हुए डाक्टर चिल्लाया, "मेरा दुख जानते हुए भी अपनी अनाप-शनाप बातें सुनाने के लिए मुझे यहां लाने की हिम्मत आपको कैसे हुई? दूसरे के दुख का मखौल करने का हक आपको किसने दिया?"

अबोगिन चिल्लाया, "आप जरूर पागल हैं. कितने बेरहम हैं. मैं खुद कितना अधिक दुखी हूं. . . और . . . और. . .!"

नफरत से मुस्कराकर डाक्टर ने कहा, "दुखी! आप इस शब्द का इस्तेमाल मत कीजिए, इसका आपसे कोई वास्ता नहीं. जो निकम्मे आवारा कर्ज नहीं ले पाते वे भी अपने को दुखी कहते हैं. मुटापे से परेशान मुर्गा भी दुखी होता है. ओछे आदमी!"

अंतोन चेखव–1883 : चेखव के छोटे भाई निकोलाई चेखव द्वारा बनाया गया चित्र

गुस्से से पिपियाते हुए अबोगिन ने कहा, "जनाब, आप अपनी औकात भूल रहे हैं. ऐसी बातों का जवाब लातों से दिया जाता है."

अबोगिन ने जल्दी से अंदर की जेब टटोलकर उसमें से नोटों की एक गड्डी निकाली और उसमें से दो नोट निकालकर मेज पर पटक दिये. नथुने फड़काते हुए उसने कहा, "यह रही आपकी फीस, आपके दाम अदा हो गये."

नोटों को जमीन पर फेंकते हुए डाक्टर चिल्लाया, "रुपये देने की गुस्ताखी मत कीजिए. ये अपमान इससे नहीं धुल सकता!"

अबोगिन और डाक्टर एक दूसरे को गुस्से से अपमानजनक और भद्दी-भद्दी बातें कहने लगे. उन दोनों ने जीवन भर शायद सन्निपात में भी कभी इतनी अनुचित, बेरहम और बेहूदी बातें नहीं कही थीं. दोनों में वेदनाजन्य अहं जाग गया था. जो दुखी होते हैं उनका अहं बहुत बढ़ जाता है, वे क्रोधी, नृशंस और अन्यायी हो जाते हैं, वे एक दूसरे को समझने में मूर्खों से भी ज्यादा असमर्थ होते हैं. दुर्भाग्य लोगों को मिलाने की जगह, अलग करता है. यह समझा जाता है कि एक ही तरह का दुख पड़ने पर लोग एक दूसरे के नजदीक आ जाते होंगे, लेकिन हकीकत यह है कि ऐसे लोग अपेक्षाकृत संतुष्ट लोगों से बहुत ज्यादा नृशंस व अन्यायी साबित होते हैं.

डाक्टर चिल्लाया, "मेहरबानी करके मुझे मेरे घर पहुंचा दीजिए." गुस्से से उसका दम फूल रहा था.

अबोगिन ने जोर से घंटी बजायी. जब उसकी पुकार पर कोई नहीं आया तो उसने गुस्से में घंटी फर्श पर फेंक दी. कालीन पर एक हल्की खोखली आह-सी भरती हुई घंटी खामोश हो गयी.

एक नौकर आया.

घूंसा ताने अबोगिन जोर से चीखा, "तुम लोग कहां मर गये थे? तेरा सत्यानाश हो. तू अभी था कहां? जा इस भलेमानस के लिए गाड़ी लाने को कह और मेरे लिए बग्घी निकलवा!" जैसे ही नौकर जाने के लिए मुड़ा, अबोगिन फिर चिल्लाया, "ठहर! कल इस घर में एक भी गद्दार, दगाबाज नहीं रहेगा. सब निकल जायें. . . मैं नये नौकर रखूंगा. . . बेईमान कहीं के!"

गाड़ियों के लिए इंतजार करते समय डाक्टर और अबोगिन खामोश रहे. नाजुक सुरुचि का भाव अबोगिन के चेहरे पर फिर लौट आया था. बड़े सभ्य लहजे में वह अपना सिर हिलाता हुआ, कुछ योजना-सी बनाता हुआ कमरे में टहलता रहा. उसका गुस्सा अभी शांत नहीं हुआ था, लेकिन वह ऐसा जाहिर करने की कोशिश कर रहा था मानो कमरे में दुश्मन की मौजूदगी की ओर उसका ध्यान भी न गया हो. डाक्टर एक हाथ से मेज पकड़े हुए स्थिर खड़ा अबोगिन की ओर बदनुमा, गहरी हिकारत की निगाह से ताक रहा था.

▣

कुछ देर बाद, जब डाक्टर गाड़ी में बैठा अपने घर जा रहा था, उसकी आंखों में तब भी घृणा की वही भावना कायम थी. घंटे भर पहले जितना अंधेरा था, अब वह उससे ज्यादा बढ़ गया था. दूज का लाल चांद पहाड़ी के पीछे छिप गया था और उसकी रखवाली करने वाले बादल सितारों के आसपास काले धब्बों की तरह पड़े थे. पीछे से सड़क पर पहियों की आवाज सुनायी दी और बग्घी की लाल रंग की लालटेनों की चमक डाक्टर की गाड़ी के आगे आ गयी. यह अबोगिन था, वह प्रतिवाद करने, झगड़ा करने या गलतियां करने पर उतारू था!

रास्ते भर डाक्टर अपनी पत्नी या पुत्र आंद्रेई के बारे में नहीं, अबोगिन और उस घर में रहने वालों के बारे में सोचता रहा, जिसे वह अभी छोड़कर आया था. उसके विचार, नृशंस और अन्यायपूर्ण थे. उसने अबोगिन, उसकी बीवी, पापचिस्की, सुगंधिपूर्ण गुलाबी उषा में रहने वाले सभी लोगों के खिलाफ क्षोभ प्रकट किया और रास्ते भर बराबर वह इन लोगों के लिए घृणा और हिकारत की बातें सोचता रहा, यहां तक कि उसके दिल में दर्द होने लगा और ऐसे लोगों के प्रति एक ऐसा ही दृष्टिकोण उसके दिमाग में स्थिर हो गया.

वक्त गुजरेगा और किरीलोव का दुख भी गुजर जायेगा. लेकिन यह अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण डाक्टर के साथ रहेगा, जिंदगी-भर, उसकी मौत के दिन तक! □

दुःख

चित्रांकन : हरिप्रकाश त्यागी
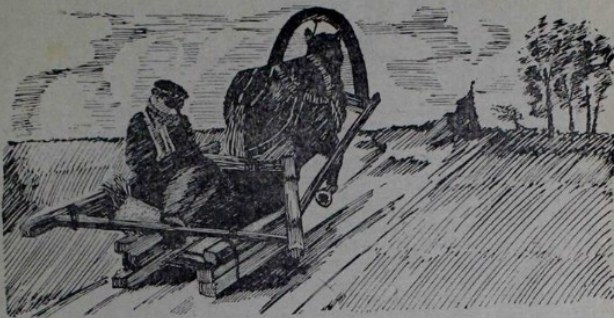
"मैं अपना दुखड़ा किसे सुनाऊं?"

शाम की धुंधली रोशनी है. सड़क के खंभों की रोशनी के चारों तरफ बर्फ की एक मोटी गीली परत धीरे-धीरे अपने को फैला रही है. कोचवान योना पोतापोव सफेद-सा होकर किसी प्रेत की तरह दिख रहा है. आदमी का जिस्म जितना भी मुड़कर एक हो सकता है, उतना उसने कर रखा है. वह चुपचाप अपनी घोड़ागाड़ी पर बिना हिले-डुले बैठा है. उसका छोटा-सा घोड़ा भी पूरी तरह से सफेद दिख रहा है. वह भी हिल-डुल नहीं रहा है. उसकी स्थिरता, शरीर का इकहरापन और लकड़ी की तरह तनी सीधी टांगें देखने पर दो टके के किसी सस्ते मरियल घोड़े का एहसास होता है.

योना और उसका छोटा घोड़ा दोनों ही बड़ी देर से अपनी जगह से नहीं हिले हैं. अपने बाड़े से वे खाने के वक्त से पहले ही निकल आये थे, लेकिन अभी तक उन्हें कोई सवारी नहीं मिली थी.

"अरे गाड़ी वाले, विबोर्ग चलना है क्या?" योना एकाएक सुनता है, "विबोर्ग!"

योना हड़बड़ाहट में उछलकर अपनी आंखों पर जमा हो रही बर्फ के बीच से धूसर रंग के कोट में एक अफसर को देखता है, जिसके सर पर उसकी टोपी चमक रही है.

"विबोर्ग!" अफसर एक बार फिर कहता है, "अबे नींद में हो क्या? विबोर्ग चलना है हमें."

चलने की तैयारी में योना घोड़े की लगाम खींचता है, जिससे उसकी पीठ और गर्दन पर पड़ी बर्फ की परतें नीचे गिरती हैं. अफसर पीछे बैठ जाता है, कोचवान घोड़े को चुमकारते हुए अपना कोड़ा घुमाता है. घोड़ा भी अपनी गर्दन सीधी करता है, अपनी लकड़ी की तरह सख्त दिख रही टांगों को मोड़ता है और अपनी अनिश्चयी शैली में आगे बढ़ना शुरू करता है.

"तुम कर क्या रहे हो जानवर कहीं के!" योना ज्यों ही घोड़ा-गाड़ी आगे बढ़ाता है, अंधेरे में आती-जाती भीड़ में से उसे सुनायी देता है, "तुम ले कहां जा रहे हो, मूर्ख! दायें मोड़ो!"

"तुम्हें गाड़ी चलाना भी नहीं आता है! दाहिने हाथ रहो!" अफसर काफी गुस्से में चीखता है.

"कितने बदमाश हैं. . .सबके सब!" अफसर मजाक करने की कोशिश करता है, "लगता है कि सबने तय कर लिया है कि तुम्हें धकियाना है या फिर तुम्हारे घोड़े के नीचे आना है!"

योना अफसर की तरफ मुड़कर देखता है और अपने होंठ हिलाता है. शायद कुछ कहना चाहता है.

"क्या कहना चाहते हो तुम?" अफसर पूछता है.

योना अपने चेहरे पर एक मुस्कराहट ले आता है और कोशिश करके फटी आवाज में कहता है, "मेरा बेटा बारिन इस हफ्ते गुजर गया साहब!"

"अच्छा! कैसे मर गया वह?"

योना अपनी सवारी की तरफ पूरी तरह मुड़ जाता है और कहता है, "कौन बता सकता है मालिक! वे तो कह रहे थे, तेज बुखार था. तीन दिन बेचारा अस्पताल में पड़ा रहा और फिर हमें छोड़ गया. . .ऊपर वाले की मर्जी पर किसका बस है!"

"अरे, शैतान के बच्चे, ठीक से मुड़!" अंधेरे में आवाज उठती है, "बुड्ढ़ऊराम! टें बोल गयी है तुम्हारी अक्ल? अपनी आंखों से काम क्यों नहीं लेता?"

"जरा तेज चलाओ. . .थोड़ा और तेज. . ." अफसर चीखा, "नहीं तो हम कल तक नहीं पहुंच पायेंगे. जरा और तेज करो."

कोचवान एक बार फिर अपनी गर्दन ठीक करता है, बैठता है और रुखाई से अपना चाबुक हिलाता है. कई बार पीछे मुड़कर अपनी सवारी की तरफ देखता है, लेकिन अफसर ने अब अपनी आंखें मूंद ली हैं. साफ दीख रहा है कि वह कुछ सुनना नहीं चाहता है. अफसर को विबोर्ग पहुंचाकर योना शराबघर के पास गाड़ी खड़ी कर देता है और सीट पर एक बार फिर उकड़ूं होकर दुबक जाता है. एक घंटा, फिर दूसरा घंटा बीत जाता है. . . तभी फुटपाथ पर पतले रबर के जूतों की 'चीं चीं चूं चूं' के साथ झगड़ते हुए तीन किशोर लड़के आते हैं. उनमें से दो दुबले-पतले और लंबे हैं, तीसरा ठिगना और थोड़ा कुबड़ा है.

"अरे गाड़ीवाले! पुलिस ब्रिज चलोगे क्या?" कुबड़ा कर्कश आवाज में पूछता है, "हम तीनों के बीस कोपेक मिलेंगे."

▣

योना घोड़े की लगाम खींचता है और उसके होंठ घोड़े को चुमकारते हैं. बीस कोपेक ठीक भाड़ा नहीं है, लेकिन एक रूबल हो या पांच कोपेक हों, उसे कोई एतराज नहीं. . .उसके लिए अब सब एक ही हैं.

तीनों युवक एक-दूसरे को धकियाते, गाली देते हुए सीट पर एक साथ ही बैठने के लिए धक्कम-धुक्का करते हैं. काफी गाली-गलौज, बहस और बद-मिजाजी दिखाने के बाद आखिर में यह तय होता है कि कुबड़े को खड़े होना चाहिए, क्योंकि वही सबसे नाटा है.

"अच्छा, तो ठीक है, चलो फिर फर्राटे से!" कुबड़ा लड़का नकियाता है. . .अपनी जगह लेकर योना की गर्दन के पास सांस लेता है."

"अमां, तुम्हारी ऐसी की तैसी! क्या सारे रास्ते तुम इसी रफ्तार से चलोगे? क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी गर्दन . . ."

"मेरा तो सिर फटा जा रहा है," लंबे लड़कों में से एक कहता है, "दोंकमासोव के यहां कल रात वास्का और मैंने पूरी चार बोतलें कोंयाक की चढ़ा लीं."

"मुझे समझ में नहीं आता, आखिर तुम झूठ किसलिए बोलते हो?" दूसरे लंबे लड़के ने गुस्से में कहा, "तुम एक दुष्ट की तरह झूठ बोलते हो!"

"भगवान कसम, मैं सच कह रहा हूं!"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, इसमें उतना ही सच है जितना सुई की नोक में से ऊंट निकलने का सच होता है!"

"हें हें हें. . ." योना खीसें निकालता है, "कितने मजाकिया लोग हैं आप सब!"

"अबे भाड़ में जाओ!" कुबड़े ने क्रुद्ध होकर कहा.

"तुम हमें पहुंचाओगे भी या नहीं, बुड्ढ़ऊराम! यह भी कोई चलाने का तरीका है? चाबुक का भी तो कुछ इस्तेमाल करो. जरा कसकर चाबुक तो चलाओ. . .मियां! आदमी हो या पाजामा!"

योना लोगों को देख रहा था और धीरे-धीरे अकेलेपन का एहसास उसे ग्रसता जा रहा था. कुबड़ा गालियां बकता जा रहा है. लंबे लड़कों ने किसी लड़की नादेज्दा पेत्रोवना के बारे में बात करनी शुरू कर दी है. योना उनकी तरफ कई बार देखता है. वह किसी क्षणिक चुप्पी की प्रतीक्षा के बाद मुड़कर बुदबुदाता है, "मेरा बेटा. . .इस हफ्ते गुजर गया."

"हम सबको एक दिन मरना है." कुबड़े ने ठंडी सांस ली. . .खांसी के एक दौरे के बाद होंठ पोंछे. "अबे जरा तेज चलाओ. . .खूब तेज! दोस्तो, मैं इस रफ्तार पर चलने को तैयार नहीं हूं! आखिर इस तरह यह हमको कब तक पहुंचायेगा?"

"अरे बस, जरा इसकी गर्दन थोड़ा गुदगुदाओ!"

"सुन लिया. . .अरे बूढ़े, नरक के कीड़े, मैं तुम्हारी गर्दन की हड्डियां निकाल लूंगा! तुम जैसों की खुशामद करते रहे तो हमें पैदल चलना पड़ जायेगा! सुन रहे हो न बुड्ढ़ऊ, सुअर की औलाद! तुम पर कुछ असर पड़ रहा है या नहीं?"

योना इन सब प्रहारों को सिर्फ सुन रहा है. . .महसूस नहीं कर रहा.

वह हें-हें करके हंसता है. "साहब लोग जवान हैं. . .भगवान इनका भला करे!"

"बुड्ढ़ऊ! क्या तुम शादीशुदा हो!" लंबावाला एक लड़का पूछता है.

"मैं? वाह, आप साहब लोग बड़े मसखरे हैं! अब बस मेरी एक बीवी है. . . सब कुछ वह देख चुकी है अपनी आंखों से. आप समझ गये न मेरी बात. मौत बहुत दूर नहीं है. . .मेरा बेटा मर चुका है और मैं जिंदा हूं. . .कैसी अजीब बात है यह, मौत गलत दरवाजे पर पहुंच गयी... मेरे पास आने के बजाय वह मेरे बेटे के पास चली गयी. . ."

योना पीछे मुड़कर बताना चाहता है कि कैसे उसका बेटा मर गया! लेकिन उसी वक्त कुबड़ा लंबी सांस खींचने के बाद कहता है, "खुदा की बड़ी मेहरबानी है, आखिर पहुंचा ही दिया मेरे साथियों को!" और योना उन सबको अंधेरे से फाटक में धीरे-धीरे गायब होता देखता रहा. एक बार फिर वह अकेला है और सन्नाटे ने एक बार फिर उसे घेर लिया है. . .उसका दुख जो थोड़ी देर के लिए कम हो गया था, फिर लौट आया, और इस बार उसने और भी ताकत के साथ उसके हृदय को चीर दिया. बहुत बेचैनी और हड़बड़ी में वह सड़क की भीड़ को देखता है कि क्या उसमें कोई ऐसा आदमी भी है जो उसकी बात सुनेगा. लेकिन भीड़ उसकी तरफ या उसकी मुसीबत की तरफ ध्यान दिये बिना आगे बढ़ जाती है, पर उसके दुख का रूप इतना विशाल और असीम है कि उसका हृदय फट जाये और उसका सारा दुख बाहर निकल आये तो ऐसा लगता है कि वह सारी पृथ्वी को भर देगा, लेकिन फिर भी उसे कोई नहीं देखता.

योना टाट लादे एक कुली को देखता है. वह उससे बात करने की सोचता है.

"क्या वक्त है भाई?" वह पूछता है.

"नौ से भी ज्यादा वक्त हो चुका है, तुम यहां किसका इंतजार कर रहे हो? कोई फायदा नहीं, अब लौट चलो भाई!"

योना कुछ देर तक आगे बढ़ता है, फिर उकड़ू हालत में अपने दुख में डूब जाता है. उसे महसूस होता है कि मदद के के लिए लोगों की तरफ इस तरह देखना बेकार है. वह इसे और नहीं सह सकता. 'अस्तबल'—वह सोचता है और उसका घोड़ा मानों सब कुछ समझकर दुल्की चलना शुरू कर देता है.

▣

करीब डेढ़ घंटे बाद योना एक बहुत बड़े गंदे-से स्टोव के पास बैठा हुआ है. स्टोव के इर्दगिर्द, जमीन पर, बेंचों पर, लोग खर्राटे ले रहे हैं. हवा भारी है और उसमें दम घोंटने वाली गर्मी है. योना सोये हुए लोगों की तरफ देखता है, अपने-आप को खुजलाता है. . .फिर उसे अफसोस होता है कि क्यों मैं इतनी जल्दी चला आया.

'मैं तो अपने चारे के लिए भी नहीं कमा पाया आज,' वह सोचता है.

एक युवक कोचवान एक कोने में थोड़ा उठकर बैठता है, नींद में ही बड़बड़ाता है और पानी की बाल्टी की तरफ बढ़ता है.

"क्या तुम्हें पानी चाहिए?" योना उससे पूछता है.

"यह भी कोई पूछने की बात है?"

"अरे, नहीं नहीं, तुम्हारी सेहत बनी रहे. . .लेकिन दोस्त तुम्हें क्या यह मालूम है कि मेरा बेटा भगवान को प्यारा हो गया. . .तुमने सुना क्या?. . .इसी हफ्ते, अस्पताल में. . .बड़ी लंबी कहानी है."

योना अपने शब्दों का असर देखना चाहता है, लेकिन कुछ नहीं देख पाता. उस युवक ने अपना चेहरा छुपा लिया है और दुबारा गहरी नींद में चला गया है. बूढ़ा आदमी लंबी सांस लेकर अपना सिर खुजलाता है. उसके बेटे को मरे एक हफ्ता होने को है और इस बारे में वह किसी से भी ठीक बात नहीं कर पाया है. बड़े धीरे-धीरे बहुत ध्यान से ही सब कुछ बताया जा सकता है कि कैसे उसका बेटा बीमार पड़ा, कैसे उसने दुख भोगा, मरने से पहले उसने क्या कहा, कैसे वह मर गया. दफन के वक्त की एक-एक बात बताना जरूरी है और यह भी कि कैसे अस्पताल जाकर उसके कपड़े वापस लिये. उसकी बेटी अनीसिया गांव में ही थी, उसके बारे में भी बताना जरूरी है. क्या उसके पास बताने के लिए कुछ नहीं है? सुनने वाला जरूर लंबी सांस लेगा और उसके साथ सहानुभूति दिखायेगा? औरतों से बात करना भी अच्छा है, हालांकि वे मूर्ख होती हैं. उन्हें रुला देने के लिए दो शब्द ही काफी होते हैं.

चलूं जरा. . .अपने घोड़े को देखूं, योना सोचता है, सोने के लिए तो हमेशा वक्त रहेगा. उसकी क्या परवाह!

वह अपना कोट पहनकर अस्तबल में अपने घोड़े के पास जाता है. अनाज, सूखी घास और मौसम के बारे में सोचता है. अकेला अपने बेटे के बारे में सोचने की हिम्मत वह नहीं कर पाता.

"क्या तुम डटकर खा रहे हो?" योना अपने घोड़े से पूछता है. . .उसकी चमकती आंखों को देखता है, "ठीक है, जमकर खाओ, हालांकि हम आज अपना अनाज नहीं कमा सके, मगर क्या हुआ, हम सूखी घास खा सकते हैं. हां, यह सच है. मैं अब गाड़ी चलाने के लिए बूढ़ा हो गया हूं. . .मेरा बेटा चला सकता था. कितना शानदार कोचवान था मेरा बेटा. वह अगर जीवित होता!"

एक क्षण के लिए योना चुप होता है, फिर अपनी बात जारी रखता है.

"हां, मेरे पुराने प्यारे दोस्त, यह बात है! कुज्या योनिच अब नहीं है. वह हमें जीने के लिए छोड़कर चला गया. सोचो तो जरा, तुम्हारा एक बछड़ा हो, तुम उसकी मां हो और अचानक वह बछड़ा तुम्हें अपने बाद जीने के लिए छोड़ जाये. कितना दुख पहुंचेगा तुम्हें, है न?"

उसका छोटा-सा घोड़ा अपने मालिक के हाथ पर सांस लेता है, सुनता है, उस के हाथ को चबाता है.

योना अपनी भावनाओं के बोझ से बहुत दबा हुआ है. उस छोटे-से घोड़े को अपनी सारी कहानी सुनाता है. □

● रूपांतरः विनोद भारद्वाज

चेखव की डायरी से

4 दिसंबर 1896

अयोग्य लोगों के लिए जिंदगी . . .

यह सच है कि मैं थियेटर से भाग आया था. परंतु तब, जब नाटक खत्म हो चुका था. दो या तीन दृश्यों तक मैं 'एल' के श्रृंगार कक्ष में ही बैठा रहा. मध्यांतर में थियेटर अधिकारी अपनी वर्दी में आ पहुंचे. उनके हाथों में आदेश थे. 'पी.' ने बिल्ला लगा रखा था. उनमें सरकारी पुलिस का एक जवान अधिकारी भी था. जब कोई व्यक्ति अपनी रुचि से इतर कार्य से जुड़ जाता है, मसलन यदि वह कला से जुड़ गया, तो कलाकार न बन पाने की स्थिति में वह कला-अधिकारी बन जाता है. इसी तरह बहुत से लोग—दूसरों का अधिकार छीनते हुए विज्ञान, थियेटर और चित्रकला में प्रवेश कर जाते हैं. ऐसे अयोग्य लोगों के लिए जिंदगी अजनबी है. ▣
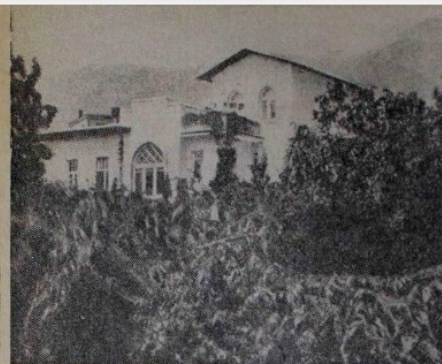
चेखव का यह घर जल्दी ही सांस्कृतिक गतिविधियों से भर गया था. यहां आने वालों में प्रमुख थे : गोर्की, कोरोलेंको, बुनिन, कुप्रिन, लेवितान, स्तानिस्लाव्स्की आदि.

चेखव का अध्ययनकक्ष : आकार में तो छोटा था पर था बहुत सुरुचिपूर्ण

याल्ता का वह आउट हाउस जहां चेखव
समय रहे थे.

"मेरा जीवन ग्र
के लिए समर्पि

□ क्ना

चेखव का शयनकक्ष : साफ सुथर

मकान बनवाते

भाई

है !"

चेखोवा

आरामदेह.

अंतोन चेखव अपनी मां इ. वाई. चेखोवा पत्नी ओल्गा निप्पर और बहन मारिया चेखोवा के साथ.

याल्ता के जिस घर में चेखव अपने जीवन के अंतिम वर्षों में रहे थे उसी को संग्रहालय का रूप दे दिया गया. यहां प्रस्तुत है चेखव की बहन और संग्रहालय की पहली निदेशक मारिया चेखोवा के संस्मरण.

घर की गैलरी, जो गर्मियों में भोजन कक्ष का काम भी देती
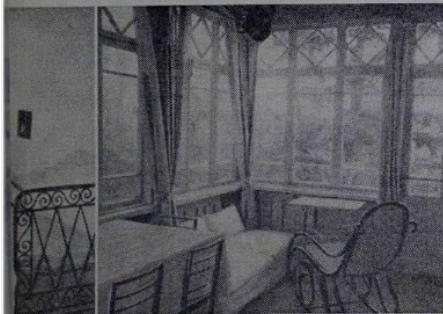
सन् 1898 में पिता की मृत्यु के बाद ही भाई (अंतोन चेखव) ने पूरे परिवार के साथ याल्ता चले आना तय कर लिया था. शहर से बाहरी इलाके में उत्का नाम के एक गांव में ठीक-ठाक कीमत पर एक जमीन का टुकड़ा मिल गया था. अक्तूबर के अंत में जब मैं परिवार से संबंधित कुछ मामलों पर बात करने के लिए याल्ता आयी तब तक जमीन खरीदी जा चुकी थी.

मेरे वहां पहुंचने के अगले दिन हम लोग जमीन देखने के लिए गये. मैं तो भई, बहुत निराश हुई. यह जगह समुद्रतट से बहुत दूर पहाड़ी के ढाल पर थी. उस जगह को देखकर मुझे बहुत धक्का लगा, जहां पर हम नया मकान बनवाने जा रहे थे वह सड़क से दूर पहाड़ी की ढाल पर बंजर-सी जगह थी. मेलिखोवो की तुलना में यह जगह बहुत ही उजाड़ लग रही थी.

उसी शाम को हम लोग अपने भावी मकान और उसके चारों ओर लगाये जाने वाले बाग की रूपरेखा तैयार करने के लिए बैठे. फिर मैं तो मास्को लौट आयी पर अंतोन पाव्लोविच बाकी इंतजामात के लिए वहीं रुक गये. मकान का नक्शा बनवाने के लिए उन्होंने प्रख्यात आर्चिटेक्ट लेव शापोवालोव को बुलाया था. नवंबर में निर्माण कार्य शुरू हुआ.

खर्चा तो इस काम में बहुत होना था. लेकिन सौभाग्य से नीवा पब्लिशर्स ने 1899 के शुरू में ही अंतोन पाव्लोविच की सभी नयी और पुरानी पुस्तकों को प्रकाशित करने के लिए अनुबंध कर लिया. हालांकि इससे बाद में हानि भी उठानी पड़ी पर उस समय का काम चल गया.

1898-99 की सर्दियों में चेखव रोज निर्माण स्थल पर जाते. बसंत में उन्होंने बगीचे में पेड़ लगवा दिये थे. प्रकृति से चेखव को बहुत प्यार था, उपोष्ण वनस्पति में उनकी ज्यादा रुचि नहीं थी. लोकाट, जापानी तेंदू, जैतून, और यहां तक कि नीबू और यूकेलिप्टिस में भी उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी. गुलाब उनका प्यारा फूल था और उन्होंने गुलाब की कई किस्में याल्ता बाग में लगायी थीं, उनमें से कुछ तो क्रीमिया में पहली बार लगायी गयी थीं. वह ऐसा काम करना चाहते थे जो कभी किसी ने न किया हो.

कुप्रिन उनसे मिलने अक्सर याल्ता आते थे. उनसे चेखव ने एक बार कहा था, "इनमें से प्रत्येक वृक्ष मेरा लगाया हुआ है और मेरे लिए परमप्रिय है. मैं जब यहां आया था तो यहां झाड़-झंखाड़ था और मैंने इसे जोत-बोकर इतनी सुंदर जगह बनाया है. जरा तीन-चार सौ साल बाद की कल्पना करो जब सारी दुनिया ही महकता हुआ उपवन होगी. जीवन तब कितना सरल और खुशनुमा होगा."

▣

क्रीमिया में आ बसने के बाद अंतोन पाव्लोविच के कई मित्र उनसे मिलने यहां आते रहते थे. हमारा घर उन दिनों प्रख्यात लेखकों, कथाकारों और रंग-कर्मियों का मेहमानखाना बना हुआ था. इनमें पहला नाम है मैक्सिम गोर्की. गोर्की 1901 में यहां कई दिन रहे. कुप्रिन, मामिन-सिबिर्याक, बुनिन, आंद्रियेव, तेलेशोव, स्तानिस्लाव्स्की और कई लोग तो अक्सर यहां आते ही रहते थे. 1901 में मास्को आर्ट थियेटर वाले विशेष रूप से अंतोन पाव्लोविच को उनके नाटकों 'द सी-गल' और 'अंकल वान्या' की प्रस्तुतियां दिखाने के लिए आये थे. अंतोन पाव्लोविच की भावी पत्नी ओल्गा निप्पर भी उन दिनों हमारी मेहमान थी, जो आर्ट थियेटर की एक उत्कृष्ट अभिनेत्री थी. मेहमानों के स्वागत में उसने मेरी और मां की बहुत मदद की. अंतोन पाव्लोविच बहुत खुश थे क्योंकि उन्हें अपने आस-पास लोग बहुत अच्छे लगते थे.

वे बड़े मजेदार दिन थे. घर में या बागीचे में साहित्य, कला और रंगमंच पर बड़ी दिलचस्प बहसें होती थीं. कुछ लोग बैठक में अंतोन पाव्लोविच को घेरे हैं तो कुछ बरामदे में गोर्की के साथ जमे हैं. शाम को हम लोग थियेटर में जम जाते.

सेहत ठीक न होने के कारण अंतोन पाव्लोविच को अपना डाक्टरी का काम बंद कर देना पड़ा था. फिर भी वक्त-जरूरत पर वे किसी को इंकार नहीं कर पाते थे, वे इसके लिए पैसा नहीं लेते थे. स्थेटिस्कोप और डाक्टरी के अन्य आले उनकी लिखने की मेज पर हमेशा मौजूद रहते थे. पूरे रूस से कई टी.बी. के मरीज याल्ता आते और उनसे सहायता मांगते. उनकी बुरी हालत देखकर अंतोन पाव्लोविच ने महसूस किया कि वहां एक सेनिटोरियम तो होना ही चाहिए ताकि ऐसे रोगियों की देखभाल हो सके. इसके लिए उन्होंने याल्ता के डाक्टरों की एक परोपकारी समिति गठित की और चंदे के लिए अखबारों में एक अपील प्रकाशित की. साथ ही अपने दोस्तों व परिचितों को भी दान देने के लिए लिखा. इस प्रकार याल्ता में 'यूज्लर' नाम के (अब इसका नाम 'चेखव सेनिटोरियम' हो गया है) पहले टी.बी. सेनिटोरियम की स्थापना हुई.

याल्ता में चेखव ने कई प्रसिद्ध कहानियां—'इन द गली', 'द लेडी विद द डॉग', 'द ब्राइड', और नाटक—'द थ्री सिस्टर्स' और 'द चैरी ऑर्चर्ड' लिखे. साथ ही उन्होंने यहां अपनी पुरानी कहानियों को संपादित करके प्रकाशन के लिए तैयार किया.

1901 का वर्ष चेखव की जीवन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन लेकर आया. यह था—ओल्गा निप्पर के साथ उनका विवाह. उन्होंने तथा उनकी पत्नी ने अगले साल की गर्मियां मास्को के निकट एक गांव में स्तानिस्लाव्स्की के घर पर बितायीं. वहां उन्हें इतना अच्छा लगा कि वे कम-से-कम गर्मियों भर के लिए उत्तर में रहने की संभावनाओं पर विचार करने लगे थे. 1903 के मई व जून उन्होंने मास्को में बिताये. जुलाई के शुरू में याल्ता वापस आने पर उन्होंने अपने नाटक 'द चैरी ऑर्चर्ड' पर काम करना शुरू कर दिया.

1 मई (प्राचीन), 1904 को अंतोन पाव्लोविच मास्को चले गये. वहां से वे क्रीमिया वापस नहीं आ पाये. मास्को में वे बीमार पड़ गये और फिर बिस्तर के ही होकर रह गये. डाक्टरों की सलाह पर जून में वे अपनी पत्नी के साथ बादेनवाइलर के जर्मन स्वास्थ्य-सदन चले गये. वहीं से 2 जुलाई को हमें उनके मरने की दुखद और पूर्णतया अप्रत्याशित खबर मिली. तीन दिन पहले ही उन्होंने हमें लिखा था कि वे समुद्री मार्ग से याल्ता आ रहे हैं.

शोक संतप्त मां और मैं, अपने दोनों छोटे भाइयों—इवान और मिखाइल के साथ मास्को गये जहां 9 जुलाई को नोवोदेविची सेमेट्री में उनका अंतिम संस्कार हुआ. बड़ी संख्या में लोग वहां उपस्थित थे.
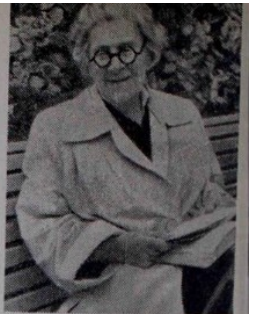
मारिया चेखोवा

▣

उनकी मृत्यु के बाद ही रूसी बुद्धि-जीवियों का प्रगतिशील वर्ग लेखक के घर में दिलचस्पी प्रकट करने लगा. वे लोग अकेले या कई एक साथ आकर उस स्थान को देखने की अनुमति मांगते जहां चेखव ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताये थे. इससे यह तो साफ हो गया कि लेखक और उसके काम के प्रति लोगों के अनन्य प्रेम के लिए इस घर को हमें एक साहित्यिक स्मारक के रूप में सुरक्षित रखना होगा. इस प्रकार चेखव स्मारक संग्रहालय स्थापित करने का विचार पैदा हुआ.

अक्तूबर क्रांति के बाद स्थितियां बदलीं. संग्रहालय को सरकार ने अपने हाथ में ले लिया. इसके लिए कर्मचारी रखे गये. क्यूरेटर नियुक्त किया गया. साल-दर-साल संग्रहालय देखने वालों की संख्या बढ़ती गयी.

मेरा जीवन तो अपने भाई के लिए समर्पित है. आज जब मैं देखती हूं कि विभिन्न देशों के असंख्य लोग उनके प्रति इतना प्रेम प्रकट करते हैं तो मेरे लिए इससे सुखद बात और कोई नहीं होती. □

निर्वासित

बूढ़े सिमोन को लोग 'ज्ञानी' भी कहते थे. वह एक युवा तातारी के साथ, नदी के किनारे बैठा आग ताप रहा था. सिमोन साठ वर्ष का दुबला-पतला, बिना दांत का, लेकिन स्वस्थ, चौड़े कंधों वाला व्यक्ति था, जो इस समय शराब के नशे में था. अगर उसकी जेब में बोतल न होती, और मन में यह भय न होता कि झोंपड़ी में जाते ही उसके साथी वोद्का मांगने लगेंगे तो वह कभी का सोने जा चुका होता. तातारी थका हुआ और बीमार था. फटे चीथड़ों में लिपटा वह सिम्बर्सक के शानदार जीवन, अपनी पत्नी की सुंदरता और चतुराई का बखान कर रहा था, जिसे वह पीछे छोड़ आया था.

"हां, सच है, तुम इसे स्वर्ग तो नहीं कह सकते." ज्ञानी ने कहा, "एक बार में ही सब नजर आ जाता है—पानी, सुनसान किनारे और हर जगह मिट्टी ही मिट्टी. पवित्र सप्ताह (ईस्टर के रविवार से पूर्व का सप्ताह) बीते भी कितना ही समय हो गया, लेकिन अभी तक नदी पर बर्फ है और आज सुबह भी बर्फ पड़ी थी."

"दुर्दशा है दुर्दशा." चारों ओर भयभीत दृष्टि डालते हुए तातारी बुदबुदाया.

दूर समुद्र की ओर तेजी से बहती हुई नदी उस ऊंचे मटियाले किनारे से बस दस कदम ही दूर होगी.

किनारे के पास ही एक नौका बंधी थी. दूसरे किनारे पर लगता था जैसे झाग के सांप रेंग रहे हों. जो कभी दिप जाते थे और कभी बुझ जाते थे. यह पिछले वर्ष की घास थी, जो जल रही थी. और इन अग्नि-सर्पों के पीछे फिर अंधियारा छा गया था.

"तुम्हें इसकी आदत पड़ जायेगी," ज्ञानी ने हंसकर कहा. "तुम अभी जवान हो, इसलिए मूर्ख भी हो. यह सोचना तुम्हारी मूर्खता है कि तुमसे अधिक अभागा और कोई नहीं है. देखना, एक दिन तुम ही कहोगे, भगवान ऐसी जिंदगी सबको दे! अब मुझे ही देखो, एक सप्ताह में नदी खुल जायेगी; तब हम छोटी नौकाएं भी चलाना शुरू कर देंगे और तुम सब साइबेरिया घूमने चल दोगे, जबकि मैं यहीं एक किनारे से दूसरे किनारे तक नौका खेता रहूंगा, जैसा कि मैं पिछले बाइस वर्षों से करता रहा हूं. पानी में मछलियों तथा धरती पर मेरे सिवा यहां और कोई न होगा. भगवान की कृपा से मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है. मैं तो कहता हूं, भगवान सबको ऐसी जिंदगी दे!"

तातारी ने आग में और लकड़ियां डाल दीं. उसके और पास सिमटकर बैठ गया. उसने कहा, "मेरे पिता बीमार हैं. उनकी मौत के बाद मेरी मां और पत्नी मेरे पास आ जायेंगी, उन्होंने मुझसे ऐसा वादा किया है."

"मां और पत्नी की तुम्हें क्या आवश्यकता है?" ज्ञानी ने पूछा, "यही तो तुम्हारी गलती है भाई, यह सब विचार शैतान ने ही तुम्हारे मस्तिष्क में भरे होंगे. तुम उसकी बात सुनो भी मत. अगर वह तुमसे औरतों की बात करे तो कहो कि तुमको नहीं चाहिए, न बाप, न मां, न बीवी, न स्वतंत्रता, न घर, न गृहस्थी, भाड़ में जायें ये सब, तुम्हें इनमें से कुछ भी नहीं चाहिए." ज्ञानी ने बोतल से एक घूंट भरकर अपनी बात जारी रखी, "मैं कोई साधारण किसान नहीं हूं भाई, मेरे पिता उपयाजक थे. तब मैं स्वतंत्र था और कुरेक में रहता था. फ्रॉक-कोट पहनकर निकला करता था, और आज मेरी हालत यह है कि मैं नंगी जमीन पर बिना कपड़ों के सो सकता हूं और जरूरत पड़े तो घास भी खा सकता हूं. भगवान सबको ऐसी जिंदगी दे! अब मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं किसी से नहीं डरता, और मुझे पता है कि मुझसे अधिक धनी या स्वतंत्र व्यक्ति इस पूरे संसार में नहीं है. जब उन लोगों ने मुझे रूस से यहां भेजा था, तभी मैंने तय कर लिया था कि मैं कोई भी इच्छा नहीं रखूंगा. शैतान ने मुझसे भी पत्नी, घर और स्वतंत्रता के विषय में बातें की थीं, लेकिन मैं भी लगातार यही जवाब देता रहा कि मुझे कुछ नहीं चाहिए! जहां शैतान के जरा भी लालच में पड़े कि सदा के लिए डूबे. और इस दलदल से फिर कभी उबरोगे भी नहीं. यही नहीं कि यह लालच हमारे सीधे-सादे किसान भाइयों को ही ले डूबता है, वरन शिक्षित और कुलीन लोग भी इसके शिकार होते हैं. करीब पंद्रह साल पहले रूस से एक भद्रपुरुष को यहां भेजा गया था. वह अपने भाइयों के साथ हिस्सा नहीं बंटाना चाहता था और शायद एक जाली वसीयत को लेकर उसने कुछ बखेड़ा किया था. कुछ लोग कहते थे कि वह कोई राजकुमार या सामंत का पुत्र था, या शायद वह कोई साधारण राज-कर्मचारी ही रहा हो. कुछ भी हो, वह यहां आया और उसने सबसे पहला काम यह किया कि अपने लिए एक घर और कुछ जमीन मिहोरतिर्फ्क में खरीदकर कहा, "मैं अपने गाढ़े पसीने की कमाई पर जीना चाहता हूं. अब मैं कोई भद्रपुरुष नहीं हूं, महज एक उपनिवेशी हूं."

"अच्छा है, भगवान तुम्हारी मदद करे." मैंने कहा था.

"तब वह एक युवक था और उसे नुक्ताचीनी और परेशानी में मजा आता था. वह स्वयं अपनी खेती और मछली पकड़ने का काम करता था और घोड़े पर साठ-साठ मील की यात्राएं करना तो उसके बायें हाथ का खेल था. पहले ही वर्ष से वह गिरिनो में पोस्ट आफिस में बार-बार जाने लगा था. वह मेरी नाव पर चढ़कर उसांस भरता और कहता, "ओह, सिमोन! यह लोग घर से पैसा भेजने में इतनी देर क्यों लगा देते हैं?" "तुम्हें पैसे की आवश्यकता ही नहीं है वैसिली सेर्गियेविच!" मैं कहता, "क्या करोगे पैसे का? अपना अतीत भूल जाओ, भूल जाओ कि वह सब कभी था भी, और नये सिरे से जीवन शुरू करो. शैतान के बहकावे में मत आओ." मैंने उसे सावधान किया था.

"मैं उससे इसी तरह की बातें किया करता... एक या दो साल बाद मैं फिर उसे उस पार ले जा रहा था. वह हंस रहा था और अपने हाथ मल रहा था." "मैं अपनी पत्नी को लेने गिरिनो जा रहा हूं. उसे मुझपर तरस आ गया है और वह यहां आ रही है. वह अच्छी और दयालु है!" उसकी खुशी फूटी पड़ रही थी.

▣

"दो दिन बाद वह अपनी पत्नी के साथ वापस आया. हैट लगाये सुंदर युवती, जिसकी गोद में एक छोटी-सी बच्ची थी."

"खैर, भाई सिमोन, उसने मुझसे कहा, "साइबेरिया की जिंदगी भी बहुत बुरी नहीं है."

तुम सदा ही ऐसा नहीं सोचोगे, मैंने अपने आप से कहा. उसके बाद वह हर सप्ताह गिरिनो जाया करता, यह देखने कि रूस से पैसा आया कि नहीं. अब उसे पैसा ही पैसा चाहिए था. उसने मुझसे कहा, "मेरी ही वजह से वह साइबेरिया में अपना रूप और यौवन नष्ट कर रही है और मेरे दुखी जीवन में सहयोगी बन रही है. बदले में मैं उसे जो भी सुख दे सकता हूं, वह तो कम से कम मुझे देना ही चाहिए." उसके जीवन काल को उल्लासमय बनाने के लिए उसने ऑफिसरों और हर प्रकार के लोगों से मित्रता की और इन सब मित्रों को खाना और शराब तो फिर चाहिए ही थी. एक प्यानो भी आया. एक शब्द में कहें तो विलासिता और फिजूलखर्ची. लेकिन वह महिला बहुत दिन उसके साथ नहीं रही. कैसे रहती भला? हर जगह कीचड़ और पानी, ऊपर से ठंड, फिर न खाने को फल, न सब्जियां. दूसरे लोग अनपढ़, शराबी और गंवार. ज़ाहिर था कि वह ऊबती, वह एक शहरी जीवन की आदी महिला जो ठहरी. और फिर उसका पति भी तो अब कोई भद्रपुरुष न होकर महज एक उपनिवेशी भर रह गया था, जो तनिक भी सम्मानपूर्ण नहीं था.

तीन साल बीत गये. अंगीकार की पूर्व संध्या थी, यह मुझे ठीक से याद है कि मैंने किसी को उस किनारे से पुकारते सुना. मैं नाव खेकर उधर गया, वहां वह महिला मुंह-सिर लपेटे खड़ी थी और साथ में एक युवक था, जो ऑफिसरों में से ही एक था. उसके साथ में तीन घोड़ोंवाली गाड़ी भी थी. मैंने उनको उस पार पहुंचाया, वह उस गाड़ी में बैठे और चले गये.

अगले दिन वैसिली सेर्गियेविच बहुत तेज घोड़ा दौड़ाता हुआ आया, "सिमोन, क्या मेरी पत्नी ने किसी चश्मे वाले के साथ नदी पार की है?" उसने पूछा.

"हां," मैंने कहा, "लेकिन उन्हें पाना अब हवा को कैद कर लेने जैसा है."

वह पांच दिन तक उनका पीछा करता रहा. जब वह वापस आया तो नाव में गिर पड़ा और अपना सिर फोड़ने लगा.

"साइबेरिया की जिंदगी भी बहुत बुरी नहीं है!" मैंने उसे मुस्कराकर याद दिलाया, लेकिन वह रोता ही रहा. उसके बाद वह स्वतंत्र होने की चेष्टा करने लगा. उसकी पत्नी रूस लौट गयी थी और वह उससे मिलकर उसे मनाकर वापस लाना चाहता था. उस दिन से उसका सारा समय पोस्ट ऑफिस और शहर के अधिकारियों के बीच आने-जाने में बीतने लगा. वह एक के बाद एक अर्जी भेजता था, जिनमें यही प्रार्थना होती थी कि उसे रूस वापस लौटने दिया जाये. एक तार करने में ही उसके सौ रूबल खर्च हो जाते थे. उसने अपनी जमीन बेच दी, घर यहूदियों के पास गिरवी रख दिया. उसके बाल सफेद हो गये, कंधे झुक गये, और चेहरा क्षय के रोगी जैसा पीला पड़ गया.

इस तरह उसने आठ साल काटे और यह सब भूलकर फिर से जीवन में रुचि लेने लगा. उसे एक नया आधार मिल गया था. उसकी बेटी बड़ी हो रही थी. वह उस पर जान छिड़कता था. वैसे सच कहूं तो वह थी भी देखने में अच्छी—सुंदर, काली भवों वाली, तेज-तर्रार. हर रविवार को वह उसे गिरिनो के गिरजाघर ले जाता था. नाव में वह साथ-साथ खड़े होते. "हां, सिमोन, साइबेरिया की जिंदगी भी बहुत बुरी नहीं है. साइबेरिया में भी आदमी खुश रह सकता है. मेरी बेटी कितनी सुंदर है! हजार मील तक तो इतनी सुंदर लड़की मिलेगी नहीं."

"हां, सुंदर तो सचमुच है." मैंने उससे कहा, "लेकिन अपने मन में मैंने सोचा, जरा देखते रहो... .वह जवान हो रही है और उसका खून भी गर्म होगा, वह भी जीना चाहेगी, और यहां भला कोई जिंदगी है उसके लायक?"

खैर भाई, वह लड़की उदास रहने लगी. वह बीमार और निरुत्साही हो गयी और अब तो यह हाल है कि वह खड़ी भी नहीं हो सकती. कहते हैं, उसे क्षय हो गया है. तो यह है साइबेरियायी खुशी. लोग ऐसे रहते हैं साइबेरिया में. अब बाप का काम है डाक्टरों को तलाशना और उन्हें अपनी बेटी को दिखाने लाना. उसे किसी डॉक्टर या नीम-हकीम का पता भर चलना चाहिए, फिर चाहे उसे दो-तीन सौ मील भी क्यों न जाना पड़े.

मैं बता नहीं सकता कि वह कितना पैसा डॉक्टरों पर फूंक चुका है. इससे तो अच्छा होता कि वह उस सब की शराब पी लेता. वह तो हर हाल में मरेगी ही, उसे अब कोई बचा नहीं सकता. और तब यह पूरी तरह बरबाद हो जायेगा. या तो यह निराशा में फांसी लगा लेगा या रूस भागने की कोशिश करेगा. अगर भागेगा तो वे लोग निश्चय ही उसे पकड़ लेंगे, फिर मुकद्दमा चलेगा, सजा होगी और शायद फांसी भी.

"पत्नी, बेटी, निराशा या बगैर कारावास से क्या होता है. यदि उसके पास उसकी पत्नी और बेटी थी? तुम कहते हो, आदमी को कोई इच्छा नहीं रखनी चाहिए."

और वह फिर अपनी सुंदर और चतुर पत्नी की बात करने लगा, जिसे वह घर छोड़ आया था. यहां तक की वह अपना मुंह हाथों में छिपाकर फूट-फूटकर रोने लगा. वह सिमोन को विश्वास दिलाने लगा कि वह बेकसूर है और उसे गलत सजा हुई है. उसके भाइयों और चाचा ने ही उस आदमी के घोड़े चुराये थे और बूढ़े आदमी को अधमरा कर दिया था. उसे व्यर्थ ही दोषी ठहराया गया. तीनों भाइयों को साइबेरिया भेज दिया गया, जब कि अमीर चाचा घर पर बैठा है.

"तुम्हें इस सबकी आदत पड़ जायेगी." सिमोन ने कहा.

तातारी कुछ बोला नहीं, लेकिन आंसू भरी आंखों से आग को देखता रहा. उसके चेहरे पर परेशान और सताये हुए व्यक्ति

का-सा भाव था, जो समझ नहीं पा रहा हो कि वह सिबर्सक के अपने घरवालों से दूर यहां ठंड और अंधेरे में अजनबियों के बीच क्योंकर है?

पिता के पास उसे क्या सुख मिल सकता था? थोड़ी देर बाद उसने फिर कहा. बेटी उसके लिए एक सहारा है और वह उसे प्यार भी करता है, यह सच है, लेकिन वह एक झुर्रीदार सख्त चेहरे वाला बूढ़ा है, उसके साथ रहना क्या कोई आसान होता होगा. और एक किशोरी तो कठोरता बिल्कुल नहीं चाहती. वह तो चुंबन चाहती है हा हा हा! इत्र और फुलेल. . हां, भई, कोई आसान बात नहीं है यह!

▣

अकेले बैठे तातारी ने आग में और लकड़ियां डाल दीं और लपटों को देखता हुआ अपने गांव और पत्नी के विषय में सोचने लगा. अगर वह उसके पास एक महीने क्या, एक दिन के लिए भी आ जाये तो वह उसके वापस जाने का दुख नहीं करेगा. खुशी का एक महीना या एक दिन भी, बिल्कुल नहीं से तो अच्छा ही है. मान लो, उसने अपना वादा पूरा किया और आ गयी तो वह उसका निर्वाह कैसे करेगा? वह रहेगी कहां? अगर तुम्हारे पास खाने को ही न हो तो कैसे रह सकते हो? उसने जोर से पूछा. पूरा दिन और रात पतवार चलाने पर उसे सिर्फ दस कोपेक मिलते थे. अलबत्ता कई बार उसे बख्शीश में कुछ अधिक भी मिल जाता था, लेकिन यह सब पैसा मल्लाह इकट्ठा करके आपस में ही बांट लेते थे. तातारी को वह कुछ भी नहीं देते थे.

अब, जबकि ठंड से उसका पूरा शरीर कांप रहा था और एक-एक जोड़ दुख रहा था, उसे कायदे से झोंपड़ी के अंदर सोने चला जाना चाहिए था, लेकिन झोंपड़ी में उसे और भी अधिक ठंड लगती, क्योंकि उसके पास ओढ़ने को कुछ नहीं था. यहां वह पूरी तरह से खुले आकाश में नीचे बैठा था, पर उसके पास आग तो थी. एक सप्ताह में जब पानी नीचे आ जायेगा तो छोटी नौका उपयोग में आने लगेगी और तब यहां सिमोन के अलावा किसी और नाविक की आवश्यकता नहीं रहेगी. तब तातारी को गांव-गांव काम और भोजन की तलाश में भटकना पड़ेगा. उसकी पुत्री अभी सत्रह वर्ष की लजीली सुंदरी है. क्या उसे भी दर-दर भटककर बेशर्मों की तरह रोटी जुटानी पड़ेगी? नहीं, नहीं. ऐसा तो सोचना भी बहुत बुरा लगता है. अब उजाला हो रहा था. नाव, पेड़ और पानी सब स्पष्ट दिख रहे थे. घूमते ही मिट्टी का ढलान दिखाई देता था, जिसके अंतिम छोर पर फूस की छत वाली झोंपड़ी थी, और उसके पीछे दूर तक गांव की झोंपड़ियां. गांव के मुर्गे अभी से बांग देने लगे थे.

"ऐ! इधर नाव लाओ." दूसरे किनारे से किसी ने पुकारा.

तातारी चौंककर जागा और अपने साथियों को बुलाने चला गया. फटे कोट अपने शरीर पर खींचते और भारी उनींदी आवाजों में गाली बकते नाविक तेजी से किनारे की ओर चले. दूसरे किनारे से चिल्लाना जारी था और दो बार रिवाल्वर चलाये जाने की आवाज भी आयी. जो भी कोई उधर था, उसे यही लग रहा था कि मल्लाह या तो सो रहे हैं या गांव के शराबखाने में चले गये हैं.

बड़ी नौका किनारा छोड़ चुकी थी और विलो की लटकी हुई शाखों के बीच धीरे-धीरे बढ़ रही थी. नाविक नपे-तुले ढंग से पतवार चला रहे थे.

किनारे पर एक दुबला-पतला छोटा-सा आदमी खड़ा था, जिसने लोमड़ी की खाल का छोटा कोट और सफेद मेमने की खाल की टोपी पहन रखी थी. वह अपने घोड़े से कुछ दूर ही शांत खड़ा था. "मैं अनस्तसेवका जा रहा हूं." उसने सिमोन की मुस्कान और सलाम के उत्तर में कहा. "मेरी बेटी की दशा बिगड़ रही है. पता चला है, वहां एक नये डाक्टर की नियुक्ति हुई है."

गाड़ी को खींचकर नौका पर लाया गया और नाविकों ने नाव को वापस खेना शुरू कर दिया. वह व्यक्ति, जिसे सिमोन ने वैसिली सेर्गियेविच कहकर पुकारा था, पूरे समय शांत रहा.

"साइबेरिया की जिंदगी भी बहुत बुरी नहीं है." सिमोन ने विद्वेषपूर्ण ढंग से पतवार चलाते हुए कहा. ज्ञानी के चेहरे पर विजय का भाव था, जैसे कि उसे इस बात की खुशी हो कि जैसी भविष्यवाणी उसने की थी, वैसा ही हुआ. लोमड़ी की खाल का कोट पहने व्यक्ति के चेहरे का दुखी और असहाय भाव उसे बहुत प्रसन्न कर रहा था. "इस मौसम में सफर करेंगे तो रास्ते में बहुत कीचड़ मिलेगा." जब घोड़े कसे जा रहे थे तो उसने राय जाहिर की, "एक सप्ताह में सब सूख जाता. आपको तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए थी. और उससे भी अच्छा रहे, जाइये ही नहीं. जाने से फायदा ही क्या है? लोग सारा साल इधर से उधर भागते रहते हैं और कोई नतीजा नहीं निकलता. क्या आपको ऐसा नहीं लगता?" वैसिली सेर्गियेविच ने बिना एक भी शब्द बोले नाविकों को बख्शीश दी, गाड़ी में बैठा और चला गया.

तातारी ज्ञानी के पास गया और एक क्षण उसे घृणा और वितृष्णा से देखता रहा. ठंड से कांपते हुए और उत्तेजना में तातारी शब्दों का प्रयोग करते हुए वह उबल पड़ा, "वह एक भला आदमी है, भला! और तुम दुष्ट हो, दुष्ट! उसकी आत्मा शुद्ध है और तुम महज एक जानवर हो! एक दुष्ट जानवर!"

वह सब हंसने लगे और तातारी निराश होकर अपने चिथड़े और कसकर लपेटे झोंपड़ी की ओर बढ़ गया.

"बहुत ठंड है." एक नाविक ने भारी स्वर में ठंडे सीले फर्श पर बिछी पुआल पर लेटते हुए कहा.

"ठंड तो है ही!" दूसरे ने सहमति प्रकट की. "यही तो एक कैदी का जीवन है!"

सब लेट गये. हवा से दरवाजा खुल गया और बर्फ अंदर आने लगी. किसी की इच्छा नहीं थी कि उठकर उसे बंद करे. उन सब को ठंड और आलस घेरे था. "मैं बिल्कुल ठीक हूं. सिमोन ने ऊंघते हुए कहा, भगवान सबको ऐसी ही जिंदगी दे!"

"तुम को तो सात बार कैदी बनना चाहिए, शैतान भी तुम्हें नहीं लेना चाहेगा!" बाहर से कुत्ते के रोने जैसा स्वर आया.

"यह क्या है? वहां कौन है?"

"वही तातारी है, रो रहा है. कैसा मूर्ख है?"

"आदत पड़ जायेगी थोड़े दिनों में!" सिमोन ने कहा और सो गया. बाकी ने भी यही किया. दरवाजा खुला रहा. □

रूपांतर : सुदर्शना द्विवेदी.

चेखव की कहानियां : चार

अपनी मां का इकलौता बेटा साशा स्मिर्नोव डा. कोशेल्कोव के कार्यालय में घुसा. उसकी कांख के नीचे कुछ दबा हुआ था जो बाडर्स गजेट के 223वें अंक में लपेटा गया था.

"आओ, प्यारे बच्चे!" डा. ने उसका स्वागत किया. "क्या हालचाल है? कोई खबर?"

"मैं अपनी मां का इकलौता बेटा हूं," साशा ने कहना शुरू किया, "हम बहुत गरीब लोग हैं, आपने मेरी जान बचायी है पर आपकी सेवाओं के बदले हम आपको कुछ दे भी नहीं सकते, इस बात का हमें दुख है. हमारा अंतःकरण भी बेचैन है डाक्टर. हम, याने मैं और मेरी मां—जिसका मैं इकलौता बेटा हूं—आपसे निवेदन करते हैं कि हमारे आदर और श्रद्धा के रूप में आप यह वस्तु—जो अनमोल है, यह प्राचीन काल की कांसे की एक कलाकृति—स्वीकार करें."

"इसकी कोई जरूरत नहीं थी." डाक्टर स्वर में थोड़ा नाराजगी प्रकट करता हुआ बोला. "अब इसकी क्या जरूरत है?"

चित्रांकन : हरिप्रकाश त्यागी

"नहीं, लेकिन आपको इनकार नहीं करना चाहिए," साशा उसी तरह बुदबुदाता रहा और साथ ही पैकेट को खोलता रहा. "आप इनकार करके मुझ पर और मेरी मां पर बहुत बड़ा अत्याचार करेंगे. यह एक अच्छी चीज है—कांसे की प्राचीन कलाकृति. यह मेरे स्वर्गीय पिता की निशानी है जिसे हमने अपने प्रिय पारिवारिक चिह्न की तरह रखा है. मेरे पिता कांसे की प्राचीन चीजों का व्यवसाय करते थे. आप तो जानते ही हैं, जब भी मौका मिलता, वे ऐसी चीजें खरीद लेते और फिर उन्हें कला-प्रेमियों को बेच देते. अब हम लोग भी यही व्यवसाय कर रहे हैं."

▣

साशा ने लिपटे हुए कागज से उस वस्तु को बाहर निकाला और बड़ी निष्ठा के साथ मेज पर रख दिया. यह पुराने कांसे का एक छोटा-सा दीपाधार था जिस पर बेहद कलात्मक नक्काशी की गयी थी. इसकी पीठिका पर हव्वा जैसे वेष में दो नारी आकृतियां थीं. ये आकृतियां एक अश्लील अदा के साथ मुस्करा रही थीं और कुल मिलाकर ऐसा आभास होता था कि अगर उन्हें मोमबत्ती रखने के लिए अच्छी तरह से न जोड़ा गया होता तो वे दीपाधार से कूदकर आ निकलतीं और कमरे में रंगरेलियों का एक ऐसा समां बांधतीं कि, पाठक महोदय, दृश्य की कल्पना से ही आपका चेहरा लाल हो जाता और आप शरमा जाते.

अपने उपहार को देखने के बाद डाक्टर ने अपने कान को कुरेदा, भीतर ही भीतर हंसा और उस हंसी को अपनी नाक से निकाला :

"हां, वाकई बहुत सुंदर है," उसने कहा, "लेकिन अब मैं तुम्हें क्या बताऊं. . .बात यह है कि. . .तुम जानते हो कि मेरा मतलब है. . . यह उचित नहीं है. . . यह कोई अच्छी बात नहीं है, लेकिन ईश्वर ही जानता है. . . ऐसी चीज को मेज पर रखने का मतलब है पूरे घर को ही अपवित्र करना!"

"आप कलात्मक वस्तु को इस तरह से देखते हैं डाक्टर!" साशा के स्वर में आहत भाव था, "यह तो एक उत्कृष्ट कलाकृति है! जरा इसे नजदीक से तो देखिए, इसका सौंदर्य इतना संवेदनपूर्ण है कि हृदय श्रद्धा से अभिभूत हो जाता है. कितनी आभा है! क्या मुद्रा है!"

"यह मैं अच्छी तरह समझता हूं, बच्चे," डाक्टर ने उसे बीच में ही टोक दिया, "पर मैं परिवार के साथ रहता हूं. औरतें और बच्चे इधर आते रहते हैं. . ."

"यह तो ठीक है कि अगर कोई इसे साधारण आदमी की नजर से देखेगा तो," साशा कह रहा था, "यह उच्च स्तरीय कलाकृति उसे दूसरी तरह की दिखाई देगी. लेकिन डाक्टर, आपको साधारण आदमी से ऊंचा होना चाहिए, फिर भी आपके इस इनकार से मुझे और मेरी मां को—जिसका मैं इकलौता बेटा हूं और मेरी जान आपने बचायी है—बहुत दुख होगा."

"धन्यवाद, प्यारे बेटे. मैं बहुत आभारी हूं. . .तुम भी मेरी ओर से अपनी मां को अभिवादन कहना. यह वाकई मेरे लिए एक सम्मान की बात है! लेकिन खुद सोचो—मेरे बच्चे इन

कमरों में उछल-कूद मचाते रहते हैं और औरतें भी अक्सर इधर आती हैं. . . .पर ठीक है, इसे यहीं रहने दो! निराश होने की कोई बात नहीं है."

"लेकिन निराशा की तो कोई बात है ही नहीं," साशा ने खुशी से झूमते हुए कहा, "दीपाधार को जरा इस कलश के पास रखिये. लेकिन कितनी बुरी बात है कि इसका जोड़ा नहीं है. कितनी खेद की बात है! अच्छा, नमस्कार डाक्टर!"

साशा के जाने के बाद काफी देर तक डाक्टर दीपाधार को घूरता रहा, अपने कान खुजाते हुए वह सोचने लगा :

"यह दीपाधार कलात्मकता का एक अदभुत नमूना है—इस बात से तो इनकार नहीं किया जा सकता. इसे फेंक देना कितनी बुरी बात होगी. पर इसे यहां रखना भी असंभव है! ओह! क्या समस्या है! किसी को भेंट कर दूं इसे?"

काफी देर तक सोचने के बाद अचानक उसे अपने एक अच्छे दोस्त की याद आ गयी. वकील उखोव, एक मुकद्दमे के दौरान उसने डाक्टर के लिए काफी काम किया था और डाक्टर उसका अहसानमंद था.

"कितना अच्छा विचार है," डाक्टर ने फैसला कर लिया, "इतनी अच्छी दोस्ती है हमारी. वह तो मुझसे पैसे लेगा ही नहीं इसलिए मेरे लिए उचित यही होगा कि मैं उसे कोई भेंट दूं. मैं खुद ही जाकर उसे यह दे आऊंगा. संयोग से वह अविवाहित है और बहुत परेशान रहता है."

▣

और इससे पहले कि उसके विचार-बीज के अंकुर फूटते, डाक्टर कपड़े बदलकर तैयार हो गया और दीपाधार को लेकर उखोव के घर की तरफ चल पड़ा.

"कैसे हो दोस्त?" उसने वकील का अभिवादन किया. उसे घर में पाकर डाक्टर को खुशी हुई थी. "मैं तुम्हें धन्यवाद देने के लिए आया हूं. तुमने मेरे लिए इतना कष्ट उठाया. मैं जानता हूं कि इसके बदले तुम मुझसे पैसा तो लोगे नहीं, लेकिन तुम्हें मेरी ओर से यह भेंट अवश्य स्वीकार कर लेनी चाहिए—मेरे भाई, यह एक कलाकृति है, असली रत्न!"

उस दीपाधार को देखते ही वकील खुशी से उछल पड़ा.

"ओह, कितना प्यारा है!" वह हंसा, "शैतान चाहे जो कुछ ले जाये, लोग नयी चीज खोज ही लेते हैं! कितना अदभुत है! कितना मजेदार! सुंदरता का यह नमूना तुम्हें कहां से मिला?"

अपने दिल की गहराइयों से उस दीपाधार की प्रशंसा करने और अपने हर्षोल्लास को प्रकट करने के बाद उसने आशंकित दृष्टि दरवाजे पर डाली और कहा :

"लेकिन मेरे दोस्त, यह चीज तुम्हें वापस ले जानी पड़ेगी. मैं इसे स्वीकार नहीं कर पाऊंगा."

"क्यों?" डाक्टर ने घबराकर पूछा.

"क्योंकि—कभी-कभी मेरी मां मुझसे मिलने यहां आती है, ग्राहक भी आते रहते हैं—इसके अलावा मैं यह भी नहीं चाहूंगा कि मेरे नौकर—"

"नहीं, नहीं, मेरी भेंट स्वीकार करने से तुम्हें इनकार नहीं करना चाहिए!" डाक्टर ने अपने हाथ नचाये. "मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुनूंगा! यह तो एक कलाकृति है! देखो इसमें कितनी अनुभूतियां और अभिव्यक्तियां हैं! मैं तुम्हारा कोई बहाना नहीं सुनूंगा! वरना मैं नाराज हो जाऊंगा!" और कहने के साथ ही डाक्टर उखोव के घर से लगभग भागता हुआ बाहर निकल गया. वह खुश था कि अवांछनीय भेंट से उसे मुक्ति मिल गयी थी.

▣

डाक्टर के चले जाने के बाद वकील ने उस दीपाधार को बड़े ध्यान से और हर तरफ से देखा. उसे उंगलियों से छुआ भी. फिर अपने दिमाग पर जोर डालता हुआ सोचने लगा कि इसका किया क्या जाये :

"चीज वाकई बहुत बढ़िया है." उसने सोचा, "इसे फेंक देना बड़ी गलत बात होगी, लेकिन ऐसी चीज घर में भी तो नहीं रखी जा सकती. सबसे अच्छी बात तो यह है कि इसे किसी को भेंट कर दिया जाये. आज ही शाम को मैं इसे हास्य कलाकार शिश्कोव को दे आऊंगा. वह नालायक ऐसी चीजों को पसंद करता है और सौभाग्य से आज उसकी सहायतार्थ कार्यक्रम भी हो रहा है."

उखोव अपनी बात का पक्का था. उसी शाम दीपाधार को कागज में लपेटकर और साथ में काफी फूल लेकर हास्य कलाकार के पास जा पहुंचा. पूरी शाम उस कलाकार के ड्रेसिंग रूम में आगंतुकों का तांता बंधा रहा और वे उस भेंट की तारीफ करते रहे.

कार्यक्रम के बाद हास्य कलाकार ने अपने कंधे उचकाये, हाथों को झटकते हुए तीखे स्वर में बोला :

"अब मैं ऐसी चीजों का क्या करूंगा? मैं एक परिवार में रहता हूं! अभिनेत्रियां अक्सर मुझसे मिलने के लिए आती हैं! और यह कोई चित्र भी नहीं है जिसे दराज में छिपाकर रखा जा सके!"

"इसके लिए मैं आपको एक सलाह दे सकता हूं सर?" उसके सिर से विग उतारते हुए हेयर ड्रेसर ने कहा, "स्मिर्नोव नाम की एक बूढ़ी औरत है, सभी उसे जानते हैं. वह कांसे की पुरानी चीजों का व्यापार करती है. मैं यह उसे बेच दूंगा."

▣

कोई दो दिन बाद डाक्टर कोशेल्कोव अपनी बैठक में बैठे थे और अपनी उंगलियों को माथे पर फेरते हुए पित्त दोष के बारे में सोच रहे थे. अचानक दरवाजा खुला और साशा स्मिर्नोव लपकता हुआ भीतर आ गया. वह मुस्कराया. वह पसीने-पसीने हो रहा था. उसके हाथ में अखबार में लिपटी कोई चीज थी.

"डाक्टर!" उसने हांफते हुए कहा, "जरा मेरी खुशी का अंदाज लगायें? आपका भाग्य ही था कि आपके दीपाधार का जोड़ा हमें मिल गया! मेरी मां खुश है! मैं अपनी मां का अकेला बेटा हूं और आपने मेरी जान बचायी है!"

कृतज्ञता से अभिभूत साशा ने वह दीपाधार डाक्टर के सामने रख दिया. डाक्टर का मुंह खुल गया. वह कुछ कहना चाहता था लेकिन एक भी शब्द उसके मुंह से निकल न सका. वह अपनी जीभ का प्रयोग करना ही भूल गया था. □

रूपांतर : सु. उ.

चेखव की कहानियां : पांच

चित्रांकन : हरिप्रकाश त्यागी

जैसे ही फेदोर सेगएव को पता चला कि उसकी पत्नी उसके प्रति वफादार नहीं रही. उसने खुद से ही बदला लेने का फैसला कर लिया. इसके लिए वह 'श्मक्स एंड कंपनी' की दूकान पर गया. ये लोग हर प्रकार के अग्नेयास्त्र बेचते थे. वहां जाकर उसने एक अच्छा रिवाल्वर दिखाने के लिए कहा. उसके चेहरे पर गुस्सा, दुख और निर्णय की दृढ़ता झलक रही थी.

"मैं जानता हूं कि मैं क्या करने जा रहा हूं," उसने सोचा, "मेरी इज्जत को उन्होंने मिट्टी में मिला दिया है. परिवार की पवित्रता को नष्ट करके दुष्टता विजयोल्लास मना रही है. . . इसलिए एक अच्छे नागरिक और ईमानदार व्यक्ति होने के नाते मुझे इसका प्रतिशोध लेना चाहिए. पहले तो मैं अपनी बीबी को मार डालूंगा, फिर उसके प्रेमी को और फिर खुद को. . ."

अभी तक उसने न तो कोई रिवाल्वर ही कभी खरीदा था और न किसी को गोली मारी थी. पर उसकी कल्पना ने दृश्य साकार कर दिया. वे—तीन लाशें, लोगों की भीड़ और जांच-पड़ताल के दृश्य. यहां तक कि उसकी कल्पना की आंखें अखबारों की बड़ी-बड़ी सुर्खियों और संपादकीयों को भी देखने लगीं जिनमें एक परिवार के खत्म होने की कहानी थी.

दूकानदार एक नाटा और चुस्त व्यक्ति था. उसकी तोंद निकली हुई थी और वह सफेद वास्केट में था. उसने फुर्ती से उसके सामने काउंटर पर कई सारे रिवाल्वर निकाल कर रख दिये. अपने होंठों पर भेदभरी मुस्कान भरकर अपने पांव से जमीन कुरेदता हुआ कहने लगा :

"अगर आप मेरी सलाह मानें सर, तो मैं कहूंगा कि आप यह शानदार रिवाल्वर ले लें. स्मिथ-वैसन का यह बिल्कुल नया मेक है. अग्नेयास्त्रों में यह सबसे नयी चीज है. इसमें गोलियों के लिए छः खाने हैं और एक्सट्रेक्टर भी है. और जरा इसकी कारीगरी पर भी नजर डालिए, कितना सुंदर है, यह बिल्कुल नयी चीज है, सर. हत्यारों और भेड़ियों से बचाव के लिए, पारिवारिक खुशियां बिगाड़ने वालों को पाठ पढ़ाने के लिए लोग हमसे रोजाना दर्जनों खरीदकर ले जाते हैं. इसकी गोली पक्के तौर पर और बहुत जोर से वार करती है, दूरी कितनी भी हो, इसकी गोली वहां पहुंच जाती है. यह बेवफा बीवी और उनके प्रेमी को एकदम खत्म कर देता है. जहां तक आत्महत्या का सवाल है, उसके लिए तो इससे बढ़िया मेक मैंने नहीं देखा. . . ."

उसने उस रिवाल्वर को नीचे झुकाया, फिर खटके पर उंगली रखते हुए, उसे उठाते हुए निशाना साधा. और इतने प्यार से यह सब काम उसने किया कि लगता था जैसे अपने उत्साह को वह रोक ही न पा रहा हो. खुशी से फूले हुए उसके चेहरे को देखकर कोई भी यह अनुमान लगा सकता था कि यदि उसके पास स्मिथ-वैसन की इतनी सुंदर कारीगरी का अपना रिवाल्वर होता तो वह खुशी से एक गोली अपनी खोपड़ी के आर-पार जरूर कर देता.

"इसकी कीमत क्या है?" सेगएव ने पूछा.

"पैंतालीस रूबल."

"ओ. . ह, बहुत मंहगा है!"

"अगर ऐसी बात है तो मैं आपको एक दूसरा मेक दिखाता हूं. वह कुछ सस्ता है. हमारे पास अलग-अलग कीमतों के कई मेक रखे हैं. अब मैं आपको दिखाता हूं. यह रिवाल्वर फ्रांस का बना हुआ है. इसकी कीमत है सिर्फ अठारह रूबल, पर (ग्राहक के चेहरे पर अवहेलना के भाव देखते हुए) यह काफी पुराने फैशन का हो गया है. इसे तो सिर्फ कुछ समझदार मजदूर और औरतों के पीछे लगने वाले सनकी लोग ही खरीदते हैं. ऐसे रिवाल्वरों से आत्महत्या करना या अपनी बीवी को कत्ल करना तो अब गंवारूपन माना जाता है. सभ्य संसार तो सिर्फ स्मिथ-वैसन की बात करता है."

"मैं न तो किसी को मारने की सोच रहा हूं और न आत्महत्या ही कर रहा हूं. मुझे तो अपनी समर कॉटेज से चोरों को डराकर भगाने के लिए एक रिवाल्वर चाहिए." सेगएव ने झूठ-मूठ कह दिया.

"इस बात से हमें कोई मतलब नहीं है कि आप रिवाल्वर क्यों खरीद रहे हैं." उस आदमी ने नम्रतापूर्वक अपनी आंखें झुकाते हुए कहा, "अगर हम सभी लोगों से कारण जानना चाहें सर, तो हमारी दूकान ही बंद हो जायेगी. चोरों को भगाने के लिए यह रिवाल्वर ठीक नहीं रहेगा क्योंकि इससे बहुत अस्पष्ट और धीमी आवाज निकलती है. इसके लिए तो मैं आपको वही रिवाल्वर खरीदने की सलाह दूंगा जो इस तरह के कामों में प्रयोग किया जाता है—मोर्टाइमर पिस्टल, इसे लोग 'ड्युएलिंग पिस्टल' के नाम से ज्यादा जानते हैं."

"उसे अगर ड्युएल के चुनौती दूं तो कैसा रहे?" सेगएव के दिमाग में एक विचार कौंधा. "पर नहीं, इतना सम्मान तो मैं उसे नहीं दूंगा. उसे तो पागल कुत्ते की मौत मारा जाना चाहिए."

उस आदमी ने दिलचस्पी से इधर-उधर घूमते हुए और अपने पांव को जमीन पर खुरचते हुए, लगातार मुस्कराते और बतियाते हुए उसके सामने रिवाल्वरों का एक ढेर ही लगा दिया. पर सेगएव को औरों के मुकाबले स्मिथ-वैसन ही अपने मतलब का ज्यादा लगा. उसने एक रिवाल्वर को अपने हाथ में लिया और विचारों में खो गया. अपनी कल्पना में वह देखने लगा कि कैसे वह

उनके सिर पर गोली चलायेगा और फिर घाव में से खून का फव्वारा निकलकर कालीन और लकड़ी के फर्श को भिगो देगा और किस तरह वह मरती हुई विश्वासघातिनी तड़पती हुई मौत की यंत्रणा झेलेगी.

"पर इससे बात बनेगी नहीं," उसने सोचा, "अच्छा तो यह होगा कि मैं उसके प्रेमी को और खुद को खत्म कर दूं और उसे छोड़ दूं. वह जिये, और जीवन भर पश्चाताप की दर्द भरी टीस उसे सालती रहे, जो भी उसे मिले वही उसकी निंदा करे. उसकी तरह की अधीर और संवेदनशील किस्म की औरत के लिए यह मौत से भी बुरा होगा."

अपनी अंत्येष्टि का दृश्य भी उसकी आंखों के सामने आ गया. होंठों पर नम्र मुस्कान लिये कफन में लेटा हुआ वह खुद, और बीवी, पश्चाताप से पीली पड़ी हुई, थकी-थकी-सी, शोक की जीती-जागती मूर्ति की तरह अंत्येष्टि कक्ष की ओर जाती हुई और आसपास के लोगों की घृणाभरी नजरों से बचने का निष्फल-सा प्रयास करती हुई.

▣

"मैं समझता हूं सर, कि आपको स्मिथ-वैसन ही सबसे अधिक पसंद है," क्लर्क ने अचानक उसे सपनों से जगा दिया, "अगर आपको कीमत अधिक लग रही है हो तो मैं पांच रूबल कम कर दूंगा. इसके अलावा हमारे पास और भी मेक हैं जो थोड़ा सस्ते भी हैं."

वह नाटा आदमी बड़ी दिलचस्पी से अलमारियों की ओर घूमा और एक दर्जन और रिवाल्वर निकाल लिये.

"ये तीस रूबल का है. अब देखिये न, दिन-ब-दिन हमारी मुद्रा का अवमूल्यन हो रहा है और विदेशी मेकों पर आयात शुल्क इतना बढ़ रहा है. उस हिसाब से यह महंगा नहीं है. स्वभाव से मैं बहुत संतुलित आदमी हूं पर देश की इस हालत से तो मैं भी झुंझला जाता हूं. आप खुद ही सोचिये सर, हालत यह हो गयी है कि सिर्फ अमीर आदमी ही एक अच्छा रिवाल्वर रखने की अय्याशी कर सकता है! गरीब लोगों को तो सस्ते रूसी मेकों से ही काम चलाना पड़ता है, जैसे तुला में बने हुए. इन तुला मेकों को तो मैं दुर्भाग्य ही कहूंगा. इनसे अगर आप अपनी पत्नी पर गोली चलायेंगे तो खुद अपना ही कंधा घायल कर बैठेंगे."

सेगएव यह सोचकर अचानक दुखी हो गया कि उस बेवफा के कष्टों को देखने के लिए वह खुद जीवित न होगा. प्रतिशोध तभी सार्थक होता है जब दुश्मन के कष्टों को खुद देखकर अपनी आंखें सेकी जा सकें. इस प्रतिशोध से उसे क्या मिलेगा? खुद तो वह कब्र में लेटा होगा और उसकी तबाही को देख ही नहीं पायेगा.

"क्या यह ठीक रहेगा," उसने सोचा, "कि वह उसके प्रेमी को पहले मार डाले, उसकी अंत्येष्टि पर रहे और बाद में खुद को भी खत्म कर दे? पर मुझे तो पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर लेगी और मेरा रिवाल्वर मुझसे छिन चुका होगा . . इसलिए : उसे (प्रेमी को) मैं पहले मार डालूंगा, उसे (बीवी को) छोड़ दूंगा और खुद—खुद पहले आत्महत्या न करके, अपने को गिरफ्तार करवा लूंगा. आत्महत्या करने के लिए तो काफी समय मिल जायेगा. सजा होने से पहले मुझे ज्यूरी और पूरे समाज के सामने उसके आचरण की नीचता को रखने का पूरा मौका मिल जायेगा. अगर मैं आत्महत्या करने की बेवकूफी कर बैठा तो वह अपनी निधड़कता, झूठ बोलने की अपनी स्वाभाविक आदत और छल-कपट से अपने आपको निरपराध सिद्ध कर देगी और सारा दोष मेरे सिर पर मढ़ देगी. कौन जाने, लोग उसकी बातों को ही सच मान बैठें और मुझ पर हंसें. और, अगर मैं जिंदा रहा तो . . . मुझे जिंदा ही रहना चाहिए."

एक क्षण बाद उसने फिर सोचा :

"ठीक ही तो है, और फिर अगर मैं अपने को खत्म कर दूं तो हो सकता है कि लोग मुझे ही दोषी समझें और मान लें कि मैंने क्षणिक आवेश में आकर यह कदम उठाया है. और, वाकई, मैं अपने को क्यों खत्म करूं? इसके अलावा अपने को खत्म करने का मतलब है अपने को डरपोक सिद्ध करना. इसलिए, मैं उसके प्रेमी को मार डालूंगा और उसे जिंदा रहने दूंगा. जहां तक मेरा सवाल है, मैं गिरफ्तार कर लिया जाऊंगा. मुकद्दमे के दौरान उसे गवाह के रूप में आना पड़ेगा. मैं आसानी से कल्पना कर सकता हूं कि मेरे वकील के प्रश्नों के जवाब में वह सब स्वीकार कर लेगी. और ऐसे में अखबारों और आम जनता की सहानुभूति मेरे ही साथ होगी."

▣

वह सोच रहा था और सेल्समेन उसके सामने अपने सामान को रखते हुए उसकी दिलचस्पी को पूरी तरह से बनाये रखने की कोशिश कर रहा था:

"ये कुछ अंग्रेजी मेक के रिवाल्वर हैं जो कुछ ही दिन पहले हमारे पास आये हैं लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि स्मिथ-वैसन के सामने इनकी भी कोई औकात नहीं है, कुछ दिन पहले—आपने तो अखबारों में पढ़ा ही होगा—एक सैनिक अधिकारी हमसे स्मिथ-वैसन का एक रिवाल्वर खरीदकर ले गया था. उसने अपनी पत्नी के आशिक पर सीधे गोली चला दी—और जानते हैं क्या हुआ?—गोली उसकी छाती की ओर से घुसकर दूसरी ओर निकल गयी और फिर एक पीतल के लैंप को फाड़ती हुई पियानो से टकरायी और इसके बाद छिटककर स्पेनियल कुत्ते को मारती हुई उसकी पत्नी को भी घायल कर गयी. कितना गजब का काम था. इसी बात का गर्व तो है हमारी फर्म को. वह अधिकारी इस समय गिरफ्तार है. बेशक उसके विरुद्ध अपराध सिद्ध हो जायेगा और कई सालों के लिए उसे साइबेरिया की यातना भी भुगतनी पड़ेगी. इसका पहला कारण तो यही है कि हमारे कानून बहुत पुराने जमाने के हैं और दूसरा कारण कि लगभग हर मामले में ज्यूरी आशिकों की कुछ ज्यादा ही पक्षधर होती है. क्यों? क्योंकि जज, ज्यूरी और सरकारी वकील, सभी दसवें धर्मादेश का उल्लंघन करने से घबराते हैं और उन्हें इस बात की कतई फिक्र नहीं है कि रूस से एक पति कम हो जायेगा. जहां तक समाज का सवाल है—मेरा विश्वास है कि उसका और तो कुछ भला नहीं होगा, सिर्फ सारे पति साखालिन के लिए निर्वासित कर दिये जायेंगे. और सर, मेरे दिल में कितना रोष भर आता है जब मैं आज के समय में आचार-व्यवहार की यह

शोचनीय हालत देखता हूं. दूसरों की पत्नियों के साथ प्रेम करना इतना आम क्यों हो गया है, जितना दूसरे का सिगार पी लेना या दूसरे की किताब पढ लेना. हमारा व्यवसाय दिन-ब-दिन कमजोर हो रहा है तो इसका कारण यह नहीं है कि पारिवारिक जीवन में शुद्धता आ गयी है, बल्कि असल बात तो यह है कि पतियों ने अपनी नियति को स्वीकार कर लिया है और वे अदालतों तथा सजाओं से डरते हैं."

क्लर्क ने सावधानी से आसपास देखा और फुसफुसाया, "और इसमें दोष किसका है सर? सिर्फ सरकार का!"

"ऐसे सुअर की हत्या के लिए साइबेरिया जाना कहां की अक्लमंदी है?" सेगएव ने सोचा, "अगर मुझे साइबेरिया भेज दिया गया तो मेरी बीवी फिर से शादी करने के लिए आजाद हो जायेगी ताकि अपने दूसरे पति को भी धोखा दे सके. यह तो उसकी जीत होगी. इसलिए : उसको तो मैं नहीं मारूंगा. खुद को भी नहीं, और उसके प्रेमी को भी नहीं : उससे प्रतिशोध लेने का कोई और तरीका मुझे सोचना चाहिए—जो ज्यादा तर्कसंगत हो और उसके लिए ज्यादा कष्टकर. मैं उनका अपमान करूंगा. उसके खिलाफ तलाक का मुकद्दमा दायर करूंगा. अदालत की कार्यवाहियों में उसकी सारी बदकारियों का भांडा फोड़ दूंगा और इस तरह हमेशा के लिए उसका मुंह काला हो जायेगा."

▣

"देखिये सर, यह एक और मेक है." और एक दर्जन रिवाल्वर नीचे रखता हुआ वह आदमी कह रहा था, "अब जरा इसके ताले के विलक्षण मेकेनिज्म की तरफ ध्यान दीजिए."

अपने इस निर्णय के बाद सेगएव को अब रिवाल्वर की की जरूरत नहीं थी और अब उसकी इच्छा दूकान से बाहर निकल आने की थी. इधर सेल्समेन ज्यादा ही उत्साही नजर आने लगा था और अपना माल दिखाते-दिखाते वह जरा भी नहीं थका था.

बेचारे सेल्समेन को अपने माल को दिखाते हुए, मुस्कराते हुए, घूमते हुए, पांवों से जमीन को खुरचते हुए और अपने ग्राहक को संतुष्ट करने के लिए हर संभव प्रयत्न करते हुए देखकर उस आहत पति का अंत:करण खुद को दोषी मानने लगा.

"बहुत अच्छा, लेकिन ऐसा है कि," वह बुदबुदाया, "मैं बाद में आऊंगा या—या मैं किसी को भेज दूंगा."

उसने कोशिश की कि वह दूकानदार के चेहरे के भावों को न देखे, लेकिन जिस नाजुक स्थिति में उसने अपने आप को डाल दिया था, उसे लगा कि कुछ न कुछ अवश्य खरीदना चाहिए. लेकिन क्या? उसने दूकान की दीवारों पर नजर घुमायी कि कहीं कोई सस्ती चीज दिख जाये. उसकी नजर दरवाजे के पास ही दीवार पर लटकी एक जाली पर पड़ी.

"यह. . . यह क्या है?" उसने पूछा.

"यह बटेर पकड़ने का जाल है."

"इसकी कीमत क्या है?"

"आठ रूबल सर."

"एक दे दो," आहत पति ने आठ रूबल दिये, जाल लिया और दूकान से बाहर निकल गया. □

तिलचट्टा

"मानीय महोदय, पिता और शुभ-चिंतक!" क्लर्क नेवीराजीमोव ने बधाई-पत्र की कच्ची प्रतिलिपि तैयार करते हुए लिखा, "मैं कामना करता हूं कि आपका अगला और पिछला भविष्य इस चमकदार दिन की तरह हो, स्वस्थ रहें और आपका जीवन सुखमय हो. उसी तरह आपका परिवार. . ."

लैंप का तेल लगभग खत्म हो रहा था और वह धुआं देने लगा था. मेज पर एक तिलचट्टा बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था.

"और क्या लिखूं इस नीच को?" धुएं से काली हुई छत की ओर नजर उठाये वह सोच रहा था.

छत में उसने अंधेरे के एक गोले को देखा, जो दरअसल लैंप-शेड की छाया थी. उसके नीचे थी धूल-धूसरित कॉर्निश, फिर दीवारें, जिनका रंग अब नीला-भूरा हो गया था. ड्यूटी का कमरा उसे एक रेगिस्तान-सा लगा और न सिर्फ अपने ऊपर, बल्कि उस तिलचट्टे के ऊपर भी तरस आने लगा था.

"मेरी तो नौकरी खत्म हो जायेगी और मैं यहां से चला जाऊंगा, लेकिन यह अपनी मृत्यु तक यहीं डटा रहेगा." अपने हाथ-पैर फैलाते हुए उसने सोचा.

एक बार फिर नेवीराजीमोव ने अपने शरीर को ढीला छोड़ा और सुस्त चाल से दरबान के कमरे की ओर अपने आपको घसीटना शुरू किया. पारामोन अपने बूट साफ कर रहा था. एक हाथ में जूतों का ब्रुश और दूसरे से सलीब बनाते हुए वह खिड़की के पास खड़ा सुन रहा था.

"लो, घंटों की आवाज आने लगी!"

नेवीराजीमोव भी खिड़की से कान लगाकर सुनने लगा. खिड़की से वसंत की ताजी हवा के साथ ईस्टर के घंटों की आवाज कमरे में आ रही थी.

"कितने सारे लोग!" नेवीराजीमोव ने नीचे गली में जलते हुए दीयों के पास मानव छायाओं को आगे-पीछे घूमते देखकर गहरी सांस ली. सभी प्रथम-प्रार्थना के लिए चर्च जा रहे थे.

"यारों ने शायद ज्यादा पी ली है. कितना हंस रहे हैं, कितनी बातें कर रहे हैं. और एक आभागा मैं कि ऐसे दिन भी यहां बैठना पड़ रहा है और हर साल ही ऐसा करना पड़ता है!"

"हरेक की अपनी-अपनी किस्मत होती है, अगर भगवान ने चाहा तो तुम भी तरक्की करके गाड़ियों में घूमोगे."

"मैं! मजाक कर रहे हो यार! मैं तरक्की नहीं कर सकूंगा. . .अनपढ़ जो हूं."

"हमारा जनरल भी तो अनपढ़ है."

"लेकिन उसने जनरल बनने से पहले हजारों की चोरी की थी. और उसकी स्थिति भी भाई साब! मेरी जैसी नहीं है. इतना घटिया तो मेरा नाम है—नेवीराजीमोव!"

नेवीराजीमोव खिड़की के पास से हटा और भारी दिल से कमरे में टहलने लगा. घंटों की दहाड़ बराबर तेज होती जा रही थी. गाड़ियों की आवाज जितनी तेज होती जाती और घंटों का स्वर जितना स्पष्ट होता जाता, दीवारें उसे उतनी ही भूरी और धूल-धूसरित दिखाई देने लगतीं और लैंप उतना ही ज्यादा धुआं देता लगता था.

नयी और बेहतर जिंदगी की लालसा से उसका दिल बैठ गया. उसकी इच्छा हो रही थी कि वह एकदम इस कमरे से बाहर निकल जाये और अलमस्त भीड़ में मिलकर इस धूमधाम का हिस्सा बन जाये, जिसकी खातिर ये घंटे चिल्ला रहे थे और गाड़ियां गरज रही थीं. उसकी तीव्र इच्छा हो रही थी कि वह अपने बचपन में पहुंच जाये, बच्चा बन जाये. घर का वातावरण, भाई-बंदों के सजे हुए चेहरे, सफेद मेजपोश, चमक, गर्माहट. और उसे याद आयी वह बग्घी, जिसमें बैठकर जमींदार की पत्नी निकलती थी, वो ओवरकोट, जिसे पहनकर प्रबंधक छैला बना घूमता था, मुनीम की छाती को सजाने वाली सोने की जंजीर. . . उसे याद आयी स्तानिस्लाव के उस गर्म रहने वाले पलंग की, नये बूटों की, बगैर फटी हुई बाजुओं वाली वर्दी की. . . उसे ये याद आयीं, क्योंकि ये अब नहीं थीं.

"चोरी करना!" उसने सोचा, "चोरी करना तो मान लो, मुश्किल नहीं है, लेकिन छुपाना मश्किल है. अमेरिका में, सुना है, चोरी करके लोग भाग जाते हैं, पर भगवान जाने अमेरिका कहां है! चोरी करने के लिए भी तो पढ़ा लिखा होना जरूरी है!"

नेवीराजीमोव ने इस लाचारी से निकलने की योजनाओं पर सोचते हुए पत्र पर आंखें गड़ा दीं. यह पत्र उस आदमी को लिखा गया था, जिससे वह नफरत करता था और डरता था, जिससे वह दस वर्षों से कह रहा था कि सोलह रूबल वाली नौकरी के स्थान पर अट्ठारह रूबल वाली नौकरी दिला दो.

"एह! भागता है शैतान!" उसने गुस्से से अपना हाथ उस तिलचट्टे पर दे मारा, जो बदकिस्मती से उसकी आंखों के सामने आ गया था.

तिलचट्टा हताश होकर कमर के बल पड़ा अपनी टांगें हिलाने लगा. नेवीराजीमोव ने उसकी टांग पकड़ी और उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया. शीशे में स्पंदन होने लगा और चरमराहट सुनाई पड़ी. नेवीराजीमोव अब हल्का महसूस कर रहा था. □

रूपांतर : वेदकुमार शर्मा

जिस अस्पताल में चेखव काम करते थे उसके प्रांगण में लगी उनकी प्रतिमा

चेखव का कहना था :

चिकित्सा मेरी पत्नी है और साहित्य प्रेमिका

□ डा. फैलिक्स इंगोल्ड

चिकित्सक लेखकों की अगर कोई सूची बनायी जाये, तो शायद दिमाग में सबसे पहले चेखव का नाम आता है. लेखन के क्षेत्र में इतनी शोहरत पा लेने के बाद भी चेखव ने चिकित्सा के अपने कठिन पेशे को अंत तक नहीं छोड़ा, यह अपने-आप में बड़ी बात है. चिकित्सा का पेशा बहुत वक्त लेने वाला पेशा है—और वह सिर्फ वक्त ही नहीं लेता, व्यक्ति से अत्यंत कठोर आचरण की मांग भी करता है. लेखक स्वभाव से संवेदनशील है (एक अच्छा चिकित्सक भी संवेदनशील होता है!) लेकिन चिकित्सा के पेशे में उस संवेदनशीलता को नियंत्रित करना पड़ता है और चेखव ने यह काम बड़ी खूबी से किया. यही वजह है कि उन्हें आज भी रूस में एक अच्छे चिकित्सक के रूप में भी याद किया जाता है. 1892 में चेखव ने एक पत्र में तिखोनोव को अपने जीवन-वृत्त का संक्षिप्त परिचय देते हुए लिखा था, "लेखकों में मेरे प्रिय लेखक हैं तालस्तोय और डॉक्टरों में मेरे प्रिय डॉक्टर हैं जाखारिन." यही वजह है कि चेखव अगर तुर्गनेव को पसंद करते थे, तो डॉ. बोतकिन भी उन्हें कम पसंद न थे.

अपने पेशे में मरीजों से घिरे रहने वाले चेखव खुद भी एक मरीज थे. 25 की छोटी उम्र से ही चेखव हैमाटाइसिस, खांसी, बुखार और कमजोरी की पकड़ में आ गये थे और ये रोग धीरे-धीरे उनके जिस्म को खाते चले गये. अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले चेखव ने ओल्गा निप्पर को लिखा था, "तुम पूछती हो कि जीवन क्या है. . . ? दरअसल तुम यह भी पूछ सकती हो कि शलजम क्या है? यह एक शलजम है और इससे अधिक हम कुछ नहीं जानते. . . ." रोगी शरीर के भीतर के फोड़ों और घावों में चेखव ने 'छिपे हुए खजानें' को प्राप्त करना चाहा. एक रूसी दार्शनिक ने कहा भी है—"चेखव ने मृत्यु, विध्वंस, क्षय और निराशा में जो 'अद्भुत दिलचस्पी' दिखायी, उसकी व्याख्या उस 'छिपे हुए खजाने' की खोज के रूप में की जा सकती है."

अपने जीवन के पंद्रहवें वर्ष में चेखव को परिवार के चिकित्सक ने चिकित्सा के पेशे को अपनाने के लिए उत्साहित किया. उस उम्र में ही चेखव अपने भाइयों के सहयोग से एक पत्रिका का संपादन कर चुके थे. इसलिए पंद्रह के बाद से ही चेखव को चिकित्सा के पेशे और साहित्य के बीच के तनाव और संघर्ष को बराबर झेलना पड़ा. सिद्धांत में चेखव भौतिकवाद के निकट थे और व्यवहार में आदर्शवाद के.

यह ध्यान देने की बात है कि तालस्तोय चिकित्सकों की निंदा करते थे—उन्होंने चिकित्सा को सतही ही नहीं बताया बल्कि कभी-कभी तो उसे हानिकारक भी बताया. जाहिर है कि चिकित्सक के रूप में चेखव ने इसका खुलकर विरोध किया. बूढ़े हो चुके तालस्तोय के मिशनरी उत्साह और नैतिकतावादी तानाशाही की चेखव ने कड़ी आलोचना की.

1899 में चेखव ने लिखा भी कि "मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि चिकित्सा के अध्ययन ने मेरे साहित्यिक कृतित्व पर महत्त्वपूर्ण असर डाला है. इससे मेरे निरीक्षण का क्षेत्र काफी विस्तृत हुआ है—इसने मुझे एक ऐसा ज्ञान दिया है जिसका वास्तविक मूल्य मैं अपने डॉक्टरी के पेशे की वजह से ही जान सकता हूं. इस पेशे ने मुझे रास्ता दिखाया है.

मूलरूप से यह लेख 1970 में सुहरिड गाइगी की मैडिकल बुलेटिन में प्रकाशित हुआ था. सारिका के लिए इसका संक्षिप्त रूपांतरण किया है—विनोद भारद्वाज ने

A medical prescription by Chekhov: from Chekhovsky Sbornik ("Chekhov Anthology"), vol. I, Moscow 1929.

चेखव के अपने हस्तलेख में एक नुस्खा

"मैं उन साहित्यिकों में से नहीं हूं जो विज्ञान को अस्वीकृत करते हैं और मैं उनमें भी नहीं शामिल होना चाहता जो हर चीज को बुद्धि की मदद से ही देखते और जांचते हैं."

चेखव के लेखन में चिकित्सक और रोगी भरे पड़े हैं लेकिन इसके बावजूद उनके लेखन में चिकित्सा की सूखी शब्दावली की भरमार नहीं है. बोल-चाल के मुहावरों, जीवंत अभिव्यक्ति की उनके लेखन में कमी नहीं है. चेखव इस बात को समझते थे कि कला और विज्ञान की संगति कोई आसान काम नहीं है. "कलात्मक अभिव्यक्ति की परिस्थितियां वैज्ञानिक तथ्यों से हमेशा मेल नहीं खातीं—जहर खाकर मरने को स्टेज पर ठीक वैसे नहीं दिखाया जा सकता जैसे वह यथार्थ में घटता है. लेकिन यहां भी वज्ञानिक तथ्यों से किसी प्रकार की संगति अनिवार्य है."

सुवोरिन के नाम लिखी एक चिट्ठी में चेखव ने एक बड़ी महत्वपूर्ण बात कही थी, "चिकित्सा मेरी पत्नी है, साहित्य मेरी प्रेमिका है... जब मैं एक से बोर हो जाता हूं तो दूसरी के साथ अपनी रात बिताता हूं. यह नियम-विरुद्ध जरूर है पर यह कम-से-कम एकरसता तो नहीं पैदा करता. और न ही इसमें किसी तरह का विश्वासघात है. अगर मैं चिकित्सा का पेशा न अपनाता, तो मैं अपने खुले दिमाग से अपने भटकते विचारों को इतना वक्त न दे पाता..."

कथा और विज्ञान के लाभकारी सम्मिश्रण पर चेखव ने और भी स्पष्ट होकर कहा है, "अगर हमें रक्त संचार की प्रक्रिया का पता है, हम इससे फायदे में ही रहते हैं. और अगर हम धर्म के इतिहास और चायकोव्स्की से भी परिचित हैं तो इसका कोई नुकसान नहीं है, फायदा ही है. गेटे में लेखक तथा वैज्ञानिक का उत्कृष्ट सम्मिश्रण देखा जा सकता है."

चेखव ने इस बात को स्वीकार किया है कि उन्होंने अपने चिकित्सक रूप के दायित्व को हमेशा निभाने की कोशिश की. "आधा दिन मैं रोगियों (एक दिन में 30 से ले कर 40 तक) के बीच व्यस्त रहता हूं. और साहित्य के लिए दिन के दो-तीन घंटे और रात का कुछ वक्त सुरक्षित रहता है, जैसा कि एक दूसरे नंबर के पेशे के साथ होना भी चाहिए."

1890 में चेखव ने साखालिन द्वीप की कठिन यात्रा करके निर्वासित व्यक्तियों के जीवन का अध्ययन किया था. 10,000 निर्वासित व्यक्तियों से चेखव ने खुद बातचीत की और बाद में एक रपट भी लिखी जिससे रूसी सरकार को भी इस मामले पर ध्यान देने के लिए मजबूर होना पड़ा. चेखव ने साखालिन की जिंदगी को 'शुद्ध नर्क' के रूप में देखा और समझा.

मास्को के पास मेलीखोवो में चेखव ने एक बड़ी जायदाद ले ली थी जहां सात सालों में चेखव ने लेखन, चिकित्सा तथा अन्य सामाजिक कार्यों में अपने को बुरी तरह से व्यस्त रखा. चेखव के भाई मिखाइल पाव्लोविच ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि वहां चेखव के घर के बाहर सुबह से ही रोगियों की लंबी कतार लग जाती थी. चेखव उन दिनों प्रैक्टिस नहीं कर रहे थे. बाहर खुले में वह रोगियों को देखते थे और दवाओं का खर्च भी खुद उठाते थे.

1893 में ही चेखव चिकित्सा के पेशे की थकान महसूस करने लगे थे लेकिन जहां भी जाने की कोशिश उन्होंने की—उनकी पत्नी चिकित्सा ने उनका पीछा नहीं छोड़ा. लेकिन इन्हीं दिनों उन्होंने अपनी सर्वोत्कृष्ट रचनाएं भी लिखीं.

चेखव के साहित्य में सब तरह के चिकित्सक हमें मिलते हैं. पागल चिकित्सक डॉ. रागिन का सरल लेकिन प्रभावशाली चित्र (वार्ड नं. 6), न्याय और अच्छाई में विश्वास करने वाला प्यारा डॉक्टर बोरिश (तीन साल), अकेला और पुराना साबित हो गया. डॉ. चेबुतकिन (तीन बहनें), युवा और नौसिखिया डॉ. लवोव (इवानोव), डॉ. आस्त्रोव, जिसके लिए प्रेम एक स्वप्न है और खुशी एक ग़म (अंकल वान्या)—लंबी सूची है.

चेखव के यहां डॉक्टर तो हैं ही—रोगी भी हैं (और कौन ऐसा है जो रोगी नहीं है!). दरअसल चेखव अपने रोगियों को देखते वक्त उनके शरीर के घावों तक ही नहीं सीमित रहते थे—वह उनके मानसिक संसार की तहों में घुसकर जो प्राप्त करते, वे उसका दस्तावेज उनका संपूर्ण साहित्य है. चेखव को इसीलिए आज रूस में एक अच्छे साहित्यिक रूप के में ही नहीं एक योग्य डॉक्टर के रूप में भी याद किया जाता है. □

ज़िंदगी के लिए कुछ चेखवी नुस्खे

यह जिंदगी एक बेमजा मामला है किंतु विपत्ति और विषाद में भी सदा प्रसन्नचित्त रहने के लिए इन बातों की जरूरत है: (क) अपनी वर्तमान अवस्था से संतुष्ट रहना तथा (ख) इस जानकारी से कि हालत इससे भी खराब हो सकती थी, खुशी मनाना. मसलन :

जब आपकी जेब में माचिस की तीलियां अचानक जल उठें तो आनंद मनाओ और शुक्र करो कि कहीं ये बारूदखाने में नहीं जल उठीं.

जब आप देहात में छुट्टियां मना रहे हों और आपके रिश्तेदार आपसे मिलने चले आयें तो आप पीले न पड़ जायें, बल्कि विजयोल्लास से चिल्लायें, "हमारा भाग्य कितना अच्छा है कि पुलिस नहीं आ गयी."

अगर आपकी पत्नी अथवा साली पिआनो पर सरगम का अभ्यास करने लगे तो आपे से बाहर न हो जाइये, बल्कि इस संगीत से मिलने वाले आनंद के लिए कृतज्ञता प्रकट करें कि कहीं आपको गीदड़ों का हुआना अथवा बिल्लियों का रोना नहीं सुनना पड़ा.

इस बात पर खुशी मनाओ कि आप गाड़ी में जुता घोड़ा नहीं हैं न ही जीवाणु अथवा कृमि हैं, न सुअर हैं, न गधे, न खटमल हैं और न ही किसी जिप्सी द्वारा अपने पीछे लगाये हुए रीछ हैं. □

प्रस्तुति : राजेंद्र बोहरा

मास्को नगर, 1880 में

आत्मरचना

शेक्सपीयर का हेमलेट 'मास्को में'

"हम केवल एक बार ही जिंदगी को जी सकते हैं. यदि हम उसे नहीं जी पाते तो सब कुछ खो जाता है. मैं तो एक फटा हुआ चिथड़ा हूं, बासी फल हूं, मैं मास्को का हेमलेट हूं. मुझे श्मशान ले चलो!" यही पीड़ा है, जो मास्को ने चेखव को दी और कोई भी महानगर किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को दे सकता है.

मैं मास्को में पैदा हुआ और तबसे वहीं रह रहा हूं. हे प्रभु! मैं यह नहीं जानता कि मास्को कहां से आया, यह अब क्यों है, इसका कारण क्या है, उद्देश्य क्या है. कुछ लोगों के साथ बैठकर मैं शहर की अर्थव्यवस्था पर हंगामा खड़ा कर देता हूं, हालांकि मैं यह भी नहीं जानता कि मास्को शहर कितने मील लंबा है? यहां कितनी जनसंख्या है? फिर इस जनसंख्या में से पैदा होने और मरने वालों की अलग-अलग क्या संख्या है?

अभी पिछले हफ्ते की ही बात है, किसी घर में घुसकर मैंने एक अपरिचित व्यक्ति से जानना चाहा कि मैं इस बोरियत से कैसे पीछा छुड़ाऊं. वह गैर-रूसी बड़ी तेजी से मेरी तरफ मुड़ा और गुस्से में बोला, "ओफ्फोह, आप इस टेलीफोन के तार से पास वाले खंबे पर फांसी चढ़ जाइये. इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है."

मुझे लगता है कि मैं कोई असभ्य व्यक्ति हूं. यह बात सही है कि मैं अच्छे फैशन के कपड़े पहनता हूं, ट्यूडर के यहां अपने बालों को सजवाता हूं और मेरा घर भी काफी सुंदर है, लेकिन यह सब होते हुए भी मैं एशिया का कोई दुखी व्यक्ति हूं. बड़ी सुंदर पच्चीकारी की हुई चार सौ डालर की मेज पर मैं लिखता हूं. सुंदर रेशमी कपड़ों से सजा हुआ फर्नीचर, तस्वीरें, कालीन, आधे धड़ वाली मूर्तियां, एक चीते की खाल—सब कुछ मेरे पास है, लेकिन चूल्हे का ऊपरी हिस्सा किसी औरत की जैकेट से ढका हुआ है या फिर मेरे यहां कोई पीकदान नहीं है. मेरे मेहमान भी मेरी तरह कालीन पर थूकते हैं. मेरे घर की सीढ़ियों में बत्तख भुनने की गंध आती है, मेरे सेवक का चेहरा उनींदा रहता है, रसोईघर काफी गंदा और भद्दा है, बिस्तर और अल्मारियों के खानों में मकड़ी के जाले हैं, धूल है. मैं झुकी हुई छतों, नदी की मछलियों, गीलेपन और अपने उन शराबी दोस्तों से भी संधि कर लेता हूं जो जूते पहनकर ही मेरे बिस्तर पर लेट जाते हैं. फुटपाथ पर पीले-भूरे रंग का फैला हुआ गंदी सड़क के कोने पर लगा कूड़े का ढेर, बेकार की चीजों से ढके दरवाजे, गलत अक्षरों में लिखे हुए साइन बोर्ड या फिर फटे कपड़े पहने हुए भिखारी आदि से मेरी सौंदर्य दृष्टि पर कोई फर्क नहीं पड़ता. वे मुझे बताते हैं कि मास्को के शिल्पकारों ने घरों की जगह साबुन के डिब्बे बनाकर सारा मास्को शहर खराब कर दिया है.

चलिए, अब मैं आपको अपनी बोरियत का दूसरा कारण बताता हूं. मुझे लगता है कि मैं असामान्य रूप से चालाक और महत्वाकांक्षी हूं. जब भी मैं कहीं पर जाता हूं, बोलता हूं, चुप रहता हूं या फिर साहित्यिक चीजें पढ़ता हूं. और लैंस्तोव पर गुस्सा करने के लिए खाना खाता हूं—तो मैं यह सब कार्य बड़े संतुलित ढंग से करना चाहता हूं. इसके लिए मैं हर तर्क का सहारा लेता हूं. असल में मैं एक अनजान और असभ्य एशियाई हूं. हालांकि मैं काफी संतुष्ट हूं, लेकिन लोगों पर यह जाहिर करता हूं कि मैं किसी भी चीज से संतुष्ट नहीं हूं. मैं यह सब काम इतनी होशियारी से करता हूं कि कई बार मुझे अपने आप पर भी शक होने लगता है. थियेटर में जब कोई हंसी-मजाक का दृश्य होता है तो मेरी इच्छा खूब हंसने की होती है, लेकिन बहुत जल्दी ही मैं अपने आपको गंभीर बना लेता हूं, वरना मेरे साथी क्या कहेंगे?

मध्यांतर में मैं हवा में घूंसा मारते हुए

चेखव की नोटबुक का एक पृष्ठ

चीखता हूं. "कैसा कूड़ा नाटक है. मुझे गुस्सा आ रहा है."

कभी-कभी मैं किसी संगीत सभा में कोई वाद्य बजाना चाहता हूं. ऐसा करने पर मुझे बहुत सुखी होना चाहिए और मुझे पता है कि दुखी होने पर ऐसा करना काफी अच्छी बात है, लेकिन तब 'द आर्टिस्ट' के संपादकीय कमरों में बैठे लोग क्या कहेंगे?

नहीं, मुझे ईश्वर ही बचा सकता है.

किसी चित्रकला प्रदर्शनी में मैं काफी तेजी से अपनी आंखें घुमाता हूं, बड़ी तेजी से सिर हिलाकर ऊंची आवाज में कहता हूं, "मुझे लगता है कि इन चित्रों में सब कुछ है—बड़ा उत्साह है, अभिव्यक्ति है और रंग हैं—लेकिन

मास्को में चेखव का घर

मुख्य चीज—विचार कहां है? वह इसमें कहां है? विचार को यहां कैसे व्यक्त किया गया है?"

मैं चाहता हूं कि पत्रिकाओं में जो कुछ भी छपे, उसमें ईमानदारी हो. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसमें छपा हुआ लेख किसी प्रोफेसर की जगह किसी साइबेरिया निवासी ने लिखा है. जो व्यक्ति कभी साइबेरिया नहीं गया, उसमें असली प्रतिभा हो ही नहीं सकती.

मैं आमतौर पर रचनाओं को बहुत ज्यादा प्रकाशित करना चाहता हूं. अभी कल ही की बात है, मैं एक बड़ी पत्रिका के संपादकों के पास गया. मैंने उनसे कहा कि क्या वे मेरा लघु उपन्यास (56 छपे हुए पृष्ठ) प्रकाशित कर सकेंगे. संपादक घबराकर बोला, "मैं नहीं समझ पा रहा कि यह सब कैसे हो सकता है और यह बात तो तुम भी जानते हो कि यह काफी लंबा है और . . .अरुचिकर है."

मैंने कहा, "जी हां, आप ठीक कहते हैं, लेकिन दूसरी तरफ यह भी तो देखिए कि यह एक ईमानदार रचना है."

संपादक मुझसे सहमत था, घबराते हुए बोला, "आप ठीक कहते हैं. . .मैं इसे अवश्य ही प्रकाशित करूंगा."

मेरी जान-पहचान की सभी लड़कियां और महिलाएं असामान्य तौर पर चालाक और महत्वाकांक्षी हैं. वह सब एक जैसी हैं, एक ही तरह के कपड़े पहनती हैं, एक जैसा बोलती हैं, वैसे ही चलती हैं—उनमें केवल एक ही अंतर है कि उनमें से एक के होंठों का आकार दिल की तरह है. जब वह हंसती है तो उसका मुंह चपटी मछली की तरह काफी खुल जाता है.

मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि एक बार वह मुझसे मिलने आयी थी. मुझे प्रेम का वह दृश्य अभी तक याद है. वह सोफे पर बैठी हुई थी, उसके होंठों का आकार दिल की तरह है. उसकी वेश-भूषा काफी खराब थी. मेरा हाथ उसकी कमर में था. . .उसकी चोली थोड़ी-सी खुली. . .उसके गाल नमकीन हैं. बड़ी जल्दी ही वह शर्म से घबरा गयी. "मुझे छोड़ दो," वह कहने लगी, "प्रेम करने का यह बड़ा गंदा तरीका है. प्रोतोपोव यह सब देख लेगा तो क्या कहेगा? भगवान के लिए मुझे छोड़ दो, ऐसा कभी नहीं हो सकता, हां, तुमसे मैं दोस्ती का वादा करती हूं." लेकिन मैंने कहा कि सिर्फ दोस्ती ही काफी नहीं है. तब वह बड़े हाव-भाव से अपनी उंगली से मुझे चेतावनी देती हुई बोली, "अच्छा ठीक है, मैं तुम्हें प्रेम करूंगी—सिर्फ एक शर्त है. . .तुम मुझे सम्मान दोगे."

और जब मैंने उसका आलिंगन किया तो वह धीमी आवाज में बोली, "अब हम दोनों मिलकर संघर्ष करेंगे. . ."

मैं अत्यधिक द्वेषी व्यक्ति हूं. जब मुझे यह सुनाई देता है कि किसी व्यक्ति ने बहुत अच्छा लेख लिखा है या कि किसी का नाटक सफल हुआ है तो मैं सब कुछ समझते हुए भी इधर-उधर देखने लगता हूं. किसी अभागे व्यक्ति की तरह मैं उससे कहता हूं, "मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई, लेकिन क्या तुम यह जानते हो कि सन 1874 में वह चोरी करते हुए पकड़ा गया था."

मेरी आत्मा एक सीसे के टुकड़े में बदल जाती है. तब मैं अपने पूरे एहसास के साथ उस आदमी से घृणा करता हूं, जिसने सफलता प्राप्त की है, और यह क्रम चलता ही रहता है:

क्या आप जानते हैं कि हर तरह के लोगों के बारे में नीच, बनावटी और घृणास्पद बातें पूरे मास्को में मैंने खुद फैलायी थीं.

▣

इस तरह मैं एक मूर्ख, असभ्य, लेकिन बहुत चतुर और असामान्य रूप से महत्वाकांक्षी व्यक्ति हूं. मैं अपनी बोरियत पर विलाप करता हूं. अपने पाप को शांति देने के लिए मैं अपने दोस्तों और पड़ोसियों का बुरा करता रहता हूं.

मैं छाया की तरह लोगों के पीछे जबर्दस्ती पड़ा रहता हूं. मैं कुछ नहीं करता. मेरा गुर्दा बढ़ता ही जा रहा है. . . इस दौरान समय के साथ-साथ मैं बूढ़ा और कमजोर होता जा रहा हूं. एक दिन आप देखेंगे कि मैं इन्फ्लुएंजा से बीमार होकर मर जाऊंगा. मुझे खींचकर श्मशान ले जाया जायेगा. थोड़े समय तक मेरे दो-तीन दोस्त मुझे याद करेंगे. फिर वे भी मुझे भूल जायेंगे. किसी गुजरी हुई आवाज की तरह मैं हमेशा के लिए खत्म हो जाऊंगा. . .हम केवल एक बार ही जिंदगी को जी सकते हैं. यदि हम उसे नहीं जी पाते तो सब कुछ खो जाता है. मैं तो एक फटा हुआ चिथड़ा हूं, बासी फल हूं. मैं मास्को का हेमलेट हूं. मुझे श्मशान ले चलो.

अपने बिस्तर से मैं इधर से उधर हाथ-पैर पटकता रहता हूं. मुझे नींद नहीं आती. मैं अपनी उदासीनता पर आश्चर्य चकित हूं. सुबह होते ही मेरे कानों में यह शब्द फिर सुनाई देते हैं, "ओफ्फोह! आप इस टेलीफोन के तार से पास वाले खंबे पर फांसी चढ़ जाइए."

□

रूपांतर : जितेंद्र सेठी

चित्रांकन : अवधेश कुमार

चांदनी रात थी काफी ठंडी. रोमान्सोव ने सावधानी से दरवाजा खोला और बाहर आंगन में आ गया. "इन्सान," गढ़ा पार करते हुए वह दर्शन बघारने लगा, "इन्सान तो मात्र राख, मृगतृष्णा और धूल है. पावेल निकोलाइच गवर्नर है लेकिन वह भी राख ही है. उसका बड़प्पन सपना है, धुआं है. . . एक बार फूंक मारी कि सब कुछ गायब!"

'भौं, भौं. . .' दार्शनिक के कानों तक आवाज आयी.

रोमान्सोव ने पीछे मुड़कर देखा—दो कदमों की दूरी पर स्तैपी नस्ल के भेड़िये जितना कुत्ता दिखाई दिया. वह संतरी के लिए बने शेड के पास बंधा था और चेन तोड़ने की कोशिश कर रहा था. रोमान्सोव ने उसकी तरफ देखा. क्षण भर बाद ही उसके चेहरे पर हैरानी की रेखाएं खिंच आयीं.

'भौं, भौं. . .!' कुत्ता फिर गुर्राया.

"समझ में नहीं आता," हाथ फैलाते हुए रोमान्सोव बोलने लगा, "तू. . .तुझे इन्सान पर भौंकने की हिम्मत हो रही है? जिंदगी में पहली बार सुन रहा हूं. खुदा न करे. . .तुझे यह भी पता नहीं कि इन्सान इस विश्व के गले का हार है. . .तू ठीक से देख. . . तेरे पास आ रहा हूं. . .देख, मैं इन्सान नहीं हूं क्या?"

'भौं, भौं. . .!'

"अपना पंजा तो दे!" कुत्ते की तरफ रोमान्सोव ने हाथ बढ़ाया. "पंजा दे! नहीं देगा? देना नहीं चाहता? जरूरत भी नहीं. मैं इसे ही नोट कर रहा हूं. फिलहाल मुझे तुम्हारे थोबड़े पर. . .अरे, यह तो मैं तुम्हें पुचकार रहा था. . ."

'भौं, भौं. . . .!'

"तू क्या करना चाहता है? ठीक है, काट ले! याद रखूंगा. इसका मतलब यह हुआ कि इन्सान के इस विश्व के गले का हार, प्राणी-जगत के सम्राट होने, न होने से तुझे कोई फर्क नहीं पड़ता? इसका मतलब यह हुआ कि तू पावेल निकोलाइच को भी काट सकता है. है ना? पावेल निकोलाइच के आगे तो सब घुटने टेकते हैं और तुझे उसके और दूसरे लोगों के बीच फर्क नजर नहीं आता. अच्छा तो, इसका मतलब यह हुआ कि तू समाजवादी है. जा कहां रहा है? मेरी बात का जवाब दे! तू समाजवादी है ना?"

'भौं, भौं, भौं. . .!'

"ठहर, काटने की कोशिश मत कर. मैं क्या कह रहा था? अच्छा, मैं राख के बारे में कुछ कह रहा था. फूंक मारो नहीं कि वह गायब. पूछा जाता है हम क्यों जीते हैं? बीमारियों से घिरी माओं से पैदा होते हैं, खाते हैं, पीते हैं, ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करते हैं और मर जाते हैं. . .यह सब कुछ किस लिए? राख! इन्सान की कीमत ही क्या है! तू कुत्ता है और तेरी समझ में कुछ नहीं आयेगा.

रोमान्सोव ने सिर घुमाया और थूका.

"गंदगी. . .तुझे लगता है कि मैं रोमान्सोव, विभागीय सचिव इस प्रकृति का सम्राट, भूल कर रहा हूं! हां, मैं तो पिस्सू हूं, नीच, कमीना, रिश्वतखोर चुगलखोर. . .!"

अलैक्सेइ इवानिच रोमान्सोव ने अपनी छाती पर घूंसा जमाया और रोने लगा.

"चुगलखोर और शिकायती. . . तेरा ख्याल है कि इगोरका कोरन्युशकिन को मेरे कहने पर नौकरी से नहीं हटाया गया? क्या कहा? मैं पूछना चाहता हूं कि कमेटी के दो सौ रूबल किसने हड़पे और खुश्गुचेव को गबन के केस में किसने फंसाया? मेरे अलावा और ऐसा कौन कर सकता है? नीच कमीना, धोखेबाज. . ."

रोमान्सोव ने आस्तीन से आंसू पोंछे और फूट-फूटकर रोने लगा. "ले काट मुझे! जिंदगी-भर किसी ने यों कभी कोई अपशब्द नहीं कहा. मन ही मन तो सभी नीच समझते हैं पर सामने हर कोई मुस्कराता और तारीफ करता है. ले कुत्ते, तू ही काट मुझे! नोच डाल मुझ धोखेबाज को!"

रोमान्सोव को धक्का लगा और वह कुत्ते पर जा गिरा.

"हां, ठीक इसी तरह! नोच डाल! रहम न कर! दर्द हो रहा है, पर इसकी मुझे परवाह नहीं. ले, मेरे हाथ पर काट! देख, खून टपक रहा है. यही तो होना चाहिए. माफ करना, तेरा नाम क्या है? ले, मेरा फरकोट भी चीर डाल! सब कुछ तो रिश्वत के पैसों से खरीदा गया है. अपने दोस्तों को धोखा देकर मैंने यह फरकोट लिया है. और यह कमीज. . .अरे, मैं क्या कह रहा था? अच्छा, खुदाहाफिज कुत्ते!"

'भौं, भौं. . .!'

रोमान्सोव ने कुत्ते की पीठ सहलायी. एक बार फिर उसे अपना हाथ मछलियों की तरह चबाने के लिए दिया, फिर फरकोट लपेटकर धक्के खाता हुआ अपने घर के दरवाजे पर पहुंचा.

▣

दूसरे दिन उसकी नींद दोपहर के वक्त खुली. रोमान्सोव को सब कुछ अजीब-सा लगने लगा. उसके सिर, हाथ और पांवों पर पट्टी बंधी थी. चारपाई के पास रोती हुई बीवी और चिंतित डाक्टर बैठे हुए थे.

□

रूपांतर : वरयाम सिंह

कहानी एक मेम साहिबा की

नौ वर्ष पूर्व घास-कटाई के समय एक दिन शाम से पहले मैं और प्योत्र सेरगेयेविच डाकघर से पत्र लेने के लिए पहाड़ी के ऊपर गये थे.

मौसम बड़ा सुहावना था, किंतु लौटते समय बादल गरजने लगे. और हमें सामने से गुजरते हुए गुस्से भरे काले बादल दिखाई पड़े. धीरे-धीरे बादल हमारे समीप आने लगे और हम बादलों के.

बादलों की पृष्ठभूमि में हमारा घर और चर्च सफेद लग रहे थे. पहाड़ी-पीपल चांदी जैसे सफेद दिखाई दे रहे थे. वर्षा और कटी हुई घास की गंध वातावरण में फैली हुई थी. मेरा साथी गप्पें मार रहा था और जोर-जोर से हंस रहा था. वह कह रहा था, "बुरा न होगा अगर हमें यहीं कहीं दांतेदार मीनारों वाला काई लगा उल्लुओं से आवासित मध्यकालीन किला मिल जाये और हम वर्षा से बचने के लिए उसमें छिप जायें और आखिर में बिजली हमें मार डाले."

अब मोरचा और जई के खेतों में तेज हवा के झोंकों ने हिलोरें पैदा कर दीं. वातावरण धूल-धूसरित होने लगा. प्योत्र सेरगेयेविच हंस रहा था और घोड़े को एड़ लगाये जा रहा था.

"अच्छा, बहुत अच्छा." उसने ऊंची आवाज में कहा. उसकी प्रसन्नता और विचार मेरे ऊपर छाते जा रहे थे. वह कह रहा था, "अभी कहीं हमारे भीगे शरीरों पर बिजली गिर पड़े और हम मौत के शिकार हो जायें." लेकिन मैं फिर भी हंसती जा रही थी.

▣

तेज सवारी और हवा के बवंडर के बीच जब हवा से सांस रुंधने लगती है और लगता है कि हम पक्षियों की तरह उड़ रहे हैं तो दिल में बड़ा डर और गुदगुदी पैदा होने लगती है. जब हम अपने आंगन में पहुंचे, तब तक हवा लगभग थम चुकी थी और वर्षा की बड़ी-बड़ी बूंदें घास और छतों पर पड़ रही थीं. अस्तबल सुनसान था. प्योत्र सेरगेयेविच ने घोड़ों को बांध दिया. मैं दहलीज पर खड़ी होकर वर्षा देखने लगी. यहां पर मैदान की अपेक्षा घास की गंध अधिक तीखेपन से महसूस हो रही थी. बादलों और वर्षा से अंधकार-सा छा गया था.

मेघों के भीषण-गर्जन से लगा कि आसमान फटा जा रहा है. प्योत्र सेरगेयेविच ने कहा, "यह गड़गड़ाहट कैसी लगती है तुम्हें?"

वह मेरे नजदीक ही दहलीज पर खड़ा मेरी तरफ देख रहा था. मुझे लगा कि उसकी आंखों में मेरे प्रति प्यार तैर रहा है.

वह बोला, "नाताल्या व्लादीमीरोव्ना! मेरे जी में आता है कि ऐसे ही खड़ा रहूं और आपको देखता रहूं, चाहे पूरी दुनिया ही क्यों न छोड़नी पड़े. आज आप बहुत अच्छी लग रही हैं." उसकी आंखें उमंग और विनीत भाव से मेरी तरफ देख रही थीं. उसकी दाढ़ी और मूंछों पर चमकती हुई वर्षा की बूंदें भी मानों मेरी तरफ देखती हुई अपने प्यार का इजहार कर रहीं थीं. उसने कहा, "मैं आपसे प्यार करता हूं. मैं आज कितना खुशनसीब हूं कि आप मेरी नजरों के सामने हैं. मैं जानता हूं कि आप मेरी पत्नी नहीं बन सकतीं, लेकिन कोई बात नहीं. मैं तो सिर्फ इतना चाहता हूं कि आप जान लें कि मैं आपसे बहुत प्यार करता हूं. आप चुप रहिए, जवाब मत दीजिए और मेरी बातों पर ध्यान मत दीजिए, सिर्फ इतना जान लीजिए कि आप मुझे बहुत प्यारी लगती हैं."

मुझे उसकी बातों से बड़ी प्रसन्नता हुई. मैं उसके दीप्त चेहरे को देखती रही और मंत्रमुग्ध-सी अविचल होकर बातें सुनती रही.

"आप चुप हैं... कितनी अच्छी बात है. कृपया कुछ मत बोलिए." प्योत्र सेरगेयेविच ने कहा.

ये सब मुझे बड़ा अच्छा लगा. मैं प्रसन्नता से खिलखिला पड़ी और मूसलाधार वर्षा में ही घर की तरफ दौड़ पड़ी और प्योत्र सेरगेयेविच भी हंसता हुआ मेरे पीछे दौड़ने लगा.

हम दोनों बच्चों की तरह दौड़ते हुए कमरे में पहुंचे. पिताजी और भाई साहब जो मुझे प्रसन्न और हंसते हुए देखने के आदी नहीं थे, आश्चर्य से मेरी तरफ देखने लगे और फिर खुद भी हंसने लगे.

तूफानी मेघ जा चुके थे और घन-गर्जना भी शांत हो चुकी थी, किंतु प्योत्र सेरगेयेविच की दाढ़ी पर अब भी वर्षा की बूंदें चमक रही थीं. पूरी शाम डिनर के समय तक वह गाता, सीटी बजाता और शोर मचाते हुए कुत्ते के साथ खेलता रहा. वह तब तक कमरे से कमरे कुत्ते के पीछे दौड़ता रहा, जब तक एक नौकर सामोवार की चपेट में आकर गिर न पड़ा.

सोने के लिए लेटते वक्त मैंने रोशनी की और खिड़की खोल दी. असंख्य भावनाएं मेरे मन पर छाती जा रही थीं. मुझे याद आ रहा था कि मैं स्वतंत्र, स्वस्थ, कुलीन और धनी हूं, लोग मुझे प्यार करते हैं. और खास बात तो यह है कि मैं कुलीन और धनी हूं... कितनी अच्छी बात है. और फिर यह समझने की कोशिश करने लगी कि मैं प्योत्र सेरगेयेविच से प्यार करती हूं अथवा नहीं, उस रात मैं कोई फैसला न कर सकी और सो गयी.

▣

दूसरे दिन जब सुबह मैंने अपने पलंग पर सूर्य का कंपित प्रकाश-पुंज और वीणा की छाया देखी तो बीते हुए कल की तमाम घटनाएं याद आने लगीं. जिंदगी सुख और विविधता से परिपूर्ण लगी. मैंने जल्दी से अपने कपड़े पहने और बगीचे की की ओर दौड़ पड़ी.

और इसके बाद क्या हुआ? इसके बाद... कुछ नहीं. जाड़े के दिनों में जब हम शहर में रहने लगे, तो कभी-कभी प्योत्र सेरगेयेविच हमारे यहां आता था. गांवों के लोग गर्मी के दिनों में बड़े मनोहर लगते हैं, लेकिन शहर में आते ही, खास करके जाड़े के दिनों में, उनकी मनोहरता में कमी आ जाती है. और ऐसा ही हुआ. यहां प्योत्र सेरगेयेविच कभी-कभी प्यार की बातें करता था, पर यहां कुछ बदला हुआ था, जो गांव में नहीं था, "मैं कुलीन और धनी हूं और प्योत्र निर्धन है, सिर्फ भाग्य के सहारे जीवित है," इस बात को हम शहर में तीखेपन के साथ महसूस करने लगे. जवान होने के नाते हम दोनों, पता नहीं क्यों, अपने बीच एक ऊंची और मजबूत दीवार मान बैठे थे. वह जब भी शहर में आता, बड़ी मजबूर हंसी हंसता और उच्चवर्गीय समाज की आलोचना करता. और अगर कोई उच्चवर्ग का व्यक्ति सामने बैठा होता तो उदास होकर चुप्पी साध लेता. ऐसी कोई दीवार होती नहीं, जिसे भेदा न जा सके, लेकिन आजकल के युवक अत्यधिक डरपोक, निस्तेज और मुरझाये हुए होते है, बड़ी जल्दी समझौता कर लेते हैं, क्योंकि बदनसीब होते हैं. संघर्ष करने की बजाय वे आलोचना करते फिरते हैं.

लोग मुझसे प्यार करते थे. जिंदगी में सुख ही सुख था. शांति से रहती थी. मैं नहीं जानती थी कि मुझे किसकी प्रतीक्षा है और जिंदगी से क्या चाहिए? और पंख लगाये समय उड़ता रहा.

▣

पिताजी की मृत्यु हो गयी. मैं बुढ़ाने लगी. वर्षा का शोर, मेघ गर्जन, दिल को खुश करने वाले विचार, प्यार की बातें जो मुझे अच्छी लगती थीं, प्यारी लगती थीं और उत्साह बढ़ाती थीं, अब यादें बनकर रह गयीं. सब बातें एकरस और खाली लगने लगीं, एक मृतक के समान. क्षितिज अंधकारमय और विचित्र-सा लगने लगा.

तभी घंटी बजी. प्योत्र सेरगेयेविच आया था. जब जाड़े के दिनों में वृक्षों को देखती हूं तो याद आता है कि ये ही वृक्ष गर्मी के दिनों में कितने हरे-भरे दिखाई देते हैं. मैं बुदबुदाने लगी, "मेरे प्यारो!" जब मैं उन लोगों के बारे में सोचने लगी, जिनके साथ मैंने जवानी के दिन गुजार दिये तो मेरा हृदय विक्षोभ और गरमाहट से भर गया और फिर वही शब्द मैं बुदबुदा उठी.

प्योत्र सेरगेयेविच बुढ़ा गया था और दुबला-सा दीखने लगा था. उसने बहुत दिन पहले से ही प्यार की बातें करना बंद कर दिया था. अब वह गप्पें नहीं मारता था और अपने काम पर भी नहीं जाता था. कोई बीमारी-सी लग गयी थी उसे. ऐसा लगता था, मानों बड़ी निराशा और अनिच्छा से जिंदगी बिता रहा हो.

वह अंगीठी के पास बैठ गया और चुप्पी साधे आग की तरफ देखने लगा. मुझे कुछ नहीं सूझा कि क्या पूछूं, फिर भी मैंने पूछा, "क्या बात है?"

"कुछ नहीं." उसने जवाब दिया.

और फिर चुप्पी छा गयी. अग्नि का लाल प्रकाश उसके शोक-संतप्त चेहरे पर पड़ रहा था.

मुझे पुरानी बातें याद आने लगीं. अचानक मेरे कंधे कांपने लगे, सिर नीचे को तरफ झुकने लगा और मैं बिलखकर रोने लगी. अपने लिए और प्योत्र सेरगेयेविच के लिए मैं असह्य रूप से दुखी हो उठी थी. इस समय अपने कुलीन होने और धनी होने का ख्याल मेरे मन में बिलकुल न आया.

मैं जोर-जोर से सिसकियां भरते हुए, कनपटियों को जोर से दबाते हुए बड़बड़ा रही थी, "जिंदगी बरबाद हो गयी. जिंदगी बरबाद हो गयी."

प्योत्र सेरगेयेविच चुपचाप बैठा हुआ था. उसने इतना भी न कहा कि मत रोओ. वह समझता था कि रोना जरूरी है और अब रोने का समय भी आ गया है. मेरे प्रति उसकी आंखों में विक्षोभ दिखाई दे रहा था. मेरा दिल भी भीरु और अभागे प्योत्र सेरगेयेविच के प्रति जो मेरी और अपनी, दोनों की ही जिंदगियों को सफल नहीं बना सका था, करुणा और वेदना से भर उठा.

▣

विदाई के समय जानबूझ कर उसने पोस्तीन के बड़े कोट को पहनने में देर लगायी, दो बार मेरे हाथ को चूमा और देर तक रुआंसा-सा मुझे देखता रहा. उस समय शायद वह उस दिन के तूफान, वर्षा, हंसी और मेरे चेहरे को याद कर रहा था. वह मुझसे कुछ कहना चाहता था और शायद कह लेने पर प्रसन्न भी होता, पर उसने कुछ भी नहीं कहा, सिर्फ देर तक मेरे हाथ को अपने हाथ में दबाता रहा.

उसे विदा कर मैं कमरे में वापस आयी और अंगीठी के सामने पड़ी दरी पर बैठ गयी. अंगीठी के लाल दहकते अंगारे बुझकर राख में बदल चुके थे. हल्की-हल्की बर्फ खिड़की पर पड़ रही थी और हवा अंगीठी की चिमनी में प्रवेश कर अजीब-सा संगीत पैदा कर रही थी.

कमरे में घुसते हुए, नौकरानी ने मुझे आवाज दी. □

रूपांतर : नरेंद्रदेव आर्य

चेखव के प्रेम प्रसंग

■ से. रा. यात्री

पहली नवंबर अट्ठारह सौ छियानवे को लीदिया मिजीनोवा नाम की एक छब्बीस वर्षीया युवती ने चेखव को लिखा—'आपके नाटक सीगल की कथा मेरे जीवन की घटनाओं पर आधारित है.'

अपने उत्कृष्ट लेखन के बल पर चेखव ने बहुत थोड़ी उम्र में ही इतनी जबर्दस्त ख्याति प्राप्त कर ली थी कि महान लेखक ताल्स्तोय तक उससे गहराई से प्रभावित थे और उसके अंतरंग सखा थे. गोर्की का तो अजब हाल था. वह चेखव के सम्मोहन में डूबा हुआ था. चेखव का किसी बड़े नगर में आगमन होता तो लेखकों और पाठकों की भारी भीड़ एकत्र हो जाती. चेखव के व्यक्तित्व में गजब का जादू था.

परंतु एक विचित्र स्थिति यह भी थी कि चेखव इन सारे हंगामों से जरा भी प्रभावित नहीं होता था. वह भीतर से एक उदास और अकेला आदमी था. अपनी ख्याति उसे किंचित भी आंदोलित नहीं करती थी. वह अपने अंतरतम में छिपे हुए रहस्यों को किसी के सामने प्रकट नहीं करता था. यहां तक कि वह अपने साहित्य के संबंध में भी किसी से बातें करना पसंद नहीं करता था.

शुरू में मैंने मिजीनोवा के जिस पत्र का उल्लेख किया है, उसका चेखव ने कभी किसी के सामने जिक्र नहीं किया. उसने मुखर होकर अपने अंतरंग मित्रों से लीदिया मिजीनोवा की प्रेम पीड़ा की कथा नहीं कही. मिजीनोवा की मास्को के सांस्कृतिक जगत में संगीतज्ञ के रूप में अच्छी साख थी और बाद में उसने इस क्षेत्र में अच्छी ख्याति अर्जित की. वह चेखव को बराबर आकुलताभरे प्रणय पत्र लिखती रही, किंतु चेखव के उत्तरों में ऊष्मा की कोई झलक नहीं मिलती थी. शायद इसका कारण चेखव की संकोचशीलता और गहरी संवेदनशीलता थी. अपनी ओर से उसने कभी किसी युवती को अनुरागपूर्ण आमंत्रण नहीं दिया.

लड़कियों के स्कूल में लीदिया मिजीनोवा चेखव की बहन मारिया चेखवा के साथ छोटी बच्चियों को रूसी भाषा पढ़ाती थी. वह मारिया के साथ चेखव के घर आने-जाने लगी. मारिया के सभी भाई उसे देखकर मुग्ध हो जाते थे. वहीं मिजीनोवा की चेखव से मुलाकात हुई और वह उससे मिलकर गहरे प्रेम में पड़ गयी. यह घटना अट्ठारह सौ नवासी की है. (इसी वर्ष पीटर्सबर्ग में एक और युवती चेखव से मिली और चेखव पर बुरी तरह आसक्त हो गयी, और विचित्र बात यह है कि उसका नाम भी लीदिया था. इस प्रणय कथा का विवरण मैं आगे जाकर दूंगा)

मिजीनोवा के मन में चेखव के प्रति गहरा अनुराग जाग उठा और वह चेखव को अपनी प्रणयानुभूति से बार-बार पत्र लिखकर अवगत कराने लगी. उन्नीस वर्षीया तरुणी मिजीनोवा लगभग पागल-सी हो उठी. वह चेखव को साथ लेकर पूरे यूरोप का एक चक्कर लगाना चाहती थी. उसने इस आशय का एक पत्र चेखव को लिख भेजा. मास्को के एक दैनिक में यह सूचना प्रकाशित भी हो गयी कि अंतोन चेखव मिजीनोवा के साथ यूरोप के दौरे पर जा रहे हैं. चेखव अपने संबंध में किसी हंगामे की चर्चा से बचना चाहता था—वह मिजीनोवा को टाल गया.

चेखव की ओर से अपने प्रेम के बदले में कोई आमंत्रण न पाकर मिजीनोवा संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए पेरिस चली गयी. किंतु वहां जाकर भी वह चेखव को विस्मृत नहीं कर पायी. उसने आठ अक्तूबर अट्ठारह सौ तिरानवे को एक पत्र चेखव के नाम लिखा '. . . तुम नहीं जानते कि किसी को चाहने का क्य !मतलब है और किसी को एकांतिक रूप से प्यार करके भी न पा सकना कितना दारुण है. मैं मानसिक रूप से विचित्र स्थिति में हूं. लंबे समय से मैं तुम्हें देखना चाहती हूं. मैं जानती हूं, तुम्हें यह सब लिखकर भेजना कितना मूर्खतापूर्ण है. अगर तुम यहां आ सको तो कितना अच्छा हो! मैं

● लीदिया एवीलोव

कात्या (एक नीरस कहानी), ओल्गा इवानोव्ना (तितली), नीना इवानोव्ना (दुल्हन) या 'कुत्तेवाली महिला' की विनम्र महिला पात्र चेखव के कहानियों की विश्वप्रसिद्ध क्लासिक स्त्री चरित्र हैं. ये प्रेम करती हैं, भावुक हैं और जिज्ञासापूर्ण खोज के माध्यम से भविष्य के अंतर में झांककर कुछ पाना चाहती हैं, मगर जल्दी ही उनका मोहभंग हो जाता है और इस धारणा के कई तर्क उनके पास होते हैं कि जीवन व्यर्थ है. इन कहानियों में स्त्री पात्रों की कुंठा, विषाद, उदासी और निरर्थकता के यथार्थवादी 'रिफ्लेक्शंस' की जड़ें क्यों और कहां है, इसकी जानकारी के लिए प्रस्तुत है चेखव के प्रेम प्रसंग, प्रेमिका लीदिया के नाम उनका प्रेमपत्र और बहुचर्चित प्रेमिका लीदिया एवीलोव की संस्मरणात्मक पुस्तक 'चेखव इन माय लाइफ' का एक छोटा-सा अंश जो लेखक के चरित्र के साथ-साथ उसकी रचना-प्रक्रिया को भी समझने में सहायक हैं.

तुम्हें यहां आने के लिए बाध्य भी तो नहीं कर सकती. यदि तुम आ न पाओ तो एक पत्र तो लिख ही देना. मुझसे खफा मत होना . . .'

चेखव ने दस अक्तूबर को ही एक पत्र मिजीनोवा को लिख भेजा. उसके पत्र में सहृदयता और स्वस्ति का गहरा भाव था, 'यह क्या नाटक है? तुम चार महीने बाद तो आ ही रही हो. इधर आओगी तो मुलाकात होगी ही . . .'

चेखव की जुदाई मिजीनोवा सहन न कर पायी. वह चेखव को जितना ही अधिक भूलना चाहती थी, उतनी ही अधिक उसकी याद हावी होती चली गयी. मिजीनोवा ने दो नवंबर को फिर एक पत्र लिखा—'मैं जिस दारुण मनःस्थिति में फंस गयी हूं, उससे उबरना चाहती हूं. तुम्हारे प्यार से मुक्त होने का मेरे सामने कोई मार्ग नहीं है. मेरा उद्धार तभी संभव है, जब तुम मेरी सहायता करो. मेहरबानी करके मुझे अपने घर आने के लिए आमंत्रित मत करना, मुझसे मिलना भी मत. मुझसे न मिलने पर तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन हो सकता है कि इससे तुम्हें भूलना मेरे लिए संभव हो जाये . . . मास्को में रहते हुए एक-दूसरे से आंखें चुराना नामुमकिन नहीं है. मैं जो यह सब खुराफात तुम्हें लिख भेजती हूं, उसके लिए मुझे माफ करना. मैं क्या करूं, मैं एक पल के लिए भी तुम्हें नहीं भूल पाती. इसलिए तुमसे याचना करती हूं कि हमारी मुलाकात न हो. अच्छा विदा!'

चेखव की ओर से पूर्ण निराश होकर मिजीनोवा एक अन्य प्रसिद्ध लेखक पोटापेंको की तरफ झुकी, किंतु पोटापेंको विवाहित और बाल-बच्चेदार आदमी था. मिजीनोवा को पोटापेंको से भी वह गहरे स्पर्श नहीं मिल सके, जिनके लिए वह अर्से से तरसती चली आ रही थी. बीस सितंबर अट्ठारह सौ चौरानवे को उसने चेखव को लिखा—'मैं किसी से भी प्यार करूं, अंत में मेरे हाथ निराशा ही लगती है. मैं तुमसे ही बातें करना चाहती हूं. अब मेरे मन में न तारुण्य बचा है

'तुम जब कभी भी मेरा जीवन चाहो, आओ और ले जाओ'

■ लीदिया एवीलोव

क्या चेखव मुझसे नाराज थे. मैं लगातार सोचती रही थी और किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुंच सकी थी.

पता नहीं कैसे हुआ—मैं एक ऐसे अंधड़ की चपेट में आ गयी कि मेरे सारे के सारे तर्क रखे रह गये. यह अंधड़ था—मेरी आस्था, प्यार और यातना का.

"मैं तुम्हें प्यार करती हूं और केवल तुम्हारे बारे में ही सोचती हूं."

आवेग से भरे ऐसे दो दिन गुजारने के बाद मैं इस निर्णय तक आ गयी. मैंने निश्चय कर लिया. उसी समय मैं एक जौहरी की दूकान पर गयी और घड़ी की चेन के रूप में इस्तेमाल हो सकने वाली एक पुस्तकनुमा पेंडेंट बनाने का आदेश दिया. इस पुस्तकनुमा पेंडेंट के एक तरफ खुदवाया—

'चेखव की कहानियां'

और दूसरे पर—

पृष्ठ 267, पंक्ति 6 और 7

यदि चेखव अपनी पुस्तक खोलकर इन पंक्तियों को देखते तो उन्हें लिखा मिलता—'तुम जब कभी भी मेरा जीवन चाहो, आओ और ले जाओ.'

मैंने घोर निराशा में ऐसा किया था. पेंडेंट के साथ कोई संदेश नहीं भेजा था, परंतु अपना मंतव्य खुदवा लिया था, ताकि यह प्रत्यक्ष स्वीकृति भी न कही जाये. उनके दिमाग में थोड़ी शंका या गुंजाइश बनी रहे, और ऐसी आवश्यकता ही पड़ जाये कि मैं लौटना चाहूं तो कोई रास्ता बचा रहे. मैं उन्हें (चेखव) अपना पूरा जीवन नहीं दे सकती थी. दे देने का अर्थ था, और चार जीवनों की बलि—मेरी और मेरे तीन बच्चों की. और क्या माइकेल ही मुझे बच्चे ले जाने देंगे? या चेखव ही उन्हें स्वीकार कर लेंगे?

■

इसमें संदेह नहीं कि उन्हें मेरा उपहार मिल गया था. मुझे कुछ घटित होने की प्रतीक्षा थी. कई दिन मैंने उत्तेजना और चिंता में गुजारे. उधर से मुझे एक पत्र की प्रतीक्षा थी, जिसके बारे में मैं सोचा करती थी, उसमें क्या लिखा होगा.

पर समय गुजरता गया. न तो चेखव आये न कोई पत्र ही आया.

ओह! मैं अपने ही विचारों को चुभलाते-चुभलाते रुग्ण हो गयी थी.

जो कुछ भी, कभी भी चेखव ने मुझसे कहा था, उन्हीं शब्दों को दोहराते रहना.

मैं उनकी प्रतिभा की तो कायल या प्रशंसक थी ही, बल्कि वह स्वयं जो कुछ भी कहते थे. . .उनके विचार, उनके दृष्टिकोण. . .

एक बार उन्होंने कहा था, "तुममें एक आंतरिक नैसर्गिक नैतिक चेतना है. यह बहुत मूल्यवान है." बात यूं उठी थी कि क्या पति या पत्नी के चयन में गलती हो जाने पर दोनों को अपना जीवन बरबाद कर लेना चाहिए. कुछ लोगों का कहना है, इसमें ठीक-गलत का प्रश्न नहीं है, क्योंकि चर्च ने शादी को मान्यता दी है, यह तोड़ी नहीं जा सकती. कुछ लोगों ने इसका विरोध किया. चेखव ने मुझसे पूछा, "तुम क्या सोचती हो?"

"पहले तो यह सोचना पड़ेगा कि क्या यह कीमत चुकाने लायक है या नहीं?"

"मैं नहीं समझा?" चेखव ने कहा, "क्या कीमत चुकाने लायक है?"

"यह नयी भावना. . .क्या वह त्याग के लायक भी है, क्योंकि बलिदान तो देने ही पड़ेंगे. पहले तो बच्चे के बारे में सोचना चाहिए, अपने बारे में नहीं. वह इस क्रिया से जरूर अपदस्थ होंगे. अपने पर किसी प्रकार की दया नहीं करनी चाहिए, तब समझ में आयेगा कि यह बात त्याग योग्य है भी या नहीं."

इसमें संदेह नहीं था कि मेरा पेंडेंट चेखव को मिल गया था, परंतु उन्होंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया. हमारा पत्र-व्यवहार भी समाप्त हो गया. मैंने उनके बिना ही जीने का निश्चय किया. □

प्रस्तुति : राजी सेठ

और न मैं आकर्षक ही रह गयी हूं. दुर्भाग्य ने मुझे एकदम अकेला छोड़ दिया है. मेरे आसपास एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके साथ मैं अपनी वेदना बांट सकूं. पता नहीं यह सब मैं तुम्हें क्यों लिखती हूं? तुम कोई मनोवैज्ञानिक तो हो नहीं जो मेरे मन का हाल समझ सको! अब मैं ऐसी मन:स्थिति में पहुंच गयी हूं, जहां सिवाय पांव उखड़ जाने के और कुछ नहीं हो सकता. तुम एक शांत, गंभीर और संतुलित मस्तिष्क वाले व्यक्ति हो. तुमने अपना जीवन दूसरे लोगों को अर्पित कर दिया है, तुम्हें अपने लिए किसी की आवश्कता नहीं है. मैं कुछ वक्त इसी हालत में और रह गयी तो मेरा मस्तिष्क विकृत हो जायेगा. मैं तुम्हारे हाथ की लिखी चंद पंक्तियां तुरंत चाहती हूं.

पोटापैंको मिजीनोवा को गहरा प्रेम तो नहीं दे पाया, हां, उसके सहवास से मिजीनोवा को एक बच्ची अवश्य पैदा हो गयी. वह अपनी बच्ची को लेकर पेरिस से मास्को लौट आयी, किन्तु दुर्भाग्य ने उसका साथ नहीं छोड़ा. चौदह नवंबर अट्ठारह सौ छियानवे को मिजीनोवा की बेटी की मृत्यु हो गयी. मिजीनोवा बुरी तरह टूटती चली गयी. सब तरफ से निराश होकर उसने उन्नीस सौ दो में मास्को आर्ट थियेटर में काम करना शुरू कर दिया और उसने नाटक के प्रोड्यूसर सेनिन से विवाह कर लिया. मिजीनोवा की उम्र तब तक बत्तीस साल हो चुकी थी और चेखव भी तब तक ओल्गा निपर नाम की अभिनेत्री से विवाह कर चुका था. लीदिया मिजीनोवा उन्नीस सौ सैंतीस तक जीवित रही, और अंत में मानसिक विकृती से पीड़ित होकर मरी, किंतु अंत समय तक वह चेखव को नहीं भूल पायी. चेखव के नाटक **सीगल** में नीना का अभिनय करके उसने अनेक बार उस मानसिकता को जिया, जो उसने अपने पत्र में चेखव को लिखा था.

अट्ठारह सौ तिरानवे के पतझर में एक अन्य अभिनेत्री जिसका नाम लीदिया यावोरस्काया था, चेखव के संपर्क में आयी और चेखव के प्रति अनुरक्ति अनुभव करने लगी.

प्रेम प्रसंग का शेषांश अगले अंकों में

चेखव का एक प्रेम पत्र अपनी बहुचर्चित प्रेयसी लीदिया के नाम—लीदिया थियेटर में नर्तकी और गायिका थी. अपने नाटकों के प्रदर्शन के संदर्भ में ही चेखव का उससे परिचय हुआ जो धीरे-धीरे घनिष्ठ मैत्री में बदल गया.

मैं तुम्हारे दोनों हाथों को चूमता हूं !

याल्ता: 27 मार्च, 1894

प्रिय लीका!

तुम्हारा पत्र मिला. धन्यवाद!

हालांकि तुम यह कह-कहकर मुझे डरा देना चाहती हो कि तुम जल्दी मर जाओगी और तिस पर ताना भी मारती हो कि इस वजह से मैं तुम्हें छोड़ दूंगा! इस पर भी मैं तुम्हारे स्नेह का आभारी हूं! मेरा अडिग विश्वास है कि न तो तुम मरोगी और न ही कोई तुम्हें छोड़ेगा.

मैं आजकल याल्ता में खूब मजे कर रहा हूं. यहां की सामंतशाही, जिसे तुम कोई और 'संज्ञा' भी दे सकती हो, मेरी बहुत आवभगत कर रही है. मैं नाटक की रिहर्सलें देख रहा हूं. काले, पीले, लाल, भूरे सिरों के मनोरम फूलों के गुच्छों को देखते रहने और गाना सुनने में बड़ा आनंद मिलता है. इसके बावजूद मैं उकता रहा हूं. इसका कारण यह भी है कि यह खयाल एक पल के वास्ते भी मेरे दिमाग से नहीं निकलता कि मुझे कुछ लिखना चाहिए...लिखना चाहिये...लिखना चाहिये!

मेरा मन तो यह चाहता है कि बेकार रहा जाये और एक मोटी जवान लड़की से प्रेम किया जाये. मेरे वास्ते सबसे मजे की बात, बेकार घूमना या बैठे रहना है. मेरी प्रिय रुचि पत्ते, घास वगैरह फालतू चीजें जमा करके बेकार-से काम करना ही है.

प्यारी लीका! जब तुम बहुत बड़ी गायिका बन जाओ और तुम्हें खूब पैसा मिलने लगे, तब तुम मेहरबान होकर मुझसे शादी कर लेना और मुझे सहारा देना, ताकि मेरे लिए सचमुच बिना काम किये भी जी सकना मुमकिन हो सके. और अगर तुम सचमुच ही मरने वाली हो तो यह काम 'बारबरा एबरले' के सुपुर्द कर जाना. बारबरा को तुम जानती ही हो, मैं प्यार करता हूं!

मैंने सुना है कि कुछ दिन पहले तुम पेरिस में थी. फ्रांसीसी लोग कैसे हैं? क्या तुम उन्हें पसंद करती हो? अगर ऐसा है तो तुम खुद को उनसे दूर करो.

मीरोव ने यहां एक नृत्य-नाटक करके पूरे डेढ़ सौ रूबल कमाये हैं. वह एक शेर की तरह दहाड़ा और उसने भारी सफलता प्राप्त की. मुझे इसका खेद है कि मैंने संगीत नहीं सीखा, अन्यथा मैं भी दहाड़ सकता, क्योंकि मेरा गला शुष्क स्वरों से भरपूर है. तब लोग समझते कि मैं बहुत ही बढ़िया अष्टक गा सकता हूं. मैं भी खूब पैसे कमाता और महिलाओं में भी चर्चित हो जाता!

मैं इस बार जून में पेरिस नहीं जाना चाहता. मैं चाहता हूं तुम मिलिखोव आ जाओ. रूस की यादें तुम्हें जरूर वापस खींच लायेंगी. यह तुम अच्छी तरह जान लो, भले एक दिन के लिए ही सही, तुम्हें रूस जरूर आना है, इससे बचने का कोई बहाना नहीं चलेगा.

'पोटापेंको' से तुम अक्सर मिलती रही हो. इन गर्मियों में वह भी रूस पहुंच रहा है. अगर तुम उसके साथ सफर करो तो तुम्हारा काफी खर्च कम हो जायेगा. अपना टिकट उससे खरीदवाओ और पैसे देना भूल जाओ! और ऐसा करने वाली तुम कोई पहली औरत नहीं होगी.

तुम्हारे पत्रों का उत्तर देता रहूंगा. मैं तुम्हारे दोनों हाथों को चूमता हूं!

तुम्हारा—चेखव

विस्मयबोधक चिह्न

बड़े दिन से पूर्व की रात, महाविद्यालय का क्लर्क येफीम फोमिच पेरेक्लादिन जब सोने के लिए बिस्तरे पर लेटा तो गुस्से में था और अपने-आपको अपमानित महसूस कर रहा था.

उसकी पत्नी ने जब इसका कारण पूछा तो वह जोर से दहाड़ा, "मेरी आंखों के सामने से दूर हो जा कमीनी!"

दरअसल वह अभी-अभी कहीं से लौटा था और वहां पर लोगों ने उसके बारे में बहुत-सी अप्रिय और गुस्सा दिलाने वाली बातें कही थीं. आमतौर पर पहले शिक्षा की उपयोगिता के बारे में बातें हो रही थीं जो बाद में सरकारी नौकरों के शैक्षणिक योग्यता के घटिया स्तर तक आ पहुंची. आलोचना हुई, खेद प्रकट किया गया और अंत में मखौल उड़ाया गया. और फिर, जैसा कि रूसी मित्र मंडलियों में आमतौर पर होता है, बातें सामान्य से व्यक्तिगत मामलों पर आ गयीं, "आप अपनी ही मिसाल ले लीजिए येफीम फोमिच," पेरेक्लादिन से संबोधित होते हुए एक युवक ने कहा, "आप अच्छे-खासे पद पर हैं और आप की शैक्षणिक योग्यता क्या है!"

"कुछ नहीं हुजूर, और हमारे यहां शिक्षा की कोई जरूरत भी नहीं है. आपको लिखना ठीक आता हो और...बस..."

"और ये ठीक लिखना आपने सीखा कहां से?"

"आदत पड़ गयी हुजूर, चालीस साल की नौकरी से. हुजूर, बहुत बड़ा अनुभव...शुरू में शुद्ध लिखना बड़ा मुश्किल था, बहुत गलतियां किया करता था, लेकिन बाद में आदत पड़ गयी."

"और विराम चिन्ह?"

"विराम चिन्ह भी ठीक है. . .ठीक-ठीक लगाता हूं."

"हूं!" युवक कुछ सकुचाया, "लेकिन आदत में और शिक्षा में बहुत फर्क है. इससे क्या होता है कि आप विराम चिन्ह ठीक लगा लेते हैं. इससे कुछ नहीं होता भाई सा'ब. जरूरत उनको उचित स्थानों पर लगाने की जानकारी की है. अगर आप अर्द्ध विराम लगाते हैं तो आपको उसकी वजह मालूम होनी चाहिए. ये आपका बिना समझे-बूझे मशीन की तरह लिखना धेले का भी नहीं. ये कुछ नहीं है, ये तो मशीनी उत्पादन है."

पेरेक्लादिन चुप हो गया, बल्कि हल्के से मुस्कराया (युवक एक आला अफसर का लड़का था और वह खुद क्लर्क यानी दसवीं श्रेणी का नौकर), लेकिन अब बिस्तरे पर लेटकर उन बातों को याद करके, उसे रोष और गुस्से का अहसास हो रहा था.

'चालीस साल नौकरी की. . .' वह सोच रहा था, 'किसी ने भी मुझे मूर्ख नहीं कहा और अब इसकी ऐसी की तैसी, कैसे-कैसे आलोचकों से पाला पड़ा है! नासमझ!...यंत्रवत्!...मशीनी उत्पादन!'

'ओफ्फ! लानत है! संभव है मैं तुम्हारे से ज्यादा समझता हूं और इसका मतलब क्या है कि मैं विश्वविद्यालयों में नहीं पढ़ा!'

'मैं जानता हूं. . .मैं समझता हूं. . .' सोते-सोते वह सोच रहा था—'मैं वहां विसर्ग चिन्ह नहीं लगाता जहां अर्ध विराम जरूरी होता है. अत: मैं जानता . . . और छोकरे, पहले जीवन के अनुभव प्राप्त करो, नौकरी करो, फिर बड़ों की नुक्ताचीनी करो.'

'जैसे अर्द्धविराम को ही लें. . .' उसने सोचा—'मैं इनकी उपयोगिता को अच्छी तरह समझता हूं. प्रत्येक का उपयुक्त स्थान बता सकता हूं. उन्हें 'जो', 'जिसका' से और 'कि' से पहले लगाया जाता है. और अगर कागजों में क्लर्कों की गिनती की गयी है तो प्रत्येक को अर्द्ध विराम द्वारा अलग किया जाता है...जानता हूं! पूर्ण विराम कागज के अंत में लगाया जाता है. . .जहां लंबा सांस लेना हो और श्रोताओं को एक नजर देखना हो, वहां भी पूर्ण विराम लगता है. और सभी लंबे स्थानों के बाद भी पूर्ण विराम लगाया जाता है.'

'यह भी जानता हूं'. . . वह सोचता है...'जहां पर अर्ध विराम कम हों और पूर्ण विराम ज्यादा हों, वहां पर सेमीकोलन लगाया जाता है. 'लेकिन' और 'अंत' से पहले मैं हमेशा सेमीकोलन लगाता हूं. . .अच्छा जी, और विसर्ग चिन्ह? विसर्ग चिन्ह 'प्रस्ताव पास किया' और 'फैसला किया' शब्दों के बाद में लगाया जाता है.'

नींद में ही अब सेमीकोलन और विसर्ग चिन्ह अदृश्य हो गये. प्रश्नसूचक चिन्हों की पंक्ति आ गयी. वे बादलों में से कूदकर बाहर आये और कनकन (एक फ्रांसीसी नृत्य) करने लगे.

'वाह! क्या अद्भुत वस्तु है प्रश्नसूचक चिन्ह! अगर आप कहें तो ऐसी हजारों जगहों का नाम बता सकता हूं, जहां इसका उपयोग होता है. वे हमेशा ही लगाये जाते हैं, जबकि पूछताछ की जाती है या फिर, मान लीजिए, कागजों के बारे में पूछा जा रहा है—'फलां साल की शेष राशि कहां गयी है? या क्या पुलिस

विभाग इवानोव या किसी दूसरे को उपयोगी समझता है?'

प्रश्नसूचक चिन्ह हर बात का अनुमोदन अपनी कुंडियां हिलाकर कर रहे थे. फिर एकदम वे सीधे खड़े होकर विस्मयबोधक चिन्हों में परिवर्तित हो गये.

'हूं!. . .इस विरामचिन्ह का उपयोग आमतौर से पत्रों में किया जाता है. 'प्रिय मान्यवर!' या 'महामान्य!' 'पिता!' और 'हितकारी!'. . . लेकिन कागजों में कहां लगाये जाते हैं?'

'उहूं!. . .आखिर उनको कागजों में लगाया कब जाता है? रुको यार. . . हे भगवान, मेरी याददाश्त. . .हूं!'

पेरेक्लादिन ने आंखें खोल लीं और करवट बदलकर सोने लगा. लेकिन वह दुबारा आंखें बंद न कर सका, क्योंकि अंधेरी पृष्ठभूमि में विस्मयबोधक चिन्ह फिर उभर आये.

'भाड़ में जायें. . .लेकिन इनका उपयोग होता कब है?' उस युवक को, जिसको उसने माफ नहीं किया था, अपने दिमाग से निकालने की कोशिश करते हुए उसने सोचा—'क्या मैं सचमुच भूल गया? या तो भूल गया या फिर. . .या फिर उनको कभी लगाया नहीं. . .?

▣

पेरेक्लादिन उन सभी कागजों की विषयवस्तु याद करने लगा, जो उसने अपनी चालीस साल की नौकरी में लिखे थे. जितना वह सोचता था, उतनी ही उसके माथे की त्योरियां बढ़ जाती थीं. अपने बीते समय में उसने एक भी विस्मयबोधक चिन्ह नहीं पाया.

'कैसी अजीब बात है! चालीस साल तक कागज भरे और एक भी विस्मयबोधक चिन्ह नहीं लगाया. . .धत्! लेकिन यह शैतान लगाया कहां जाता है?'

चमकदार विस्मयबोधक चिन्हों की पंक्ति के पीछे युवा आलोचक का मुंह जहरीली हंसी हंसता हुआ दिखायी दिया. खुद चिन्ह भी हंसने लगे और एक बड़े विस्मयबोधक चिन्ह में परिवर्तित हो गये.

पेरेक्लादिन ने सिर को झटका और आंखें खोल दीं. 'शैतान जाने कि' . . .वो सोच रहा था, 'कल सुबह जल्दी उठना है और यह माथापच्ची दिमाग से निकल नहीं रही. . .धत्! लेकिन उसको लगाया कब जाता है? यह रही तुम्हारी आदत! यह रहा तुम्हारा तजुर्बा! चालीस साल में एक भी विस्मयबोधक चिन्ह नहीं!'

पेरेक्लादिन ने छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया और आंखें मूंद लीं, फिर एकदम खोल लीं. अंधेरी पृष्ठभूमि में अब भी बड़ा चिन्ह खड़ा था.

'ओफ्फो! इस तरह सारी रात नहीं सोओगे.'

"मरफूशा!" उसने अपनी पत्नी को आवाज दी जो अक्सर इस बात की शेखी बघारती थी कि वह बोर्डिंग स्कूल में पढ़ी है. "क्या तुम जानती हो प्रिय कि कागजों में विस्मयबोधक चिन्ह कब लगाया जाता है?"

"कैसे नहीं जानती! सात साल बोर्डिंग स्कूल में व्यर्थ नहीं गंवाये. सारी व्याकरण जबानी याद है. यह चिन्ह संबोधनों में, विस्मय के साथ और हर्ष, प्रसन्नता, क्रोध, रोष आदि अनुभूतियों के साथ लगाया जाता है." 'वह. . .वह. . .' पेरेक्लोदिन ने सोचा ... 'उल्लास, रोष, खुशी, क्रोध और दूसरी अनुभूतियां. . .'

महाविद्यालय का क्लर्क सोचने लगा. . .चालीस साल तक वह कागज रंगता रहा, हजारों-लाखों कागज रंगे, लेकिन एक भी ऐसी लाइन याद नहीं आती जो उल्लास, प्रसन्नता, रोष या इसी तरह का कुछ व्यक्त करती हो.

'और दूसरी अनुभूतियां' . . .वह सोच रहा था, 'और कागजों में अनुभूतियों का क्या काम? उन्हें तो वह बगैर किसी अनुभूति के भी लिख सकता है. . .'

एक बार फिर युवा आलोचक का थोबड़ा चमकदार चिन्ह में से झांका और एक भयानक हंसी हंसा. पेरेक्लादिन उठा और बिस्तरे पर बैठ गया. उसका सिर दर्द कर रहा था. माथे पर पसीने की ठंडी बूंदें निकल आयी थीं. . .कोने में रखा लैंप उसे स्नेहभरे नेत्रों से देख रहा था. फर्नीचर सजा हुआ दिख रहा था और ऐसे में जनाना हाथ लहराकर उसके शरीर से टकराया. उसने हाथ की गर्मी महसूस की, लेकिन बेचारे क्लर्क को तो ठंड लग रही थी. निश्चित रूप से टाइफस हो गया था. विस्मयबोधक चिन्ह अब उसकी बंद आंखों में नहीं, बल्कि उसके सामने कमरे में ड्रेसिंग टेबल के पास खड़ा था और उसका मखौल उड़ा रहा था.

"लिखने की मशीन! मशीन!" विस्मयबोधक चिन्ह का भूत फुसफुसाया, जिससे उसके शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गयी—'लकड़ी के ठूंठ!'

क्लर्क ने खुद को रजाई से ढांप लिया, लेकिन रजाई के अंदर भी उसे वह दिखायी दिया. पत्नी की ओर करवट बदली तो उसके पीछे से भी उसे झांकते पाया . सारी रात बेचारा क्लर्क परेशान रहा और दिन में भी भूत ने उसका पीछा नहीं छोड़ा. उसने उसे हर जगह मौजूद पाया. अपने जूतों में, चाय के कप में, अपने पदक में. . .'और दूसरी अनुभूतियां' . . . उसने सोचा, 'कभी भी किन्हीं प्रकार की अनुभूतियों की जरूरत ही नहीं पड़ी. अब मैं अफसर के पास दस्तखत करवाने जाऊं, इसमें अनुभूति क्या करेगी? सब बेकार की बातें हैं. . .अभिवादन करने की मशीन. . .'

जब पेरेक्लादिन बाहर आया और गाड़ी वाले को आवाज दी तो उसे गाड़ीवान के स्थान पर विस्मयबोधक चिन्ह गाड़ी लेकर आता दिखायी दिया. अफसर के कमरे की ओर जाते हुए दरवाजे पर भी उसने दरबान की जगह उसी चिन्ह को खड़े देखा. . .और ये सब उसे हर्ष, रोष, उल्लास और गुस्से के बारे में बता रहे थे. पंखवाली कलम भी विस्मयबोधक चिन्ह बनकर उसे देख रही थी. पेरेक्लादिन ने उसे उठाया, स्याही में डुबाया और लिखा—

'महाविद्यालय—क्लर्क येफीम पेरेक्लादिन! ! !' और इन तीन चिन्हों को लगाकर वो प्रसन्न हुआ, फिर क्रोधित हुआ, खुश हुआ और फिर गुस्से से उबलने लगा.

'ये ले! ये ले!'—कलम को जोर लगाकर तोड़ते हुए वह बड़बड़ाया.

चमकदार विस्मयबोधक चिन्ह संतुष्ट होकर अदृश्य हो गया. □

अनुवाद : वेद कुमार शर्मा

ठिठोली

"नादेन्का पेतरोवना, चलो नीचे की तरफ फिसलें." मैंने कहा. नादेन्का डरती है. उसे अपने पास से लेकर बर्फीली पहाड़ियों के नीचे तक की जगह भयानक और गहरी खोह लगी.

"तुमसे प्रार्थना है," मैंने कहा, "डरने की कोई बात नहीं."

अंत में नादेन्का किसी तरह तैयार हो जाती है. मैं उसके पीले और कांपते हुए शरीर को स्लेज-गाड़ी में बिठाता हूं.

स्लेज-गाड़ी बंदूक की गोली की तरह उड़ रही है.

"मैं तुमसे प्यार करता हूं नादेन्का!" मैंने धीरे से कहा.

स्लेज-गाड़ी की दौड़ धीमी पड़ जाती है. हवा की दहाड़ और स्लेज की भर्राहट अब उतनी भयानक नहीं रही. सांस भी आसानी से ली जा सकती है. अंततः हम नीचे पहुंच गये. नादेन्का को देखकर लगा कि वह न जिंदा है न मुर्दा. एकदम पीली पड़ गयी है और किसी तरह से सांस ले रही है.

थोड़ी देर धीरज रखने के बाद वह अपने सही हालत में आ जाती है और प्रश्नसूचक दृष्टि से मेरी आंखों में देखती है. मैंने ही वे छः शब्द कहे थे या उसे वे हवा और बवंडर के कोलाहल में ऐसे ही सुनायी पड़ गये थे.

वह मेरा हाथ अपने हाथों में ले लेती है, हम पहाड़ों के आस-पास टहलते रहते हैं. स्पष्टतः पहेली उसे परेशान कर रही है.

"चलो एक बार फिर सवारी करते हैं." उसने कहा. एक बार फिर हवा की दहाड़ और स्लेज-गाड़ी की भर्राहट शुरू हुई. मैं दुबारा धीमी आवाज में कहता हूं, "मैं तुमसे प्यार करता हूं नादेन्का!"

उसके चेहरे पर कुछ प्रश्न उठ खड़े होते हैं, 'आखिर बात क्या है? किसने उन शब्दों को कहा? उसने या यह मेरा केवल भ्रम है?'

अस्पष्टता उसे चिंतित कर देती है. वह रुआंसी हो जाती है.

"हम घर नहीं जायेंगे क्या?" मैंने पूछा.

"मुझे. . . .मुझे तो ये सवारी करना बहुत अच्छा लगता है." उसने शर्माते हुए कहा, "क्यों न फिर सवारी करें?"

हम पहाड़ से तीसरी बार नीचे उतरते हैं और मैं देखता हूं कि किस तरह से वह मुझे देख रही है. पहाड़ के बीच पहुंचकर सफलतापूर्वक कहता हूं, "मैं तुमसे प्यार करता हूं, नादेन्का!"

▣

यह पहेली उसके लिए पहेली ही बनी रही. मैं घर छोड़ने के लिए उसके साथ चलता हूं. वह धीरे चलने की कोशिश करती है और मुझसे उन शब्दों को सुनने की प्रतीक्षा करती है.

दूसरी सुबह मुझे एक चिट मिलती है—अगर आज भी फिसलने के लिए जाओ तो मेरे पास अवश्य आना—नादेन्का.

इसी दिन से मैं प्रतिदिन नादेन्का के साथ फिसलने जाना शुरू कर देता हूं. हर बार मैं उन्हीं पुराने शब्दों को धीमे से बोल देता हूं—"मैं तुमसे प्यार करता हूं नादेन्का!"

एक दिन दोपहर को मैं अकेला ही सवारी करने के लिए गया. दूर से ही मैंने देखा कि किस तरह नादेन्का पहाड़ के पास आ चुकी है और उसकी आंखें मेरी तलाश में भटक रही हैं. . .

फिर वह डरती-डरती ऊपर भी चढ़ गयी. . .और वह निश्चित रूप से जानने की कोशिश कर रही थी कि वे सुखद शब्द मेरे बिना सुनाई देंगे या नहीं? नादेन्का ने उन शब्दों को सुना या नहीं. . . .मैं नहीं जानता. . . .मैंने सिर्फ उसे थकावट और कमजोरी की हालत में स्लेज-गाड़ी से बाहर आते हुए देखा.

कुछ दिनों बाद बसंत के महीने शुरू हो गये. हमारा बर्फाच्छादित पहाड़ पूरी तरह से पिघल गया. हमने फिसलना बंद कर दिया. बेचारी नादेन्का को आगे फिर कभी भी वे शब्द सुनने को नहीं मिले और न ही कोई उन्हें बोलने वाला बचा. क्योंकि हवा में उन्हें सुना नहीं जा सकता था और मैं पेतेरबुर्ग (पीटर्सबर्ग) जाने की तैयारी कर रहा था. वहां मैं थोड़े दिन भी रह सकता हूं, और हो सकता है पूरी जिंदगी ही वहीं बिता दूं.

गोधूलि बेला में जाने से पहले मैं एक बगीचे में बैठा था. एक ऊंची बाड़ ने इस बगीचे को नादेन्का के घर से अलग कर दिया था. उसके निराश चेहरे पर बसंत की हवा सीधे ही टकरा रही थी. . . उसका चेहरा उदास पड़ गया और गालों पर आंसुओं की दो-एक बूंदें लुढ़क गयीं. . .बेचारी नादेन्का हवा के सामने अपने दोनों हाथ फैलाकर प्रार्थना कर रही थी कि वह उसे वे शब्द पुनः सुना दे. मैं भी हवा की प्रतीक्षा कर रहा था और धीरे से बोल उठा, "मैं तुमसे प्यार करता हूं, नादेन्का!"

नादेन्का चीख उठी, मुस्करा उठी!

मैं सामान बांधने के लिए चल पड़ा.

यह सब बहुत पहले की बात थी. अब तो नादेन्का की शादी हो गयी और उसके तीन बच्चे भी हैं, लेकिन वह भूल नहीं पायी उस बातों को.

मुझे तो अब भी समझ में नहीं आता है कि मैं क्यों उन शब्दों को कहा करता था, किसलिए ठिठोली किया करता था. . . □

रूपांतर : फूलचंद्र सिंह

शर्त

अपने अध्ययन-कक्ष में चक्कर काटते हुए साहूकार को पंद्रह साल पहले की उस पार्टी की याद आ रही थी, जब बहस प्राणदंड पर होने लगी थी. कुछ मेहमान प्राणदंड के पक्ष में थे और कुछ विपक्ष में. उसे पच्चीस वर्ष के उस युवा वकील का चेहरा याद आया, जिसने कहा था,"प्राणदंड और आजीवन कारावास दोनों ही समान रूप से अनैतिक हैं, पर यदि मुझसे पूछा जाये तो मैं मरने के स्थान पर आजीवन कारावास में रहना ज्यादा पसंद करूंगा."

उसे ताव आ गया था और उसने मेज पर जोर से मुक्का मारते हुए कहा था, "यह बकवास है! मैं बीस लाख की शर्त बदने को तैयार हूं कि तुम पांच साल भी जेल में जीवित नहीं रह पाओगे."

"अगर आप गंभीर हैं तो मुझे आपकी शर्त मंजूर है, मैं पांच साल क्यों, पंद्रह साल तक जेल में जीवित रह सकता हूं."

"पंद्रह साल! मंजूर है! ये सब लोग गवाह हैं कि अगर तुमने जेल में पंद्रह साल गुजार दिये तो मैं बीस लाख दूंगा."

"मुझे भी मंजूर है. आपने दांव पर पैसा लगाया है, मैंने अपनी आजादी."

और आज पंद्रह साल बाद साहूकार इस घटना को याद करता अपने अध्ययन-कक्ष में तेजी से चक्कर लगाता हुआ सोच रहा है, यह शर्त मैंने क्यों बदी थी, फायदा क्या हुआ? जब मैंने शर्त बदी थी, तब बीस लाख का मेरे लिए कोई मूल्य नहीं था, पर आज. . . .आज तो मैं तबाह हो जाऊंगा.

तय हुआ था कि युवक उसके बंगले के एक कोने में स्थित कोठरी में पंद्रह वर्षों तक नजरबंद रहेगा. यह भी तय हुआ था कि इस अवधि में उसे कोठरी की दहलीज लांघने, लोगों से मिलने, उनकी आवाज सुनने, पत्र या समाचार-पत्र पढ़ने की इजाजत न होगी. पर वह पत्र लिख सकेगा, कोई एक वाद्य-यंत्र रख सकेगा, पुस्तकें पढ़ सकेगा, और तंबाकू तथा शराब का सेवन कर सकेगा. बाहरी दुनिया के लोगों को वह कोठरी की एकमात्र खिड़की से देख तो सकेगा, पर उनसे बात नहीं कर पायेगा.

कल आधी रात को पंद्रह वर्ष पूरे होने वाले हैं. शर्तनामे की अंतिम शर्त के अनुसार, यदि बंदी ने रात के बारह बजे से दो मिनट पहले भी जेल से भागने की कोशिश की, तो साहूकार को बीस लाख नहीं देने पड़ेंगे.

पहले साल युवक ने जो पत्र लिखे थे, उनमें वह अत्यंत एकाकीपन अनुभव करता है. दिन भर वह पियानो बजाता रहता था. उसने न तंबाकू की मांग की थी, न शराब की. दूसरे साल, उसने श्रेष्ठ लेखकों की कृतियों की मांग की थी. पांचवें साल फिर पियानो बजाने लगा और उसने पहली बार शराब की मांग की. वह सारे दिन पड़ा सोता रहता था. कभी-कभी रातभर कुछ लिखता था और सुबह होते ही उसे फाड़ देता था.

छठे वर्ष के उत्तरार्द्ध में कैदी ने दर्शन, इतिहास तथा भाषा संबंधी पुस्तकों की मांग की. अगले चार वर्षों में उसने इन विषयों पर छः सौ से अधिक ग्रंथ पढ़ डाले. दसवें वर्ष के अंत में उसने साहूकार को एक पत्र छः भाषाओं में लिखा और कहा कि यदि पत्र में एक भी गलती न हो तो बाग में एक तोप छोड़ें.

ग्यारहवें साल कैदी ने सिर्फ बाइबिल का पाठ किया, पर बारहवें वर्ष उसने अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी रुचि दिखायी. अपने बंदी जीवन के अंतिम दो वर्षों में उसने विज्ञान की पुस्तकों के अलावा, शेक्सपियर और बेकन की कृतियों के अध्ययन में अपना समय बिताया.

साहूकार ने सेफ से बंदी की कोठरी की चाबी निकाली, जिसका इस्तेमाल पिछले पंद्रह वर्षों में नहीं हुआ था. चौकीदार गायब था. उसने सोचा कि यदि मैंने साहस करके इसे मार दिया तो शक चौकीदार पर ही होगा.

कोठरी का सीलबंद दरवाजा खोलकर वह अंदर पहुंचा. बंदी का कंकाल-नुमा शरीर देखकर विश्वास नहीं होता था कि वह केवल चालीस वर्ष का है, पर इस अधमरे प्राणी का गला घोंटने में मुझे सिर्फ आधा मिनट लगेगा और किसी को तनिक भी संदेह न होगा कि यह काम मैंने किया है. वह मेज पर पड़ा एक पत्र उठाकर पढ़ने लगा—कल रात को बारह बजे मुझे मुक्ति मिल जायेगी, पर इस कोठरी को छोड़ने से पहले मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मुझे उन सभी चीजों से घृणा है, जिन्हें तुम्हारी पुस्तकें सुख के लिए आवश्यक मानती हैं, जैसे आजादी, जीवन, स्वास्थ्य आदि. सब भ्रम है, माया है, क्षणभंगुर है. झूठ को सच और कुरूपता को सौंदर्य समझने वालो! तुम पागल हो गये हो, और गलत मार्ग पर जा रहे हो. मैं समझता था कि बीस लाख मिलने के बाद मेरा जीवन स्वर्ग बन जायेगा, पर आज मैं उनपर लात मारता हूं.

पत्र पढ़कर साहूकार रोने लगा. उसे अपने प्रति कभी इतनी घृणा अनुभव नहीं हुई थी, जितनी आज हो रही थी.

अगले दिन सुबह उसके चौकीदार ने उसे बताया कि रात से कोठरी खाली पड़ी है, और कैदी का कोई पता नहीं है.

साहूकार ने बाहर आकर स्वयं कोठरी की जांच की और फिर कैदी के पत्र को सेफ में बंद कर दिया, ताकि उसे बेमतलब अफवाहों का सामना न करना पड़े. □

रूपांतर : हरिमोहन शर्मा

छोटा-सा मजाक

शरद का यह एक चमकीला दिन है. वातावरण में हर कहीं छाया हुआ सख्त और कुरकुरे किस्म का कोहरा है. नादेन्का ने कसकर मेरी बांह पकड़ ली है. उसकी कनपटी पर लहराते घुंघराले बाल और ऊपरी होंठ के किनारे पर तुषार के महीन और चमकीले कण चिपक गये हैं.

हम दोनों एक ऊंची पहाड़ी के ऊपर खड़े हैं, हमारे पांवों के आगे से एक गहरा बर्फीला ढलान नीचे उतरता चला गया है, जिसपर सूरज की रोशनी शीशे की तरह चमक रही है. हमारे पास ही एक स्लेजगाड़ी खड़ी है, जिसकी गद्दी का लाल गलीचा भी धूप में चमकीला हो उठा है.

"हमें इसपर सवारी करनी चाहिए नादेन्का पेत्रोवना!" मैं उससे अनुरोध करता हूं, "सिर्फ एक बार, हमें कुछ नहीं होगा. सचमुच, हम सुरक्षित नीचे पहुंच जायेंगे."

लेकिन नादेन्का डरी हुई है. स्लेज के लिए बनाये गये बर्फ के मार्ग के अंतिम सिरे तक पहुंचने वाला गहरा खड़ा कगार, जो कि नादेन्का के बरसाती जूतों के एकदम आगे से शुरू होता है, उसे बेहद डरा रहा है. मेरे द्वारा स्लेज पर सवारी करने का सुझाव दिये जाने के क्षण से ही वह बार-बार अपना मुंह खोलकर गहरी सांसें भरने लगी है और अपने आपको अशक्त महसूस कर रही है. क्या होगा, यदि वह इस गहरे खड़े कगार पर स्लेज से नीचे फिसलती है? या तो वह मर जायेगी या फिर पागल हो जायेगी. पता नहीं कि क्या हो जायेगा!

"मेरी बात मान लो," मैंने कहा, "तुम्हें डरना नहीं चाहिए. यह तुम्हारी कमजोरदिली और कायरता की निशानी है."

आखिरकार नादेन्का मान जाती है और मैं उसके चेहरे पर देखता हूं कि अपनी जिंदगी की कीमत पर ही जैसे उसने यह स्वीकृति दी है. अब वह पूरी की पूरी पीली पड़ गयी है और बेतरह कांप रही है. मैं उसे स्लेज में बैठाता हूं और अपनी बाहों में भर लेता हूं. अब स्लेज उस गहरे और एकदम सीधे खड़े बर्फ के कगार पर तेजी से फिसलने लगी है.

बंदूक की गोली की-सी तेजी से छूटती हुई स्लेज झपाटे से नीचे उतर रही है. हवा का एक भारी शोर हमें दोनों तरफ से लपेटता हुआ हमारे पीछे छूटा जा रहा है.

हवा लगातार तेज होती हुई हमारे चेहरों पर चिकोटियां काटती किसी दुश्मन की तरह हमारे सिरों को धड़ों से अलग कर देना चाहती है. सामने से पड़ता हुआ हवा का दबाव हमारी सांसों को फेफड़ों के भीतर से खींचकर निकाल रहा है, जैसे किसी दानव ने हमें अपने शक्तिशाली पंजों में जकड़ लिया हो और हुंआं-हुंआं करता हुआ हमें मौत के रास्ते पर लिये जा रहा हो. चारों तरफ की सारी चीजें एक लंबी खिंची हुई और निरंतर भागती चौड़ी पट्टी जैसे दृश्य में बंध गयी हैं और लगता है कि अगले ही क्षण हमारा अंत निश्चित है.

"मैं तुम्हें प्यार करता हूं, नाद्या!" मैं कहता हूं.

स्लेज की चाल अब धीमी हो गयी है और हवा के शोर तथा भागते हुए दृश्यों से पैदा हुआ अनोखा भय भी. हमारी सांस वापस लौट आयी है और अंत में हम नीचे उतर आये हैं. नादेन्का मृतप्राय-सी दिख रही है. वह पीली पड़ गयी है और बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रही है. . . . मैं उसे उठने में मदद करता हूं.

"मैं किसी भी कीमत पर अब दोबारा इस स्लेज पर नहीं बैठूंगी." वह कहती है. उसकी आंखों में जैसे अभी-अभी पैदा हुआ एक प्रश्न है. क्या मैंने उसे वे शब्द कहे थे या कि हवा के शोर के भीतर से उसने उन्हें पकड़ा और सुना था? मगर मैं सिगरेट पीता हुआ, उसकी बगल में, सिर्फ अपने दस्तानों को ध्यानपूर्वक देखने की चेष्टा करता हुआ चुप खड़ा हूं.

वह मेरा हाथ पकड़ लेती है और हम चुपचाप पहाड़ी की तरफ चल पड़ते हैं. यह पहेली उसे बेतरह परेशान कर रही है. क्या वे शब्द वास्तव में कहे गये थे? वाकई में या कि नहीं! हां या ना? यह एक बात हो सकती थी गर्व के लिए, खुशी के लिए और संभवतः पूरे जीवन के लिए भी! यह एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न हो उठा है उसके लिए, दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न!

नादेन्का लगातार एक भेदनेवाली दृष्टि और कुछ उदासी से मेरी ओर एकटक देखती जा रही है. साथ ही वह कुछ संदर्भ-हीन अपरिचित बातें बोलती जा रही है और मेरे कुछ कहने के इंतजार में है. उसका चेहरा इतना पारदर्शी हो उठा है कि उसपर आते-जाते भावों को तुरंत पकड़ा जा सकता है. मैं देख रहा हूं कि वह अपने आप से किस कदर जूझ रही है. वह मुझसे कुछ कहना चाहती है, पूछना चाहती है, परंतु उसके पास उपयुक्त शब्द नहीं हैं. वह असहज हो उठी है. थोड़ी डरी हुई है. एक अजानी खुशी जैसे उसे आगे-आगे घसीट रही है.

"सुनो!" वह मेरी ओर बिना देखे बोल पड़ती है.

"क्या?" मैं उससे पूछता हूं.

"हम दोबारा सवारी करेंगे."

पहाड़ी की चोटी पर हम थोड़ी ही देर में पहुंच गये. एक बार फिर मैं पीली और कांपती हुई नादेन्का को स्लेज में बैठाता हूं. एक बार फिर हम भयानक शोर करती हुई हवा और डरावनी गति से भागते हुए दृश्यों के बीच से गुजरते हुए फिसलते हैं और एक बार फिर जब हवा अपनी गति और शोर के उच्चतम बिंदु पर है और स्लेज अकल्पनीय गति से फिसल रही है, मैं अपनी सांस रोककर कहता हूं, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं नादेन्का!"

जब स्लेज नीचे उतरकर रुक जाती है तो नादेन्का सिर उठाकर ऊपर पहाड़ी की तरफ देखती है, फिर एक लंबे समय तक गौर से मेरे चेहरे को एकटक घूरने लगती है. जैसे बहुत ध्यान-पूर्वक कुछ सुन रही हो और कि जैसे मैं ही उससे कुछ कहूंगा, लेकिन मेरी आवाज उसके उसी परिचित तरीके से सहज और उत्तेजनाहीन है. उसका अंग-अंग यहां तक कि उसका मफलर और ऊनी टोप भी, किसी घबड़ाहट में कांप रहे हैं, और एक अलिखित प्रश्न उसके चेहरे पर छपा है, "यह क्या हुआ? किसने मझे वह कहा था? क्या मैंने? या कि उसने कोई सपना देखा था?"

एक अनिश्चय ने जैसे उसे जकड़ लिया हो और लगातार उसे परेशान और दुखी बना रहा हो. वह बेचारी मेरी किसी भी बात का जवाब नहीं देती. वह अप्रसन्न है, थोड़ा-सा गुस्सा भी और बातचीत में बहुत ही असहज हो उठी है.

"चलो, अब घर लौटें." मैं उससे कहता हूं.

"ओह, लेकिन...मुझे यह सवारी पसंद है" वह शर्माते हुए बोली, "क्या हम एक बार फिर स्लेज से फिसल सकते हैं?"

उसे स्लेज की सवारी पसंद आने लगी है! आश्चर्य ! क्योंकि स्लेज पर बैठते हुए इस बार भी वह उसी तरह पीली पड़ी हुई है, लगातार कांप रही है और डर के मारे उसकी घिग्गी बंधी है.

हम तीसरी बार स्लेज से फिसल रहे हैं. वह लगातार मेरे चेहरे पर नजर गड़ाये हुए है, खासकर मेरे होंठों पर, शायद वे कुछ कहेंगे! मगर मैं अपने मुंह पर रूमाल रख लेता हूं और खांसता हूं. फिर जब हम इस खेल के बीच में पहुंचते हैं तो प्रयत्न-पूर्वक कहता हूं:

"मैं तुम्हें प्यार करता हूं नाद्या!"

तो उसके लिए यह पहेली, पहेली ही रहेगी. नादेन्का खामोश है. वह कुछ सोच रही है, शायद बहुत कुछ. . .मैं उसे स्केटिंग-रिंक से उसके घर छोड़ने चल पड़ता हूं. उसने अपनी चाल बहुत ही धीमी कर दी है. फिर उससे भी धीमी गति से चलते हुए वह इस बात की प्रतीक्षा करती है कि मैं शायद उन शब्दों को दोहराऊंगा और मैं समझता हूं कि वह इस समय पीड़ा में है और अपने भीतर से उठनेवाले भावों को लगातार दबाने की कोशिश कर रही है, "वह हवा नहीं हो सकती. मैं भी नहीं चाहती कि वे शब्द सिर्फ उस हवा ने ही कहे हों."

अगले दिन मुझे नाद्या की भेजी हुई चिट मिली. "अगर तुम स्केटिंग-रिंक जा रहे हो तो रास्ते से मुझे भी लेते चलना —एन!" उस दिन के बाद से मैं रोज नाद्या के साथ स्केटिंग-रिंक जाने लगा. और जब हम स्लेज से फिसल रहे होते और इस खेल के बीच में पहुंचते तो मैं अपनी सांस रोक कर उन्हीं शब्दों को दोहराता, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं नाद्या!"

जल्दी ही नाद्या को स्लेज के खेल का नशा हो गया.

यह सच है कि अब भी स्लेज से फिसलना उतना ही खतरनाक और डर पैदा करने वाला है, पर खतरे और डर की भावना प्यार के उन थोड़े से शब्दों के वशीभूत होकर अपना प्रभाव खोने लगी है. वे शब्द अब भी नाद्या को परेशान करते हैं और उसकी आत्मा को बेचैन कर जाते हैं. दो चीजें आज भी वही हैं—हवा और मैं. . .वह नहीं जान पाती कि हम दोनों में से कौन अपने प्यार को कबूल करता है उन जादूभरे शब्दों के माध्यम से. मगर लगता है कि नाद्या अब इस बात की परवाह नहीं करती. उसके ऊपर एक उन्माद हावी हो गया है. वह भूल चुकी है कि कहां से उसे यह नशा मिला है.

▣

एक दिन दोपहर को मैं स्केटिंग-रिंक की तरफ अकेला ही बढ़ता हूं. भीड़ के बीच मुझे नादेन्का अकेली दिखाई पड़ती है. मैं देखता हूं कि वह उसी पहाड़ी की तरफ बढ़ रही है. वह चारों तरफ मुझे खोजती है . . .तब, डरते हुए वह स्लेज की तरफ बढ़ती है. उफ! अकेला इसपर बैठना कितना खतरनाक है, कितना ज्यादा खतरनाक. वह पलंग की चादर की तरह सफेद पड़ गयी है और कांप रही है जैसे कि सूली की तरफ बढ़ रही हो, लेकिन उसकी चाल में कोई हिचक नहीं है और उसने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा है. . .अंततः उसने फैसला कर ही लिया है कि किसी भी कीमत पर वह उन शब्दों को, उन अद्भुत शब्दों को मेरी अनुपस्थिति में भी जरूर-जरूर सुनेगी. मैं देखता हूं कि वह उसी तरह पीली है, भय के मारे उसका मुंह खुल गया है, मगर वह स्लेज में बठ गयी है और जैसे किसी आखिरी दांव पर उसने अपनी सारी जिंदगी लगा दी है. वह अपनी आंखें बंद कर लेती है और स्लेज फिसल पड़ती है. . .ज ज ज ज्ज स्लेज के पहिये आवाज करते हैं. मैं नहीं जानता कि नाद्या उन शब्दों को सुन रही है या नहीं, मैं सिर्फ देखता हूं कि वह स्लेज से थकी हुई और कमजोर होकर उठ रही है. और कोई भी उसका चेहरा देखकर यह भांप सकता है कि उसे खुद नहीं पता कि उसने कुछ सुना है कि नहीं. जब वह असाधारण रूप से तेज गति से उस सीधे खड़े हुए बर्फ के कगार पर फिसल रही थी तो भय ने उसे इस कदर जकड़ रखा था कि मुश्किल से ही वह कुछ सुन पाती—कोई भी स्पष्ट आवाज या वाक्य; और उनको समझ पाना तो और भी कठिन होता.

इस तरह मार्च आ पहुंचा, यानी वसंत. धूप एक साथ गर्म और मुलायम हो उठी. हमारी पहाड़ी काली पड़ने लगी, उसकी चमक खो गयी और धीरे-धीरे सारी बर्फ पिघल गयी. हमारा स्लेज पर फिसलना बंद हो गया. बेचारी नादेन्का के लिए उस जगह अब कोई अद्भुत शब्द दोहराने वाला नहीं है. हवा भी अब बहनी बंद हो गयी है और मुझे सेंट पीटर्सबर्ग जाना है, लंबे समय के लिए, शायद हमेशा के लिए.

पीटर्सबर्ग रवाना होने से एक-दो दिन पहले शाम के धुंधलके में मैं एक छोटे-से बगीचे में बैठा हूं. वह बगीचा ऊंचे नुकीले सरियों वाले फेंस द्वारा उस जगह से अलग होता है, जहां नादेन्का रहती है. अभी सिसकारी छोड़ने वाली ठंड बाकी है. पेड़ों की जड़ों में अब भी बर्फ के टुकड़े दिखाई दे जाते हैं. सारे पेड़ भर चुके हैं,

मंसूबा

मैंने अपना हैट झटका देकर सिर की पुश्त की ओर से उतारा और उसके अध्ययन-कक्ष में प्रवेश कर गया. प्रिंस मशीरस्की एक हाथ से अपनी भौंहों को बल देते हुए मरोड़ रहा था और दूसरे हाथ से ऊंची सोसायटी के जीवन पर एक दिलचस्प उपन्यास लिख रहा था.

"श्रीमानजी! आप क्या सोच रहे हैं?" मैंने उचित सम्मान के साथ पूछा तो वह मेरी ओर मुड़कर बोला, "तुम कानून का आदर करते हो या नहीं?"

"श्रीमानजी! चूंकि आप से बातचीत कर रहा हूं, इसलिए मैं कानून का आदर करने वाला नागरिक हूं."

"इस अवस्था में मैं तुम्हें अपने विचारों में भागीदार बना सकता हूं नवयुवक! बड़े सोच विचार से मैं एक मंसूबा तैयार कर रहा हूं, जिसे निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी. मुझे ऐसे लोगों की जरूरत है, जो चंदा ले सकें. समझे! खैर, यह तो तुम जानते ही हो कि लोग मेरा सम्मान नहीं करते. मेरे दुश्मनों की संख्या बहुत अधिक है. रूस और उसके लोग अभी तक जहालत और अशिक्षा के शिकार हैं. यह देश और इसके लोग उपकारियों की कद्र करना नहीं जानते.

मैं एक मंसूबा बना रहा हूं, जिसके अधीन मैं व्यक्तिगत ऋण प्राप्त करूंगा, यही कोई तीन लाख रुपये का ऋण. इस ऋण से मैं ऐसे लोगों की सेवाएं प्राप्त करूंगा, जो मुझसे चंदा ले सकें. मैं हर आदमी को आधा रूबल चंदा दूंगा. है न अजीब बात! कोई छह लाख व्यक्ति यह चंदा प्राप्त कर सकेंगे. हां, तब फिर मैं इस रकम से और इन चंदा लेने वालों की बदौलत और ऋण प्राप्त करूंगा और फिर इस रुपये से कितनी ही पत्र-पत्रिकाएं जारी करूंगा. इन पत्र-पत्रिकाओं पर मेरी इजारेदारी होगी. इनके द्वारा मैं अपना उद्देश्य प्राप्त करूंगा और इसका परिणाम यह निकलेगा कि मैं लोगों की नजरों में आ जाऊंगा. यह तो तुम्हें पता ही है कि मेरे दुश्मन मुझे अपनी नजरों में ही नहीं लाते हैं, और वे कसम खा चुके हैं कि वे मुझे बरबाद करके रहेंगे और मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा."

"यदि आप ऋण प्राप्त करने में असफल रहे तो. . . .?"

"तब मैं दादागीरी शुरू कर दूंगा."

मैंने इस मंसूबे को सराहा. ब्रांडी का एक गिलास पिया और प्रिंस से इजाजत लेकर चला आया. □

रूपांतर : सुरजीत

और हवा में वसंत की महक भरने लगी है और कौए अपने घोंसलों में लौटते हुए जोर-जोर से चिल्ला उठते हैं. मैं फेंस की तरफ बढ़ता हूं और एक छितरी हुई झाड़ी के बीच से अंदर झांकता हूं. बहुत देर बाद दिखता है कि नादेन्का दरवाजे से बाहर निकल-कर पोर्च पर आ खड़ी हुई है. वह एक खिन्न और उदास दृष्टि से ऊपर फैले हुए आसमान को निरुद्देश्य ताकती है. उसके पीले लंबोतरे चेहरे पर वसंत की हवा फड़फड़ा रही है. यह हवा उसे उस पहाड़ी की याद दिलाती है, जहां उसने वे पांच रहस्यमय शब्द सुने थे. उसके चेहरे पर दुख की एक गहरी छाया पड़ने लगती है और एक आंसू उसके गाल पर लुढ़क पड़ता है. . .वह बेचारी अपने दोनों हाथ उठाकर उन्हें हवा में फैला लेती है जैसे कि एक अनुरोध हो हवा से कि वह फिर से उसके लिए वे पांच जादू-भरे शब्द कहीं से बटोर लाये. मैं हवा के किसी तेज झोंके के आने की प्रतीक्षा करता हूं और जब वह पहाड़ी की तरफ से शोर मचाता हुआ आता है तो थोड़ी-सी ऊंची आवाज में कह उठता हूं, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं नादेन्का!"

हे भगवान! यह अचानक नादेन्का को क्या हो जाता है कि वह खुशी से चीख उठती है. उसका पूरा चेहरा शाम की रोशनी में रक्तिम होकर चमकने लगता है. उसने बहती हुई हवा में बहुत खूबसूरती से अपने दोनों हाथ फैला दिये हैं. और तब मैं उसे वैसा ही छोड़कर अपना सामान बांधने चल पड़ता हूं.

इस घटना को बीते हुए बहुत लंबा अर्सा हो गया. आज नादेन्का एक शादी-शुदा औरत है. उसके माता-पिता ने खूब देखभाल कर याकि नादेन्का की अपनी मर्जी से, कुछ भी हो, क्योंकि इस बात से कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ता, उसकी शादी कचहरी के एक आला अफसर से कर दी. आज नादेन्का के तीन बच्चे हैं. वह आज तक भी नहीं भूली कि किस तरह हम दोनों उस पहाड़ी पर स्लेज की सवारी करने जाते थे और हवा उसके कानों में रहस्यमय ढंग से वे अद्भुत शब्द दोहराती थी, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं नादेन्का!" और यह उसके जीवन की सबसे अधिक मर्मांतक और खूबसूरत अकेली यादगार है.

जहां तक मेरा सवाल है, अब मैं बूढ़ा हो चला हूं. और यह नहीं समझ पाता कि क्यों मैंने वे शब्द कहे थे. क्यों मैंने नादेन्का के साथ यह मजाक किया था. □

रूपांतर : अवधेश कुमार

दुष्ट बालक

चेखव की कहानियां : चौदह

सुंदर डील-डौलवाला जवान इवान और उठी नाकवाली आन्ना टेढ़े-मेढ़े किनारे से नीचे की ओर एक बेंच पर बैठ गये. बेंच पानी के बिल्कुल पास था, बेंत की हरी झाड़ियों के झुरमुट में. क्या बढ़िया जगह है... बैठे नहीं कि सबकी आंखों से दूर! मछलियां और मकड़-काई ही...पानी में बिजली की तरह दौड़ती हुई आपको देख सकती हैं.

"मुझे खुशी है कि आखिर हमें एकांत मिल ही गया." इवान ने पीछे मुड़ते हुए देखकर कहा, "आन्ना, मैं तुम्हें बहुत कुछ बताना चाहता हूं... बहुत-सी बातें! ....जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा ...'मछली फंस रही है'.... तब मैं समझ गया कि मेरे जीने का तात्पर्य क्या है, कि मेरा आराध्य कहां है! .....'यह शायद बड़ी मछली फंस रही है'... तुम्हें देखकर मैंने पहली बार प्रेम किया, प्रेम में पागल हो गया! प्रगाढ़ प्रेम!... 'रुको, पकड़े रहो.... फंस जाने दो'.... मेरी प्यारी, बतलाओ, तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं, क्या मैं... मैं इसके योग्य नहीं हूं! इसके विषय में मैं सोच भी नहीं सकता, क्या मैं आशा कर सकता हूं कि.... 'खींचो'...!

"हे भगवान, यह तो कवई मछली है. अहा! जल्दी करो....लो छूट गयी!"

मछली कांटे से निकलकर घास में फड़फड़ाती वापस पानी में कूद गयी.

मछली के पीछे दौड़ते हुए इवान ने अचानक आन्ना का हाथ पकड़ लिया और सहसा वैसे ही उसे अपने होंठों से भी छुआ दिया. .. आन्ना ने हाथ झटककर हटा लिया, परंतु तब तक तो सब कुछ हो चुका था.... मुंह अपने-आप ही चुंबन दे चुका था. सब कुछ अकस्मात घटित हो गया. एक के बाद एक फिर दूसरा चुंबन, फिर वचन और आश्वासन ...! सुखद क्षण! परंतु इस सांसारिक जीवन में निर्बाध सुख कहीं भी नहीं है. सुखद अवसर अपने में ही विष भी लिये रहता है, या फिर कोई बाहरी वस्तु उसे विषाक्त बना देती है. ऐसा ही इस बार भी हुआ. जब ये दो तरुण चुंबन ले रहे थे, सहसा किसी की हंसी सुनायी दी. उन्होंने नदी की ओर देखा और स्तंभित रह गये. कमर तक पानी में डूबा एक बालक खड़ा था. यह था आन्ना का भाई कोल्या.

"हूंऽऽ! ..चूमा था न? ठीक! मां से तुम्हारी शिकायत करूंगा."

शर्म से लाल इवान लड़खड़ाते स्वर में बोला, "मुझे आशा है कि भलामानस होने के नाते तुम... ! देखो... इस तरह छुपकर देखना बुरी बात है! फिर शिकायत करना तो निरी अधमता है, दुष्ट और दुर्जन लोगों का काम है यह! ....मुझे विश्वास है कि ईमानदार और कुलीन होकर तुम....."

"अच्छा, एक रूबल दो, फिर नहीं कहूंगा...नहीं तो कह दूंगा."

इवान ने जेब से एक रूबल निकालकर कोल्या को दे दिया. कोल्या ने अपनी गीली मुट्ठी में रूबल दबाया, सीटी बजायी और चल दिया. इस बार उन तरुणों ने फिर एक दूसरे को नहीं चूमा.

अगले दिन इवान, कोल्या के लिए शहर से रंग और गेंद लाया. बहन ने उसे दवा की खाली डिबिया दे दी. इसके बाद कुत्ते के मुंह वाले कमीज के स्टड भी भेंट चढ़ाने पड़े. दुष्ट बालक को इस सब में बड़ा आनंद आ रहा था. वह और भी कुछ प्राप्त करने की लालसा से उनका पीछा करता. जहां वे दोनों जाते, वह भी पहुंच जाता. क्षण भर को भी उन्हें अकेला नहीं छोड़ता.

"नीच कहीं का!" इवान दांत पीसकर रह जाता, "इतना छोटा-सा है पर नीचता में कितना बड़ा! इसका क्या होगा आगे चलकर!"

सारा जून कोल्या ने इन बेचारे प्रेमियों को परेशान किये रखा. वह शिकायत करने की धमकी देता रहता, उनके पीछे लगा रहता और मनचाही चीजें मांगता. इतना सब भी उसके लिए पर्याप्त नहीं था. आखिर वह जेब-घड़ी पर उतर आया. क्या किया जाये! घड़ी के लिए भी वचन देना पड़ा!

एक बार भोजन के समय जब वेफर्स दिये जा रहे थे तो कोल्या अचानक ठहाका मारकर हंस पड़ा और इवान को आंख मारकर कहने लगा, "कह दूं?"

इवान बुरी तरह लाल पड़ गया और वेफर के बदले मुंह में नैपकिन डाल गया. आन्ना दूसरे कमरे में भाग गयी.

ये दोनों तरुण अगस्त के अंत तक ऐसी ही स्थिति में रहे...यानी उस दिन तक जब इवान ने आखिर आन्ना को विवाह का प्रस्ताव कर ही दिया. कितना सुखद दिन था वह! भावी दुल्हन के माता-पिता से बात करके, उनकी स्वीकृति मिल जाने के बाद इवान सबसे पहले बगीचे की तरफ दौड़ा-दौड़ा गया और कोल्या को ढूंढ़ने लगा. उसे ढूंढ़ निकालने की इवान को इतनी खुशी थी कि बस चिल्लाने की कसर रह गयी. उसने उस दुष्ट बालक को कान से पकड़ा. आन्ना भी कोल्या को ढूंढ़ती हुई दौड़ी-दौड़ी वहां आ पहुंची. उसने उसे दूसरे कान से पकड़ लिया. वह देखने लायक दृश्य था...दोनों प्रेमियों के चेहरे कितने प्रसन्न थे. कोल्या रो रहा था और उनसे विनती कर रहा था, "उफ, ओफ! माफ कर दो मुझे, हाथ जोड़ता हूं! देखो, तुम कितना प्यार करते हो मुझे! फिर कभी ऐसा गलत काम नहीं करूंगा!"

इसके बाद दोनों ने स्वीकार किया कि दुष्ट बालक के कान खींचने में जो आनंद उन्हें मिला वैसा सुख कभी एक दूसरे-के प्रेम में खोजाने पर भी नहीं मिला! □

रूपांतर : हेमचंद्र पांडे

चेखव का एकांकी

त्रासदी या प्रहसन

मुख्य पात्र——

ईवान ईवानिच तोलकाचोव : एक परिवार का मालिक.
अलेक्सेयी अलेक्सेयेविच मुराशकिन : उसका मित्र.

पीटर्सबर्ग. मुराशकिन का कमरा. आराम कुर्सियां. मुराशकिन मेज के पास बैठा हुआ है. तोलकाचोव लैंप के लिए शीशे का बैलून, खिलौने की साइकिल, तीन ढक्कन सहित डब्बे, फ्रॉकों का एक बहुत बड़ा गट्ठर, बीयर की बोतलों से भरा एक थैला और बहुत-सारे छोटे-छोटे बंडल लिये प्रवेश करता है. वह निराश, थका हुआ सोफे पर धम्म से गिरता है.

मुराशकिन : नमस्ते ईवान ईवानिच! बड़ी खुशी हुई तुमसे मिलकर. आ कहां से रहे हो?

तोलकाचोव : **(कठिनाई से सांस लेते हुए)** मेरे प्यारे दोस्त, साथी.... मेरी तुमसे एक प्रार्थना है... बिनती करता हूं....कल तक के लिए ये अपनी पिस्तौल मुझे दे दो. तुम्हें दोस्ती की कसम!

मुराशकिन : पिस्तौल का क्या करोगे?

तोलकाचोव : जरूरत है...ओह, मेरे भाई...जरा-सा पानी दो....जल्दी करो!...जरूरत है...रात में अंधेरे जंगलों से होकर जाना है. इस तरह मैं... हर हालत में! उधार दे दो मेरे साथी.

मुराशकिन : अरे! क्या बक रहे हो ईवान ईवानिच! अंधेरे जंगल जंगली भूत का क्या बिगाड़ सकते हैं! जरूर तुमने कुछ बुरा सोच रखा है! क्या हो गया है तुम्हें? तुम मूर्ख हो गये हो क्या?

तोलकाचोव : ठहरो, दम लेने दो...ओ मां...! दोस्ती की कसम, कुछ मत पूछो, पिस्तौल दे दो, बिनती करता हूं!

मुराशकिन : ईवान ईवानिच, क्या बुजदिली है? एक परिवार के मालिक हो, सरकारी अफसर हो! शर्म करो!

तोलकाचोव : कैसा मालिक? मैं शहीद हूं! एक बोझा ढोनेवाला पशु, नीग्रो, दास हूं! परलोक सिधारने का इंतजार कर रहा हूं! मैं चीथड़ा हूं, बुद्धू हूं, बेवकूफ हूं! मैं जिंदा क्यों हूं? किसलिए? (उछल पड़ता है) तुम्हीं बताओ मुझे, किसलिए मैं जिंदा हूं? यह दिन-रात चलने वाली शारीरिक और मानसिक ताड़ना, किस बात के लिए ? किसी सिद्धांत के लिए शहीद होने की बात तो मेरे समझ में आती है, लेकिन महिलाओं के पेटीकोट और लैंप के बैलून के लिए शहीद होना—खुदा बचाये!

मुराशकिन : तुम चिल्लाओ मत, बैठो! सुनो!

तोलकाचोव : बैठकर सुनूं या खड़ा होकर, मेरे लिए सब बराबर है. तुम नहीं दोगे पिस्तौल तो कोई दूसरा देगा. बस मुझे किसी भी हालत में जिंदा नहीं रहना है! यह पक्का है.

मुराशकिन : ठहरो, तुमने मेरा सिर चाट लिया है! ठंडे होकर बोलो! मैं अभी भी नहीं समझ पा रहा हूं कि तुम्हारे जीवन में बुराई क्या है?

तोलकाचोव : क्या है? तुम पूछते हो क्या है? बताता हूं, कृपा करके सुनो! कृपा करके! जैसा कि तुम जानते हो कि 10 बजे से लेकर चार बजे तक तो दफ्तर में तुरही बजानी पड़ती है. वहां दमघोंट गर्मी, मक्खियां और अव्यवस्था फैली हुई है. मेरे भाई! सेक्रेटरी ने छुट्टी ले ली है. खरापोव अपनी शादी करने चला गया है. दफ्तर के सभी छोटे-छोटे कर्मचारियों ने दाचा में भीड़ लगा रखी है. ओह...समझो अगर तुम दाचा में हो तो तो इसका मतलब तुम गुलाम हो, कूड़ा हो, बर्फ का लटकता हुआ टुकड़ा हो और मुर्गी के बच्चे की तरह दया पर जिंदा हो. अभी मुझे तमाम कामों को पूरा करने के लिए भागना है, और हमारे दाचा में एक बड़ी प्यारी-सी आदत बनी हुई है, अगर कोई दाचा से शहर जाने लगे तो पत्नी की तो बात ही छोड़िए, दाचा के सारे कमीने लोग बड़े ही अधिकार के साथ तुम्हारे ऊपर एक हजार काम थोप देंगे... .रुकिए मैं आपको पढ़कर ही सुना देता हूं. **(थैली से एक चिट निकालता है और पढ़ता है)** लैंप के लिए बैलून, एक पौंड सूअर के मांस का कीमा, पांच कोपेक का लौंग और किशमिश, मीशा के लिए आरंडी का तेल, पिल्ले के लिए दस पौंड शक्कर, तांबे की चिलमची, कार्बोलिक अम्ल, कीटाणु-नाशक पाउडर, दस कोपेक का स्नो- पाउडर, बीस बोतलें बीयर की, इत्र और बयासी नंबर की चोली मैडम शानशो के लिए....उफ्! मिशीनो को पतझड़ के लिए एक कोट और गालोश जूते चाहिए. यह तो रहा बीवी और परिवार का आदेश. अब सुनिए सगे-संबंधियों और पड़ोसियों

के काम...तो समझ गये न. दौड़-धूप इस तरह से तुम्हें तोड़ देती है कि बाद में सारी रात हड्डियां चटचटाती हैं, मगरमच्छ जैसी सूरत बन जाती है. खैर, सारे काम पूरे हो गये. खरीददारी भी हो गयी, लेकिन अब संगीत के स्वरों की तरह इन भिन्न-भिन्न सामानों को एक जगह बांधोगे कैसे! फूटकर छितरा ही जायेगा. अब आगे सुनिए! मैं दाचा में पहुंचता हूं. वहां तुम्हारे धर्मनिष्ठ कार्य का अच्छा फल मिलना चाहिए, सही ढंग का खाना-पीना होना चाहिए—मैं सही कह रहा हूं कि नहीं? लेकिन वहां ऐसा कुछ नहीं होता. बीवी बहुत पहले ही प्रतीक्षा करना बंद कर देती है. इसके अलावा—तुम्हारे बारे में बिना सोचे, दया-धर्म को ताक पर रखकर कहीं नाटक या किसी नाच की टोली में चली जायेगी. तुम विरोध भी नहीं कर सकते, क्योंकि तुम पति हो. दाचा की भाषा में 'पति' शब्द का अर्थ होता है, 'गूंगा पशु', जिसके ऊपर जितना चाहे बोझा लाद दो और हांकते जाओ.दीवारों के पीछे बच्चे चीखते तक नहीं, पत्नी भी नहीं होती और शुद्ध अंतरात्मा....अच्छा होता कि ये शब्द ही न होता. तुम सोना शुरू करोगे और एकाएक सुनोगे, धत्! मच्छर! **(उछल पड़ता है)** मच्छरों का तीन बार धावा हो चुका होता है. तुम छुटकारा लेना चाहोगे लेकिन तब तक तुम्हारा ऐसा सिरका बना दिया जाता है कि तुम पूरे घंटे भर अपने हाथ, नाक खरोचते रहोगे. इतने में पत्नी नाटक की रटी-रटायी भूमिका की तरह चिर-परिचित आवाज में चिल्लायेगी—दिन में सोता है और रात को संगीत-समारोहों का शौक करता है. अरे मेरे राम! ये रटी-रटायी आवाज—ऐसी ताड़ना है जिसकी तुलना में मच्छर भी नहीं ठहर सकते. जी करता है, उनका नाश कर दूं. मैं एक जादू करता हूं—अपनी उंगलियों से कानों के पास पीटता हूं, और तब तक पीटता रहूंगा जब तक कि वे अलग नहीं हो जाते. आह, मुझे थोड़ा और पानी दो....अरे भाई....नहीं सह सकता....ओह....इस तरह थोड़ा-सा सोकर छः बजे ही उठ जाता हूं, स्टेशन की तरफ गाड़ी के लिए मार्च करता हूं, दौड़ता हूं और डरता हूं कि कहीं लेट न हो जाऊं. जानते हो, गंदगी, कोहरा, ठंडक...ओह! ऐसा है मेरा जीवन! मेरे भाई! अपने दुश्मन के भी लिए मैं ऐसा जीवन नहीं चाहता! सांस उखड़ती है, श्वासनली में जलन होती है,हर समय डर लगा रहता है. पता नहीं कहां तक ले जायेगा ये दाचा का जीवन! अरे, यह कोई प्रहसन नहीं, त्रासदी है! सुनो, अगर पिस्तौल नहीं दे रहे तो सहानुभूति ही रखो.

मुराशकिन : मेरी तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति है.

तोलकाचोव : वो तो मैं देख रहा हूं, कैसी सहानुभूति है... विदा. अभी मछली खरीदनी है, सूअर का मांस ....मंजन की अभी और जरूरत है. बाद में रेलवे स्टेशन भी जाना है.

मुराशकिन : तुम्हारा दाचा है कहां पर?

तोलकाचोव : दोखलाया (मुर्दा) नदी के किनारे.

मुराशकिन : (खुशी में) सचमुच? सुनो, वहीं दाचा में ओल्गा पावलोव्ना फिनबेर्ग रहती है, जानते हो?

तोलकाचोव : जानता हूं और परिचित भी हूं.

मुराशकिन : तुम भी क्या खूब हो? देखो, क्या बात है! कितना सही अवसर है, तुम्हारे तरफ से यह कैसा अच्छा...

तोलकाचोव : ऐसी भी क्या बात है?

मुराशकिन : मेरे प्रिय दोस्त, साथी...एक छोटा-सा काम नहीं करोगे मेरा! दोस्ती की कसम. वचन दो कि पूरा करोगे.

तोलकाचोव : ऐसी भी क्या बात है?

मुराशकिन : इसे नौकरी नहीं दोस्ती समझना! विनती करता हूं प्यारे दोस्त. सबसे पहले तो ओल्गा पावलोव्ना को सलाम कहना और फिर बताना कि मैं जिंदा और स्वस्थ हूं. दूसरी बात यह है कि उसे एक छोटी-सी चीज देनी है. उसने मुझे एक सिलाई मशीन खरीदकर किसी के द्वारा पहुंचाने को कहा था...इसे लेते जाओ मेरे साथी. इसी अवसर पर साथ ही साथ उस कैनरी चिड़िया को भी पिंजड़े सहित लेते जाओ...थोड़ा खतरा जरूर है कि कहीं फाटक ही न टूट जाये...क्या हो गया है तुम्हें, ऐसे कैसे देख रहे हो मुझे?

तोलकाचोव : सिलाई मशीन ...कैनरी चिड़िया पिंजड़े सहित ...गाने वाली चिड़िया...छोटी-छोटी चिड़िया...

मुराशकिन : अरे ईवान ईवानिच, क्या हो गया है तुम्हें? तुम गुस्से से लाल क्यों हो गये हो?

तोलकाचोव : (पैर पटकता हुआ) इस मशीन को फेंको यहां से. पिंजड़ा कहां है? ऊपर पड़ा है! आदमी खाते हो! चीर डालूंगा, जान से मार डालूंगा! (मुट्ठियां बांधे हुए) खून का प्यासा हूं! खून का! खून का!

मुराशकिन : तुम पागल हो गये हो क्या?

तोलकाचोव : (उसके पास आते हुए) खून का प्यासा हूं! खून का!

मुराशकिन : (डरा हुआ) यह पागल हो गया है (चिल्लाता है) पेतरूशका, मारिया! कहां हो सब? लोगो, बचाओ!

तोलकाचोव : **(कमरे में उसके पीछे दौड़ता है)** खून का प्यासा हूं! खून का!...! □

रूपांतर : फूलचंद्र सिंह

चेखव के कथा-गुरु :

जोला, मोपासां और फ्लाबेयर

▣ सुरेश उनियाल

एक अच्छा लेखक होने के साथ-साथ चेखव एक बहुत अच्छे पाठक भी थे. उनका पढ़ने का क्षेत्र भी बहुत विस्तृत था. उपन्यास एवं नाटकों के साथ-साथ संदर्भ-पुस्तकें, औषधियों के प्रपत्र, प्राचीन व आधुनिक साहित्य, विदेशी और रूसी लेखक, सभी को वे समान रुचि से पढ़ते थे. इस सबके बावजूद उनको आधुनिक फ्रांसीसी लेखकों ने बहुत प्रभावित किया. इवान बुनिन के अनुसार, मोपासां, फ्लाबेयर और ताल्स्तोय को चेखव बहुत पसंद करते थे. ये तीनों और चौथे एमिल जोला को हम उनके कथा-गुरु मान सकते हैं. आधुनिक फ्रांसीसी प्रकृतिवादियों से चेखव पूरी तरह सहमत थे.

यों चेखव के पहले गुरु थे डार्विन. जोला द्वारा प्रतिपादित साहित्यिक सिद्धांतों को समझने में डार्विन से उन्हें काफी सहायता मिली. मनुष्य के भीतर की पाशविक वृत्तियों को पहचानना उन्होंने डार्विन से सीखा. किसी सीमा तक डाक्टर चेखव को भी लेखक चेखव का गुरु माना जा सकता है. चेखव के शुरू के पत्रों से डार्विन के प्रति उनकी दिलचस्पी का पता चलता है. अपने भाई को एक पत्र में उन्होंने लिखा : "मैं उनकी पद्धतियों का भयानक रूप से कायल हूं." तीन साल बाद वे एक पत्र में लिखते हैं : "मैं आजकल डार्विन को पढ़ रहा हूं, भौतिकवाद का तो वह खजाना है!" चेखव अगर अपने पात्रों में कोई अपंग पक्षी या घायल पशु देखते थे तो इसका कारण भी उनके वैचारिक जगत का डार्विनीय पक्ष ही था.

▣

जिन दिनों चेखव ने लिखना शुरू किया था, उन्हीं दिनों 'वेस्तनीक एव्रोपी' में 'प्रयोगात्मक उपन्यास' पर एमिल जोला के लेख प्रकाशित हो रहे थे. इन लेखों का रूसी समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा. इन लेखों में वैज्ञानिक साहित्य, लेखक का लेखक के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक होने, अलौकिक व्यक्ति की समाप्ति, आंखों देखे यथार्थ की प्रमुखता और प्रयोगहीनता पर जोर दिया गया था.

चेखव की लिखने की मेज

इसलिए चेखव की साहित्यिक वैचारिकता के निर्माण में जोला का महत्वपूर्ण योगदान रहा. उसने अपने कई पत्रों में इस बात का उल्लेख भी किया है. जोला के प्रति चेखव में इस आकर्षण का कारण ढूंढ़ने में हमें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए. चेखव के विचार से एक पूर्ण लेखक के निर्माण में जिन गुणों का होना जरूरी है, वे सभी जोला में थे. जोला शिक्षा से प्रकृतिवादी, स्वभाव से कवि और व्यवसाय से उपन्यासकार थे. साहित्य में वे वैज्ञानिक पद्धति लागू करने के लिए, उपन्यासों में मनो-समाजविज्ञान को बाकायदा लाने के लिए, जटिल यथार्थ के संपूर्ण निरीक्षण के लिए, छोटे-छोटे तथ्यों को एकत्र करने की क्षमता के लिए जोला में जिस तरह का मानवतावादी आदर्शवाद था, चेखव में भी उसी रूप में था.

एक पत्र में जोला के सिद्धांतों को आगे बढ़ाते हुए चेखव लिखते हैं : "लेखक कोई पेस्ट्री बनाने वाला रसोइया, सौंदर्य प्रसाधक या मात्र मनोरंजनकर्ता नहीं है, वह एक संवाददाता मात्र भी नहीं है. रसायनज्ञ के लिए पृथ्वी पर कुछ भी गंदा नहीं होता. लेखक को भी रसायनज्ञ की तरह वस्तुपरक होना चाहिए. उसे रोजाना की आत्मपरकता को त्यागकर यह समझना चाहिए कि किसी भी स्थान पर अगर कूड़े का ढेर है तो वह भी उस स्थान का एक भाग है और दुर्भावनाएं भी हमारे जीवन का वैसे ही एक हिस्सा हैं, जैसे अच्छी भावनाएं."

किसी भी वस्तु के सूक्ष्मतम पहलुओं का एक बार पूरी तरह से निरीक्षण कर चुकने के बाद चिकित्सक और प्रकृतिवादी अलग हो जाते और कवि आगे आ जाता. कवि फिर जीवन के सौंदर्य और भयावहता को, जीवन के भीतरी रहस्यों को उजागर करता—जोला और चेखव दोनों की यही सृजन-पद्धति थी. लेकिन दोनों की विषय वस्तु के कलात्मक विकास में अंतर स्पष्ट दिखता है. चेतना के स्तर पर जोला में हमें अनगढ़ता मिलती है. ऐसा लगता है कि वह सिद्धांत रूप से ही रोजाना के जीवन की बुराइयों को चित्रित करने के मामले में सनक की हद तक पहुंच जाता है. जबकि चेखव ने

इस सब में पर्याप्त संयम से काम लिया है. लेकिन यह अंतर हमें पहली नजर में ही दिखता है. काव्यात्मक सुकुमारता में और कलात्मक बिंबों की दृष्टि से जोला से चेखव काफी पीछे हैं.

▣

लेकिन चेखव के गुरुओं में पहला स्थान जिसे प्राप्त है, वह है फ्रांसीसी प्रकृतिवादी गाई द मोपासां. अपने पत्रों में चेखव ने मोपासां की लगभग सभी कृतियों का उल्लेख किया है. युवा लेखकों के साथ बातचीत करते हुए चेखव ने मोपासां को यूरोपीय साहित्य की नयी धारा का अगुआ बताया है : "एक साहित्यकार के रूप में मोपासां ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि पुराने ढर्रे पर लिखना संभव ही नहीं रह गया." यह बात उन्होंने बुनिन और कुप्रिन से कही थी.

मोपासां की यथार्थवादी शैली का चेखव पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा. रोजाना के जीवन की बेरंगियों और बदमजगियों को विश्वसनीय ढंग से चित्रित करने में मोपासां को महारत हासिल था. वह जीवन को छोटे-छोटे हिस्सों में देखकर उनमें से विस्तृत नये क्षितिजों को तलाश कर सकता था. चेखव के लेखक पर मोपासां के छोटी रचनाओं के प्रति आकर्षण ने भी प्रभाव डाला. इसके साथ ही चेखव के अंतर्जगत पर भी मोपासां का गहरा प्रभाव पड़ा. जीवन की बेरंगी, मृत्यु की भयानकता और मनुष्य के भीतर की पाशविक वृत्तियों के बारे में चेखव की धारणाओं को उसने पुख्ता किया. मोपासां की कृतियों में सार रूप में यह बात निहित है कि जीवन के बारे में जिस तरह हम सोचने के आदी हो गये हैं, वह उससे कहीं अधिक सरल, हल्का और महत्वहीन है. हमारा अस्तित्व सरल और साधारण है और अगर हम उसमें से किसी चमत्कारिक खुशी या दुख की उम्मीद करते हैं तो हम जीवन नाम की इस बेचारी कहानी से कुछ ज्यादा ही आशा कर रहे हैं. मोपासां की एक नायिका कहती है : 'जीवन न तो कभी इतना डरावना होता है और न कभी इतना सुंदर, जितना हमें दिखता है.' और ये शब्द ही हमें चेखव की कृतियों में ध्वनित होते दिखाई देते हैं.

एक पत्र में चेखव लिखते हैं : "मैं रोजाना के प्यार और पारिवारिक जीवन का चित्रण करना चाहता हूं, जिसमें न खलनायक हों और न अतिसज्जन पुरुष. मैं तो जीवन को जैसा वह है—सीधा, सरल और साधारण—उसी रूप में लेना चाहता हूं." यह वही दृष्टि है, जो मोपासां के पास है. दोनों ही यह दिखाना चाहते हैं कि दूर से देखने पर जीवन कितना भी तड़क-भड़क से भरपूर हो, नजदीक से देखने पर वह हमेशा साधारण, सपाट और बदरंग ही नजर आता है.

'थ्री इयर्स' (1895) कहानी इस पद्धति का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है. पहले चेखव इस पर एक उपन्यास लिखना चाहते थे. चेखव उस स्त्री की सभी अपूर्ण इच्छाओं, विभ्रमों और खुशियों का विस्तृत चित्रण करना चाहते थे यानि चेखव ने मोपासां के 'यूने विए' के कथानक को उठाया था. इस उपन्यास के अनेक तंतु चेखव की कहानी में तलाश किये जा सकते हैं. बिना सोचे-समझे जल्दबाजी में की गयी शादी जो जरूरी भी नहीं थी, शादी के तीखे मोह-भंग, मातृत्व के रूप में सांत्वना, बच्चे के खो जाने पर तीव्र वेदना—ये सब चेखव की यूलिया 'थ्री इयर्स' में भोगती है और छोटे स्तर पर मोपासां की जीन.

फिर भी, जीवन चाहे कितना ही बेरंग और बेहिस क्यों न हो, अस्तित्वहीनता उससे कहीं ज्यादा भयंकर है. मोपासां की अंतिम कृतियों पर (जिन दिनों वह अपना मानसिक संतुलन खो रहे थे) मृत्यु का तीव्र आतंक छाया हुआ है. यही बात हमें तपेदिक से ग्रस्त चेखव की कृतियों में भी दिखाई देती है.

▣

गुस्ताव फ्लाबेयर का उल्लेख भी चेखव के पत्रों और बातचीत में खूब आता था. इसमें कोई शक नहीं कि कहानी के रूप में इस साहित्यिक विधा के दोषरहित सृजन की शिक्षा चेखव ने फ्लाबेयर से ही ली. फ्लाबेयर और उसके शिष्य मोपासां को पढ़ते हुए चेखव के भीतर धीरे-धीरे एक परिपूर्ण साहित्यिक कृति की धारणा परिपक्व हुई. यहां पर फ्लाबेयर की वस्तुनिष्ठता की एक मुख्य भूमिका रही है. फ्लाबेयर इस बात पर जोर देता था कि लेखक को अपनी कृति से स्वयं को अलग रखना चाहिए और एक कलात्मक गद्य में गीतात्मकता बिल्कुल नहीं होनी चाहिए. चेखव ने अपने साहित्यिक जीवनकाल के शुरू से ही इन सिद्धांतों को पूरी तरह से अमली जामा पहनाया है. चेखव का सिद्धांत रहा है कि : "अपने आप को पूरी तरह से अलग कर लो; अपने उपन्यास के चरित्रों पर अपने को मत लादो, कम से कम आधे घंटे के लिए तो अपने को भूल ही जाओ."

साहित्य में वस्तुपरकता के लिए पहली जरूरत है गीतात्मक भावुकता से मुक्ति पाने की. फ्लाबेयर की मान्यता थी कि किसी हद तक ठंडापन होना किसी लेखक के लिए बहुत बड़ा गुण है. युवा लेखकों को पत्र लिखते हुए चेखव इस धारणा को हमेशा दोहराते. वे उन्हें भावुक होने से रोकते. "अगर तुम किसी गरीब भाग्यहीन का चित्रण करके चाहते हो कि पाठक में उसके प्रति दया उपजे तो निस्पृह बने रहो—इससे एक तरह की पृष्ठभूमि तैयार होगी, जिसमें उस पात्र की बेचारगी उभर कर सामने आयेगी, वरना तुम्हारे पात्र चिल्लाते रहेंगे और तुम गीत गाते रहोगे."

जीवन के प्रति अगाध निष्ठा के फ्लाबेयर के सिद्धांत को चेखव ने रचनाओं में पूरी तरह से प्रकट किया है. फ्लाबेयर में यह धारणा कि—अगर तुम सूर्यास्त का चित्रण करना चाहते हो तो तुम्हारे विवरण से लाल रंग दिखना चाहिए और अगर चरागाह को चित्रित कर रहे हो तो हरा रंग दिखना चाहिए—चेखव के लिए हमेशा सिद्धांत बनी रही. एक लेखक को सलाह देते हुए चेखव ने लिखा है :"औरत का चित्रण इस तरह का होना चाहिए कि तुम्हें लगे कि तुम्हारी कमीज के बटन खुले हुए हैं और टाई अलग रखी है."

आधुनिक फ्रांसीसी साहित्य से चेखव का यथार्थवाद निखरा है. एक लेखक के रूप में अपनी शैली तैयार करने के लिए फ्लाबेयर और मोपासां से चेखव को बहुत सहायता मिली है. □

चेखव अपने परवर्ती कथाकार सॉमरसेट मॉम की नजर में—

चेखव को नकल करना मुश्किल नहीं है

जब कोई विचारधारा या कल्पना शक्ति साहित्य को प्रभावित करती है तो साहित्यिक दुनिया उसे परमात्मा के बनाये गये नियम या आदेश की तरह अपना लेती है, उसे एक चालू फैशन के तौर पर नहीं. इस तरह यह धारणा आमतौर पर प्रचलित हो गयी कि कोई भी वह शख्स, जिसका रुझान कला की ओर है, और जो कहानियां लिखना चाहता है, उसे चाहिए कि वह उस तरह की कहानियां लिखे, जिस तरह चेखव लिखते हैं. इस तरह तमाम लेखकों ने रूसी उदासी, रूसी रहस्यवाद, रूसी निर्जीवता, रूसी नैराश्य, रूसी व्यर्थता और रूसी कमजोर संकल्पशक्ति को 'सरे' या 'मिशिगन', 'ब्रुकलिन' या 'क्लेफम' जैसे शहरों में प्रतिरोपित कर डाला और अपने लिए ढेर सारी ख्याति अर्जित की.

बेहतर कहानीकार मगर . . .

यह तो मानना ही पड़ेगा कि चेखव को नकल करना मुश्किल नहीं है. स्वयं भुक्तभोगी होने के नाते मैं दर्जनों ऐसे रूसी शरणार्थियों को जानता हूं, जो यह कार्य बड़ी अच्छी तरह करते हैं, मेरे ही सहारे, क्योंकि वे अपनी कहानियां मेरे पास भेजा करते हैं, ताकि मैं उनकी अंग्रेजी ठीक कर दिया करूं, लेकिन जब अमेरिकी पत्रिकाओं से पारिश्रमिक की एक बड़ी रकम मैं उन्हें नहीं दिलवा पाता तो वे मुझसे रूठ जाते हैं.

चेखव बेशक बहुत अच्छे कहानीकार थे किंतु उनकी अपनी सीमाएं थीं, और उन सीमाओं को बड़ी चतुराई के साथ उन्होंने अपने लेखन का आधार बना लिया था. वह इतने प्रतिभासंपन्न कथाकार नहीं थे कि एक चुस्त और नाटकीय कहानी को जन्म दे सकें. . . एक ऐसी कहानी जिसे डिनर-टेबल पर भी प्रभावशाली ढंग से बयान किया जा सके.

अनचीन्ही गुणवत्ता

एक शख्स के तौर पर तो चेखव व्यवहारकुशल और प्रसन्नचित्त मालूम देते हैं, मगर एक लेखक के रूप में वही चेखव दबे हुए विषादग्रस्त मिजाज के लगते हैं जो उन्हें उल्लासपूर्ण या तेज-तर्रार प्रखर प्रभाव वाले साहित्य-सृजन से अरुचि के साथ दूर खींचता है. उनकी विनोदशीलता, जो कि अक्सर कष्टकर होती है, एक ऐसे व्यक्ति की क्रुद्ध प्रतिक्रिया है, जिसकी कंपा देनेवाली संवेदना का गलत तरीके से उपयोग किया गया हो. चेखव ने जीवन को एक ही ढंग से एकरूपता में देखा है. अलग से उनके पात्र विशिष्ट पहचान नहीं बनाते. न ही कभी अपने पात्रों को अलग-अलग व्यक्तियों के तौर पर खड़ा करने में वह दिलचस्पी लेते दिखाई देते हैं. शायद इसी वजह से चेखव अपनी रचनाओं में यह एहसास देते हैं कि उनके विभिन्न पात्र एक-दूसरे के ही अंग हैं, एक-दूसरे को ढूंढ़ते हुए बेगाने इक्टोप्लास्म (किसी एक संरचना के प्रत्येक कोशा का इक्टोप्लास्म समान होता है और उनकी एक-दूसरे से मिल जाने की प्रवृत्ति होती है) की तरह जो पिघलकर आपस में सम्मिलित हो जाते हैं. जिंदगी के मर्म और इसकी असारता का यही अनुभव चेखव की रचनाओं को अनन्य विशेषता प्रदान करता है. उनका यही विशेष गुण उनकी नकल करने वालों में नहीं आ पाया.

कहानी के निर्णायक बिंदु

मैं नहीं जानता कि मैं कभी चेखव के तर्ज पर कहानियां लिख पाता या नहीं. मैं लिखना चाहता भी नहीं था. मैं ऐसी कहानियां लिखना चाहता था, जो प्रवाह के भंग हुए बगैर अपनी बनावट में प्रारंभ से अंत तक चुस्त और मजबूत हों. कहानियों से मेरा मतलब किसी एक आध्यात्मिक या भौतिक घटना के वृतांत से था. . . एक ऐसा वृतांत जिसमें से उन तमाम गैरजरूरी चीजों को बाहर करते हुए, जिसकी व्याख्या अनावश्यक है, एक नाट्यात्मक एकता प्रदान की जा सके. मुझे इस बात की कभी परवाह नहीं रही जिसे कहानियों में तकनीकी दृष्टि से 'निर्णायक बिंदु' कहते हैं. मेरे ख्याल से कोई तुक न होने के कारण ही यह प्रभावान्विति निंदनीय थी. मुझे लगा, इससे जुड़ी हुई अपकीर्ति के पीछे असलियत केवल यह थी कि इसका उपयोग कुछ जरूरत से अधिक ही होने लगा था, बिना किन्हीं न्यायसंगत कारणों के, केवल प्रभाव उत्पन्न करने के लिए. संक्षेप में मैं कहूंगा कि मैंने अपनी कहानियों का समापन छितरे हुए बिंदुओं के अनवरत सिलसिले की अपेक्षा एक विराम-चिन्ह से करना पसंद किया. □

प्रस्तुति : अरुण वर्द्धन

चेखव की डायरी से

ईश्वर है अथवा नहीं है

1897

'ईश्वर है' अथवा 'ईश्वर नहीं है' के बीच बहुत बड़ा अंतर है. बुद्धिमान व्यक्तियों के लिए भी इस अंतर का विरोध करना बहुत मुश्किल है. रूसी जनता इन दोनों अतिवादों को पसंद करती है—इन दोनों के बीच की कोई स्थिति उन्हें अच्छी नहीं लगती. इसलिए या तो वह बहुत कम जानती है, या फिर कुछ भी नहीं जानती. हिब्रू जाति के लोग बड़ी आसानी से अपने विश्वास बदल लेते हैं. लोग इसे पक्षपातहीनता कहते हैं. लेकिन यह कोई सही समर्थन नहीं है. लोगों को इस गुण का आदर करना चाहिए. इसलिए अच्छे व्यक्ति को लोगों की परवाह नहीं करनी चाहिए. उसकी पक्षपातहीनता ही उसका धर्म है. ▣

चेखव को पढ़ते हुए

■ सुधीश पचौरी

1890 का वर्ष : चेखव अपनी लोकप्रियता के उरूज पर पहुंच चुके थे. उनकी गिनती रूसी साहित्यिक-सांस्कृतिक जगत के आधार स्तंभ कोरोलेंको, पोलांस्की, सेर्गेई मैक्सिमोव, चाइकोव्स्की, प्लेश्चेयेव के बीच होती थी. . .कि अचानक एक दिन चेखव ने फैसला कर लिया : 'उन्हें सखालीन द्वीप की यात्रा करनी है.' उनके हितचिंतक इस फैसले से अवाक् रह गये—क्षयरोग से निरंतर अस्वस्थ रहने वाले चेखव ने आखिर किस वजह से यह यात्रा करने का फैसला किया? क्या उन्हें नये विषय चाहिए थे? क्या वे पगला गये थे? जी नहीं!

सखालीन द्वीप समूचे रूस में सबसे बुरी जगह थी, किंतु चेखव का कहना था : 'इंसान को स्वयं को बार-बार तोड़ना चाहिए.' सखालीन द्वीप तक की यात्रा छः महीने लेती, किंतु चेखव जानते थे. 'इस यात्रा की मुझे जरूरत है. . .इससे मेरी सुस्ती और आरामतलबी खत्म होगी.' और वे द्वीप के भूगोल, उसके वातावरण, उसके इतिहास के अध्ययन में जुट गये.

इस यात्रा ने न केवल उनके स्वास्थ्य का सर्वनाश कर दिया, बल्कि उनकी समूची पूंजी को भी खत्म कर दिया, किंतु उस वक्त उनके अभिन्न लोगों ने उनकी यात्रा को गंभीरता से नहीं लिया.

चेखव ने 'सखालीन द्वीप' नामक पुस्तक लिखी, जो जारशाही की सैंसरशिप के कारण जगह-जगह से काट-छांट दी गयी. इतना जोखिम और यह परिणाम! किंतु चेखव ने अपने परिताप के बारे में उफ तक नहीं की. चेखव के घटनाबहुल जीवन की यह एक छोटी-सी घटना है, मगर चेखव के संघर्षकारी व्यक्तित्व के बारे में हमें बहुत कुछ बताती है.

मैं खुद के बारे में लिखने से घृणा करता हूं!

इसी दुर्धर्षता और गहरे आत्मबल ने चेखव को स्वयं के प्रति निर्ममता व तटस्थता बरतने का दृष्टिकोण प्रदान किया. अपनी रचनाओं के प्रति लेखक का क्या रवैया होना चाहिए, यह बात चेखव से समझी जा सकती है.

एक बार जब 'नदेल्या' नामक पत्र ने उनसे आत्मकथात्मक ब्योरा मांगा तो उन्होंने जवाब दिया : 'मैं खुद के बारे में लिखने से घृणा करता हूं.' जब उनकी संपूर्ण रचनाएं संकलित होकर छपीं तो उन्होंने उनमें से जीवनीपरक अंश निकलवा दिया और वह चेखव के बिना किसी परिचय के छपीं, जबकि परंपरा संपूर्ण रचनाओं में जीवनी के शामिल किये जाने की थी!

1899 में प्रसिद्ध मूर्तिकार बर्न्स्टाम ने चेखव की मूर्ति बनाने का आग्रह किया और वे पेरिस से भाग लिये. एक बार उनके समकालीन साहित्यकार दांचेंको उनकी उपस्थिति में ही उनकी रचनाओं पर बातें करने लगे. चेखव को जब कोई उपाय न सूझा तो सीधे कहा, "हमें किसी और चीज के बारे में बातें करनी चाहिए. क्या तुम कोई दूसरा विषय नहीं सोच सकते?" प्रशंसा के प्रति इतना कठोर आचरण, खासकर साहित्यिकों में बिरले ही मिलता है. क्या यह कम अचंभे की बात है कि जिस आदमी ने अपने पूर्ववर्ती कथा साहित्य व नाट्य साहित्य को अपनी कलम के जोर से एक नया मोड़ दे दिया, वही यह कहे कि "कभी-कभी मेरी हिम्मत जवाब दे जाती है. मैं सोचता हूं, मैं क्यों और किसके लिए लिखता हूं? क्या जनता के लिए? वह मैं कैसे जानूंगा. कि जनता को मेरी जरूरत है ही?"

किंतु मुझे तो लगता है कि चेखव के साहित्य के समान ही चेखव का व्यक्तित्व भी हमारे लिए एक मानक का काम कर सकता है. ऐसा भी नहीं कि चेखव ने अपनी आलोचना का जवाब न दिया हो या कि वे सिर्फ एकतरफा आत्मालोचक ही बने रहे. नहीं, जरूरत पड़ने पर उन्होंने अपने स्पष्टीकरणों के साथ हस्तक्षेप भी किया, किंतु वहां पर भी वह विनम्रता, वह भ्रातृभावना और साथीपन बराबर बरकरार रहा, जिससे प्रतिवादी को उनके उज्ज्वल स्वाभिमानी स्वरूप के सामने अपना हठ छोड़ना पड़ा.

गुस्ताखी माफ हो!

ऐसा भी नहीं कि चेखव को कठोर आलोचना का सामना न करना पड़ा हो. आज भी सोवियत साहित्य में कुछ लोग चेखव साहित्य को. . .कूड़ा करकट . . .तुरपबाजी. . . बकवास. . .अपाच्य आदि विशेषणों से अभिहित करते हैं. चेखव के 'इवानोव' (नाटक) को लोगों ने 'खिलवाड़' बताया था. उनकी विख्यात कहानी 'स्तेपी' को 'दो टके की' कहा गया था. 'द ड्यूल', 'वान्का' को भी ऐसे ही नाम दिये गये थे.

इतने हतोत्साहक वातावरण में भी चेखव ने अपनी रचनाओं के प्रति अपना स्वाभाविक रुख नहीं दबाया. इन दिनों भी वे अपनी रचनाओं से असंतुष्ट रहे. वे अपनी रचनाओं को 'सृजन' कहना उचित नहीं मानते थे. वे अपने खतों में अपनी रचनाओं के बारे में प्रायः यों सूचित करते थे : 'तुम्हारा खत मुझे उस वक्त मिला, जब मैं एक बकवास-सी कहानी को लिख रहा था'. अपने प्रसिद्ध नाटक के बारे में उन्होंने लिखा : 'मैंने अभी-अभी 'सीगल' खत्म किया है. मेरे ख्याल से इसमें नाट्य जगत का कुछ भी नहीं बनेगा. मैं जानता हूं कि मैं कोई नाटककार नहीं हूं.' 'द लाइट्स' कहानी के बारे में लिखा, 'यह कहानी पोखर के पानी की तरह बेकार है और आडंबरपूर्ण दर्शन से इतनी भरी हुई है कि उबाऊ हो गयी है.' चेखव के यहां ऐसे सैकड़ों उद्धरण मिल जायेंगे.

अपने प्रति और अपनी रचनाओं के प्रति यह 'असंतोष' चेखव में इतना परिव्याप्त है कि वह रूसी साहित्य में उन्हें अप्रतिम स्थान का हकदार बना देता है. हमारे यहां, गुस्ताखी माफ हो, सिर्फ मुक्तिबोध में इस 'असंतोष' के स्वर सुनाई पड़ते हैं!

और. . . वह मर गया

चेखव की एकमेव विशिष्टता—उनके साहित्य की सबसे बड़ी शक्ति अपने युग की जीवन स्थितियों के प्रति गहरा अस्वीकार कि "इस संसार में कोई कुछ नहीं समझ सकता!" का भाव है. उनकी कृतियां इस अवसाद, उदासीनता और अस्वीकार की अभिव्यक्तियां हैं. उनके वे पात्र जो कहानी या नाटक के केंद्र में होते हैं, अंत तक पहुंचते-पहुंचते बहुत ही अकेले, उदासीन और परित्यक्त से प्रतीत होने लगते हैं. ऐसे में चेखव की भाषा कमाल करती है. वे एक वाक्य नहीं, कई बार सिर्फ एक शब्द से सारे कथ्य को कहीं ले जाकर उठा देंगे. हिंदी में उपलब्ध 'क्लर्क की मौत' कहानी में अंतिम वाक्य है : 'संज्ञा शून्य, यंत्र-चालित-सा वह सड़क पर बढ़ता गया; घर पहुंचकर वह बिना वर्दी उतारे, जैसे का तैसा, सोफे पर लेट गया और . . .मर गया!' यहां 'और' के पश्चात 'मर गया' जोड़ा गया है, थोड़ा रुककर. क्यों? इसलिए कि नायक चेर्व्यकोव का व्यक्तित्व है ही ऐसा कि यदि वह घर पर जाकर लेट जाता और लेखक न कहता कि 'और. . .मर गया' तो कहानी में एक सैंटीमैंटल 'टच' आ जाता. कहानी फिर चेखवीय रूप नहीं ले पाती. वह अधिक से अधिक 'ओ हेनरियन' मेलोड्रामाई अंदाज और एक 'पैथेटिक अपील' का संकर हो जाती.

जरा इस आखिरी अंश को काटकर पढ़ें तो आपको असलियत मालूम पड़ेगी कि इस एक अंश ने एक साधारण-सी थीम को कहां ले जाकर खड़ा कर दिया है.

ऐसे ही चेखव की प्रसिद्ध कहानी 'वार्ड नं. 6' पढ़िए : डाक्टर आंद्रेई येफिमिच भी अंत में मर जाते हैं. यह मौत भयावह रूप में सामने आती है, सिर्फ भाषा वक्रता के रूप में नहीं. किंतु अंतिम वाक्य यहां भी आंद्रेई येफिमिच के 'अकेलेपन' को बड़े मार्मिक रूप से प्रकट करता है. जीवन भर ईसा-मसीह को सत्य मानने वाले भले डाक्टर की मृत्यु पागलखाने में होती है और अंत्येष्टि संस्कार में सिर्फ दो परिचित 'उपस्थित' रह जाते हैं. 'संताप' का मिस्तरी भी इसी वास्तविक अकेलेपन के साथ अंतिम दृश्य में आता है. . . 'मिस्तरी का सब कुछ समाप्त हो गया.'

मेलोड्रामाई प्रभाव को जानबूझकर समाप्त कर उनके स्थान पर अतिरंजना या वक्रता का सहारा लेना, जीवन के प्रतिबिंबित अंतर्विरोधों का भावात्मक समाहार करने की जगह उन्हें आमने-सामने टकराने के लिए स्फीत करते जाना चेखव की अपनी तकनीक है. बहुत से लोगों ने चेखव की इस तकनीक को न समझकर महसूस किया था कि चेखव 'निराशावादी' और 'अंधियारे' व 'उदास' लोगों के 'गायक' थे. किंतु इस प्रसंग में लियोनिद लियनेव का यह कथन उद्धरणीय है : 'उनके समकालीन आलोचकों का कहना था कि चेखव की रचनाओं में गति का अभाव है. चेखव को निष्क्रियता का दोषी ठहराते थे. वे चाहते थे कि वह कोई सामाजिक समाधान, एक पूरा सिद्धांत या कम से कम कोई अस्थायी सामाजिक हल पेश करें. लेकिन हम कलाकार की आईने की तरह पारदर्शी आत्मा को जानते हैं और यह कल्पना करना कठिन है कि अगर चेखव ने अपनी कृतियों में उन मांगों को पूरा करने का प्रयास किया होता तो उसकी सुंदर गद्य शैली का क्या हश्र होता!'

हथौड़ेवाला आदमी कहां है?

दरअसल चेखव अपने युग के सच्चे मायनों में यथार्थवादी कलाकार थे, जिन्होंने वास्तविकता को प्रतिबिंबित करने का विशिष्ट कलात्मक प्रयास किया. उनकी कृतियां हमें हमारी कमजोरियां बताती हैं. वे हमें आत्म सजग करती हैं. वे लोगों की जहालत, काहिली, पशुता, मक्कारी, झूठफरेब सबके प्रति हमारे मन में गहरी नफरत पैदा करती हैं. वे समाज की मंथरता और सुषुप्ति को भंग करती है, उस सुषुप्ति को, जिसका प्रथम जागरण चेखव की मृत्यु के ठीक एक वर्ष बाद ही 1905 की रूसी क्रांति के जनवादी उभार के रूप में हुआ.

चेखव की 'गूसबेरी' का इवान इवानिच अपने उस वर्तमान पर यों टिप्पणी करता है : 'हर चीज खामोश और शांतिमय है. इनके खिलाफ आंकड़ों का मूक प्रतिवाद है. इतने लोग पागल हो गये, इतनी बाल्टियां वोदका पी गयी, इतने बच्चे पर्याप्त भोजन के अभाव में मर गये—और जाहिर है कि होना भी ऐसा ही चाहिए. जाहिर है कि हर वह शख्स जो खुशहाल है, वह केवल इसलिए कि जो दुखी हैं, वे अपनी मुसीबतें खामोशी से बरदाश्त करते हैं, जिसके बगैर सुख की गुंजाइश न रहेगी. यह एक प्रकार का सार्वभौम सम्मोहन है. हर सुखी व्यक्ति के द्वार के पीछे एक ऐसे आदमी की आवश्यकता है, जो एक हथौड़े से उसके दरवाजे को खटखटाया करे और इस बात की याद दिलाता रहे कि इस दुनिया में दुखी लोग भी हैं. और यह कि वह कितना ही सुखी क्यों न हो, कभी न कभी वह भी जीवन के पंजे में आ जायेगा और उस पर कोई विपत्ति आ ही पड़ेगी—बीमारी या हानि और उस समय उसको भी न कोई देखेगा और न सुनेगा, जिस तरह वह इस समय न दूसरों के दुर्भाग्यों को देखता है और न उनको सुनता है. लेकिन ऐसा आदमी है कहां, जिसके हाथ में हथौड़ा हो. सुखी लोग मजे से अपनी जिंदगी बसर करते हैं. जिंदगी के पीछे उतार-चढ़ावों से जरा से हिल भर जाते हैं, जैसे हवा में वृक्ष और बाकी सब चलता रहता है.'

चेखव लगातार इसी 'शांति' व 'खामोशी' के खिलाफ बोलते हैं जो कि 1905 में पहली बार भंग होती है. चेखव की भूमिका का इससे बेहतर प्रमाण और क्या हो सकता है. □